लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–9

# इल पैन्टामिरोन–1

## जियामबतिस्ता बासिले

**1634–36**

अंग्रेजी अनुवाद जौन एडवर्ड टेलर – **1847**

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

**2022**

Series Title : Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-9
Book Title: Il Pentamerone-1
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm



## Map of Italy
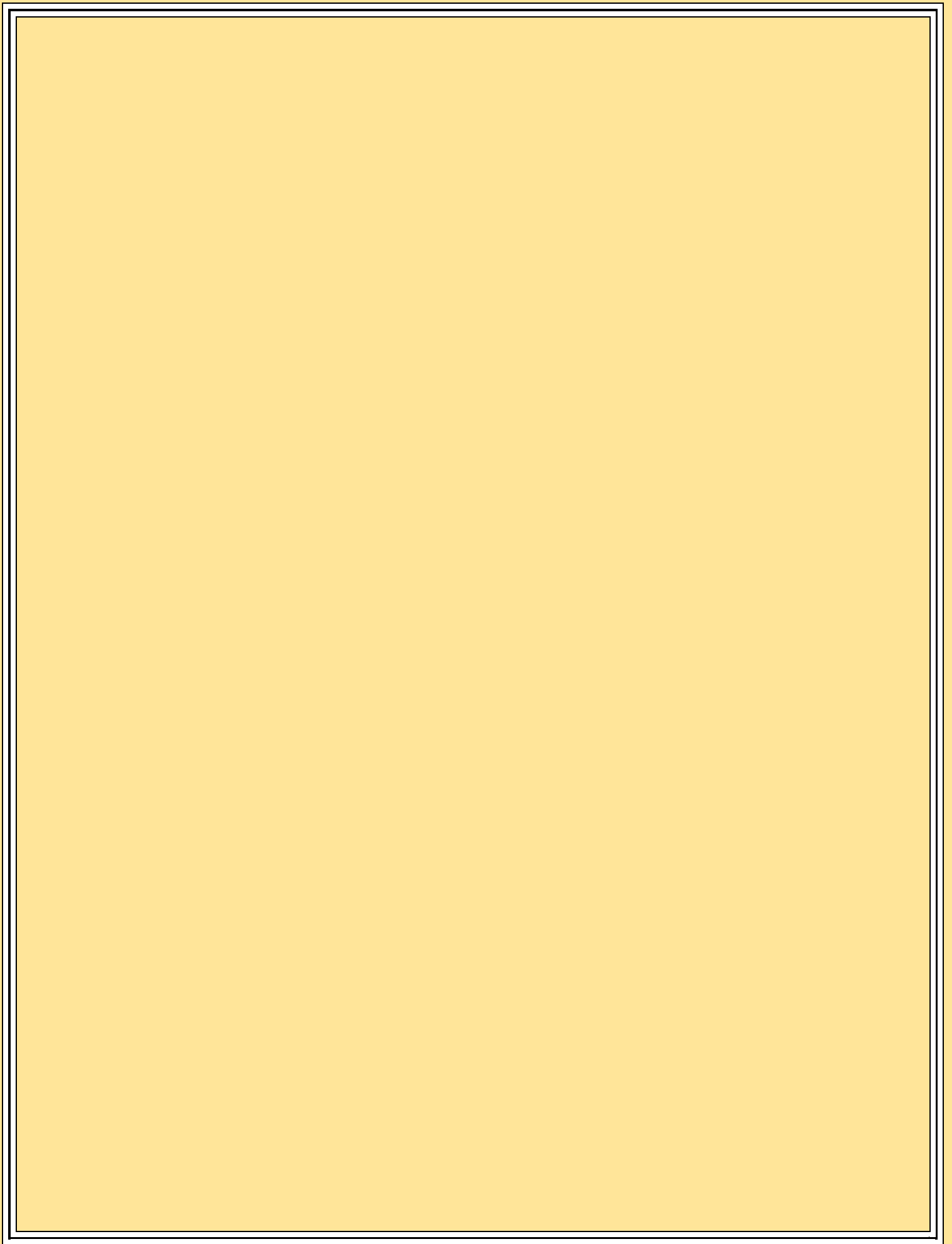
विंडसर, कैनेडा

**2022**

## Contents

# सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र करके 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
**2022**

# इल पैन्टामिरोन–1

लोक कथाओं के इतिहास में तीन मुख्य काल हैं – प्राचीन काल, मध्यकाल और आधुनिक काल।[2] मध्य काल में लिखी गयी तीन पुस्तकें बहुत मशहूर हैं – इल डैकामिरोन–1351, स्ट्रारपरोला की रातें–1550–1553, इल पैन्टामिरोन–1634–1636। तीनों इटली के लेखकों ने लिखी हैं। इसी समय में छपाई भी शुरू हुई सो ये तीनों पुस्तकें लिखने के बाद ही छप गयीं पर छपी ये अपनी ही भाषा में। दुर्भाग्य से इनका अनुवाद करने में कुछ समय लग गया और जब तक इन पुस्तकों का अंगेजी में अनुवाद नहीं किया गया ये दुनियाँ में नहीं फैल पायीं।

इल पैन्टामिरोन प्रकाशित होने वाली पुस्तकों में तीसरी सबसे पुरानी पुस्तक है। अपनी इस "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" संग्रह में हमने इसे शामिल कर लिया है। पैन्टामिरोन की ये कथाऐं इटली में इटली के एक कवि और दरबारी ने लिखी थीं। ये लोक कथाऐं अरेबियन नाइट्स की कहानियों की शैली पर आधारित है।

इसके लेखक हैं जियामबतिस्ता वासिले और इन्होंने इसको नैपिल्स में नैपोलिटन भाषा में 17वीं सदी में यानी 1634–1636 में लिखा था। ये एक दरबारी और कवि थे। इसकी भाषा ने इसको दुनियाँ से 200 साल तक छिपा कर रखा। इसमें 50 कहानियाँ हैं जिन्हें 10 स्त्रियों ने 10–10 कहानियाँ 5 दिनों तक रोज सुनायी हैं। दुर्भाग्य से ये कथाऐं उनके जीवन काल में प्रकाशित नहीं हो सकी थीं। उनकी मृत्यु के बाद में इनको उनकी बहिन ने प्रकाशित करवाया।

परियों की कथाओं के नाम से तो बहुत सारी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं पर केवल यही एक पुस्तक ऐसी है जिसकी सारी कहानियाँ इस श्रेणी में रखी जा सकती हैं और यह ऐसी कथाओं का पहला संग्रह है। ग्रिम ब्रदर्स[3] जिनका नाम कहानियों की दुनियाँ में बच्चा बच्चा जानता है उन्होंने भी इस संग्रह को पहला परियों की कथाओं का संग्रह बताया है और इसकी भूरि भूरि प्रशंसा की है। यह संग्रह दुनियाँ में बहुत दिनों तक सबसे अच्छा संग्रह माना जाता रहा था।

इसका पहला अनुवाद जर्मन भाषा में 1846 में हुआ था। फिर इसके दो अनुवाद अंग्रेजी में हुए। एक अनुवाद सन् 1847 में जौन ऐडवर्ड टेलर ने किया जिसमें उन्होंने 32 बेतरतीबवार चुनी हुई कथाऐं दीं। इसके अलावा इसमें केवल कथाऐं ही हैं। दूसरा अनुवाद 1893 में सर रिचर्ड फ्रान्सिस बरटन[4] ने किया जिसमें इस पुस्तक की सारी कथाऐं हैं और पूरी हैं। इसका तीसरा अनुवाद इटैलियन भाषा में 1925 में हुआ। उसके बाद इटैलियन भाषा के अनुवाद से एक और अनुवाद अंग्रेजी में 1934 में नौरमैन एन पैनज़र[5] ने किया। फिर एक नया अनुवाद अंग्रेजी में 2007 में वेन स्टेट यूनिवर्सिटी अमेरिका ने प्रकाशित किया। इसके बाद इसको पैनगुइन बुक्स ने इसे 2017 में प्रकाशित किया। हमारा यह अनुवाद 1847 में किये गये अंग्रेजी अनुवाद से लिया गया है जिसे जौन एडवर्ड टेलर ने किया था। यह पुस्तक कई वैब साइट्स पर मौजूद है।[6]

हिन्दी में इसका यह पहला अनुवाद है।

---

[2] Read a brief history of folktales of the world at : http://www.sushmajee.com/folktales/1-introduction.htm

[3] Grimm Brothers

[4] Sir Richard Francis Burton. "Il Pentamerone". London : Henry & Co. 1893. 2 vols. Available at : https://burtoniana.org/books/1893-Pentamerone/burton-1893-Pentamerone-2in1-fixed.pdf

[5] Norman N Penzer, 1934.

[6] These tales have been taken from the Web Site : http://fairytales.com
The text of this book is based on John Edward Taylor's translation from 1847. 32 tales.
Also available at : https://www.worldoftales.com/Italian_folktales.html
Also available at http://www.surlalunefairytales.com/pentamerone/index.html

इस पूरे कहानी संग्रह का लोक कथाओं या परियों के कहानी संग्रहों मे बहुत बड़ा महत्व है। वह ऐसे कि जब तुम ये कहानियॉ पढ़ोगे तो तुम्हें हर कहानी पढ़ कर यही लगेगा कि "अरे ऐसी कहानी तो हमने पढ़ी है।" इस प्रकार यह कहानी संग्रह आने वाले कहानीकारों के लिये एक आधार बना और बहुत सारी कहानियॉ इन कहानियों के आधार पर लिखी गयीं।

इन कहानियों की एक खासियत और है वह यह कि इसकी हर कहानी उस कहानी के एक बहुत ही छोटे से परिचय से शुरू होती है और एक कहावत से खत्म होती है। हमें कहानी कहने वाले का नाम नहीं पता चल सका है क्योंकि टेलर ने उसे कहीं दिया हुआ ही नहीं है।

इसकी दूसरी खासियत है इसके अंग्रेजी रूप में इसकी भाषा बहुत ही सुन्दर है जिसमें कई नयी कहावतें कई नयी उपमाऐं और किसी बात को कहने के कई नये ढंग मिलते हैं जिनसे कहानी की शैली में चार चॉद लग जाते हैं। यह कहानी को थोड़ा सा साहित्यिक रूप देने में सहायता करती है। पर इसके साथ ही एक बात और ध्यान देने योग्य है कि इन कहानियों की बहुत सारी उपमाऐं और रूपक और कहावतें हमारे भारत के ऐसे अलंकारों से बहुत ही भिन्न हैं और भारतीयों के लिये अनजाने हैं इसलिये उन्हें समझने की आवश्यकता नहीं है उसे भाषा और संस्कृति का भेद समझ कर स्वीकार कर लेना चाहिये।

इस विषय में हम एक बात और कहना चाहेंगे। विकीपीडिया में पैन्टामिरोन की सारी कहानियों की लिस्ट मिलती है। वही लिस्ट हमने यहॉ इस पुस्तक में सबसे पीछे दे रखी है। टेलर ने इस पुस्तक से केवल **32** कथाऐं अनुवाद की हैं जो उन्होंने बीच बीच में से चुनी हैं। इस पुस्तक में उसकी **16** कहानियॉ दी जा रही हैं। अगली **17** कहानियॉ दूसरी पुस्तक "इल पैन्टामिरोन **17–32**" में हैं। पर फिर भी ये केवल **32** कहानियॉ ही हैं। बची हुई **19** कहानियॉ एक और पुस्तक "इल पैन्टामिरोन की कथाऐं" जिनका अनुवाद सर रिचर्ड बरटन ने किया है में से दी गयी हैं।

इस तरह से इसकी सारी **50** कहानियॉ तीन पुस्तकों में दी गयी हैं।

इन कहानियों का शीर्षक देते समय दो नम्बर दिये गये हैं। एक तो कहानी का सामान्य नम्बर जैसे **1 2 3 4** आदि। और दूसरा नम्बर दिन का नम्बर और कहानी का नम्बर बताता है जैसे **4–5**। इसमें **4** नम्बर दिन का है और **5** नम्बर पॉचवीं कहानी का। इसलिये यह नम्बर ऐसे लिखा हुआ है — **9 1–9**। यानी इस पुस्तक में यह कहानी नवीं कहानी है जबकि पैन्टामिरोन में यह कहानी पहले दिन नवीं कहानी सुनायी गयी है।

आशा है कि लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें की सीरीज़ में **386** साल पुरानी यह पुस्तक आपको हिन्दी में पढ़ कर बहुत अच्छा लगेगा। तो लीजिये पढ़िये इटली की ये पुरानी लोक कथाऐं अब पहली बार हिन्दी में।

# 1 ये कहानियाँ कैसे कही गयीं[7]

एक पुरानी कहावत है कि कोई वह ढूँढता है जो उसे ढूँढना नहीं चाहिये तो उसको वह मिल जाता है जो वह कभी नहीं ढूँढता। हर एक ने उस बन्दर के बारे में सुना है जो अपने जूतों को निकालने के चक्कर में अपने पाँव से ही पकड़ा गया था।

इसी तरह एक बार एक बदकिस्मत दासी के साथ भी ऐसा ही हुआ, हालाँकि उसके पास अपने पैरों में पहनने के लिये कोई जूता तो कभी नहीं था पर वह अपने सिर पर ताज पहनना चाहती थी।

पर सीधा रास्ता सबसे अच्छा रास्ता होता है। देर सबेर एक दिन ऐसा आता है जिस दिन सारा हिसाब पूरा हो जाता है। आखिर कुछ बुरे तरीके अपना कर उसने वह चीज़ ले ली जो किसी दूसरे की थी। सो वह जमीन पर गिर पड़ी और फिर वह जितना ऊपर चढ़ना चाहती थी वह उतना ही नीचे गिरती जाती थी। जैसा कि अभी आप देखेंगे —

इस पुस्तक में राजकुमारी ज़ोज़ा[8] एक नीच रानी का मन बहलाने के लिये उसको पाँच दिन तक कहानियाँ सुनाती है। क्यों? क्योंकि उसने ज़ोज़ा के पति को चुरा लिया है और वह उससे उसे वापस लेना चाहती है। इसकी यह पहली कहानी इसकी आगे की कहानियों का परिचय है "ये कहानियाँ कैसे कही गयीं"।

पैन्टामेरोन में पैन्टा शब्द यूनानी भाषा का है जिसका मतलब होता है पाँच। इस संग्रह में 10 कहानियाँ कहने वालियों ने पाँच दिनों में 50 कहानियाँ सुनायी हैं यानी 10 कहानियाँ रोज। तो लो

---

[7] How These Tales Came to be Told. (Tale No 1)

[8] Zoza – name of a Princess who did not laugh

पढ़ो अब सबसे पुरानी परियों की कहानियों के इस संग्रह की शुरूआत की कहानी जिसने आगे की कहानियों को जन्म दिया।

यह एक पुरानी कहावत है कि कोई आदमी वही खोजता है जो उसे नहीं खोजना चाहिये और वही पाता है जो उसको नहीं पाना चाहिये। हर एक ने उस बन्दर की कहानी सुनी होगी जो अपने जूते पहनते हुए अपने ही पैरों से पकड़ा गया था।

और यही इसी ढंग से एक नीच दासी के साथ हुआ जिसने कभी जूते तो नहीं पहने पर वह अपने सिर पर एक ताज पहनना चाहती थी। पर सीधी सड़क हमेशा ही अच्छी होती है और एक समय आता है, जल्दी से या देर से, जब सारी समस्याऐं सुलझ जाती हैं सारा हिसाब बराबर हो जाता है।

आखीर में नीचता का इस्तेमाल करके जो किसी दूसरे के हिस्से का था उसको उसने नीचे गिरा तो लिया पर जितना वह ऊँचा चढ़ी थी उतनी ही ज़ोर से वह नीचे भी गिर गयी। यह तुम अभी देखोगे।

एक समय की बात है कि वुडी घाटी[9] के राजा के एक बेटी थी जिसका नाम था ज़ोज़ा जो कभी हॅसती हुई नहीं देखी गयी। उसके दुखी पिता ने जिसकी ज़िन्दगी की खुशी केवल उसकी बेटी थी कोई उपाय ऐसा नहीं छोड़ा जिससे उसका दुख दूर हो सके।

---

[9] Woody Valley

उसने बहुत सारे ऐसे लोगों को बुला भेजा जो लम्बे लम्बे डंडों पर चल सकते थे या फिर जो गोले के अन्दर से कूद सकते थे या फिर जो बौक्सिंग कर सकते थे या फिर उन लोगों को बुला भेजा था जो आत्माओं से बात कर सकते थे जादू दिखा सकते थे।

उसने ऐसे गेंद उछाल कर करतब दिखाने वालों को भी बुला रखा था जो कई तरह से अपने हाथों को नचा सकते थे।

उसने किस किस को नहीं बुलाया – ताकतवर आदमी, नाचते हुए कुत्ते, उछलते कूदते हॅसोड़िये, ऐसे गधे जो गिलास से पानी पीते थे। थोड़े में कहो तो उसने जो कुछ भी उससे उसको हॅसाने के लिये हो सकता था वह सब उसने आजमा कर देख लिया था। पर उसका सारा समय बेकार गया क्योंकि कोई भी उसके होठों पर हॅसी नहीं ला सका।

सो आखीर में जब बेचारे पिता ने अपनी सारी कोशिशें कर लीं तो उसने एक और कोशिश करने का विचार किया। उसने अपने महल के दरवाजे के सामने तेल का एक बहुत बड़ा फव्वारा लगाने का हुक्म दिया।

उसने सोचा कि जब तेल सड़क पर बहेगा तब लोग उसके किनारे किनारे चींटियों के झुंड की तरह से चलेंगे, असल में उनको उस तरह से चलना ही पड़ेगा ताकि उनके कपड़े गन्दे न हों या उनको टिड्डों की तरह से उछल उछल कर चलना पड़ेगा।

या फिर बकरों की तरह से कूदना पड़ेगा, बड़े खरगोशों[10] की तरह से भागना पड़ेगा। कुछ लोगों को सँभाल सँभाल कर कदम रखने होंगे जबकि दूसरे लोग दीवार के सहारे सहारे बच बच कर चलेंगे।

इस तरह से कुछ ऐसा भी हो सकता है कि मेरी बेटी हँस जाये। सो इस प्लान के अनुसार तेल का एक बहुत बड़ा फव्वारा बनवाया गया।

एक दिन ज़ोज़ा अपनी खिड़की के सहारे खड़ी थी गम्भीर, दुखी, सिरके जैसी खट्टी कि इत्तफाक से वहाँ एक बुढ़िया आयी। उसने एक स्पंज का टुकड़ा तेल में डुबोया और उसको एक छोटे से घड़े में निचोड़ कर अपना लोटा भरने लगी जो वह अपने साथ लायी थी।

उसको तेल से इस तरह से अपना घड़ा भरने में बहुत मेहनत करनी पड़ रही थी। दरबार का एक नौकर उसको देख रहा था कि उसने उसकी तरफ एक पत्थर इतना निशाना लगा कर फेंका कि उसका वह छोटा सा घड़ा टूट गया।

इस पर वह बुढ़िया जिसकी जबान पर बाल नहीं थे[11] उस नौकर की तरफ घूमी और गुस्से में भर कर बहुत ज़ोर से बोली — "ओ

---

[10] Translated for the word "Hare" – see its picture above. It is a kind of rabbit, but wild and bigger in size. See its picture above.

[11] It means that she had no control on her speech. She did not how to talk to anybody.

नीच छोटे कुत्ते, खच्चर, फाँसी की रस्सी, तकली[12] जैसी टाँग वाले। तेरी किस्मत खराब हो। भगवान करे तुझे भाला छेद जाये। तेरे ऊपर हजारों मुसीबतें आ पड़ें। और भी जो कुछ तेरे लिये बुरा होना है वह तेरे साथ हो ओ चोर।”

इस लड़के ने जिसके अभी न तो कोई दाढ़ी थी और न कुछ सोचने की अक्ल थी क्योंकि वह तो अभी बच्चा ही था ऐसी गालियों की यह बौछार सुन कर उसने उसको भी उसी तरह की गालियाँ दीं — “ओ जादूगरनियों की नानी। ओ बुढ़िया। ओ बच्चों को खाने वाली। तुझे जो कुछ कहना था कह चुकी?”

बुढ़िया ने जब अपनी इतनी सारी बड़ाई सुनी तो वह तो फिर से गुस्से में भर गयी। उसके हाथों से धीरज की लगाम छूट गयी वह तो पागलों जैसी दिखायी देने लगी और बन्दर की तरह से दाँत दिखाने लगी।

यह दृश्य देख कर तो ज़ोज़ा की हँसी छूट पड़ी कि वह तो खुद ही हँसते हँसते बेहोश सी होने लगी। पर जब बुढ़िया ने देखा कि उसकी चाल तो काम कर गयी तो वह और उत्साह में भर गयी।

[12] Translated for the word “Spindle” – see its picture above.

उसने ज़ोज़ा की तरफ एक डरावनी नजर से देखा और बोली — "तुम्हें कभी पति न मिले जब तक तुम गोल मैदान वाले राजकुमार[13] को न पा लो।"

यह सुन कर ज़ोज़ा ने उस बुढ़िया को अपने पास बुलाया और उससे यह पूछा कि ये शब्द कह कर उसको उसने शाप दिया है या बेइ़ज़्ज़ती की है।

बुढ़िया बोली — "तुम्हें पता होना चाहिये कि यह राजकुमार दुनियाँ का सबसे सुन्दर राजकुमार है और इसका नाम टैडियो[14] है। इसको एक परी के शाप ने आखिरी बार छू कर एक शहर की दीवार के बाहर एक कब्र में रख दिया है।

उसकी कब्र के पत्थर पर लिखा है कि जो कोई भी स्त्री तीन दिन के अन्दर उसके ऊपर के हुक पर टॅगे हुए घड़े को अपने ऑसुओं से भर देगी वही उसको ज़िन्दा कर सकेगी और वही उससे शादी करेगी।

लेकिन किसी भी आदमी की दो ऑखों में इतनी ताकत नहीं है कि वे तीन दिन रो कर उस घड़े को अपने ऑसुओं से भर सकें। उस घड़े में आधा बैरल[15] पानी आता है।

---

[13] Translated for the words "Prince of Round-Field"

[14] Taddeo – name of the Prince of Round-Field

[15] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above.

तुम मेरी बातों पर हँसीं इसी लिये मैंने तुम्हारे लिये यह इच्छा की है। मैं भगवान से प्रार्थना करूँगी कि तुम इस काम को कर सको। यह मैंने तुमसे उसका बदला लेने के लिये कहा है जो तुमने मेरे साथ गलत किया है।”

ऐसा कह कर वह सीढ़ियों से तुरन्त ही नीचे चली गयी ताकि कहीं कोई उसकी पिटायी न करे।

ज़ोज़ा उस बुढ़िया के कहे शब्दों पर सोचती रही सोचती रही। उसके दिमाग में सैकड़ों तरह के विचार घूमने लगे और इतने घूमे कि जैसे उनकी उसमें चक्की चल रही हो।

फिर उसके दिमाग में उत्साह का एक ऐसा तीर लगा जिसने उसकी सोचने की ताकत बिल्कुल खत्म कर दी और उस पर जादू डाल दिया हो। उसने अपने पिता की तिजोरी से थोड़े से पैसे लिये और महल छोड़ कर चल दी।

वह चलती गयी चलती गयी जब तक वह एक परी के किले तक पहुँची। वहाँ जा कर उसने अपने दिल का सारा बोझ उस परी पर हलका कर दिया। उसको अपना सब हाल बता दिया।

परी को इतनी सुन्दर नौजवान लड़की पर दया आ गयी जिसको किसी अनजान चीज़ के लिये इतना प्यार था और उसको पाने की सहायता कोई नहीं थी। उसने उसको अपनी बहिन के नाम एक चिट्ठी दी और उसको उसके पास भेजा कि वह उसकी इस काम में सहायता करेगी। उसकी वह बहिन भी एक परी थी।

यह बहिन भी बहुत ही दयालु थी और उसने भी इसका बहुत प्यार से स्वागत किया। अगली सुबह जब रात ने चिड़ियों को कहा "जिसने भी चिड़ियों के झुंड के काले साये को इधर उधर जाते देखा तो उसको इनाम दिया जायेगा।"

उस परी बहिन ने उसको एक अखरोट[16] दिया और कहा — "यह ले मेरी बच्ची। तू यह अखरोट ले जा और देख इसे सँभाल कर रखना कभी इसे तोड़ना नहीं जब तक कि तुझे इसकी बहुत जरूरत न पड़ जाये।"

उसके बाद उसने अपनी एक और बहिन के नाम एक चिट्ठी दी कि वह उस चिट्ठी को ले जा कर उसकी दूसरी बहिन को दे दे। उसने वह चिट्ठी उससे ली और आगे चल दी।

काफी दूर चलने के बाद ज़ोज़ा उन परियों की एक और बहिन के पास आयी तो उसने भी उसका बड़े प्यार से स्वागत किया।

अगले दिन उसने भी अपने एक और बहिन के पास भेजा। चलते समय उसने उसको एक चेस्टनट[17] दिया और उससे कहा कि वह उसको तब तक न तोड़े जब तक कि उसको बहुत जरूरत न हो।

---

[16] Translated for the word "Walnut". See its picture above.

[17] Chestnut is a kind of nut, people eat it after roasting it. See its picture above.

वह उस चेस्टनट को ले कर तीसरी बहिन के पास चली। वहाँ भी उस परी की तीसरी बहिन ने ज़ोज़ा का बहुत प्यार से स्वागत किया। अगली सुबह उसने उसको एक हैज़लनट[18] दिया और कहा कि वह उसको तभी तोड़े जब वह बहुत ज़्यादा मुसीबत में हो।

साप ज़ोज़ा तीनों नट ले कर आगे रास्ते पर बढ़ी। उसने बहुत सारे जंगल और नदियाँ पार कीं। ठीक सात साल बीत जाने के बाद जब सूरज मुर्गों के जगाने से जागा और अपने रास्ते पर चलने के लिये अपने घोड़े पर जीन[19] कस रहा था तभी वह गिरती पड़ती लँगड़ाती सी गोल मैदान में पहुँची।

वहाँ उसको शहर के बाहर एक फव्वारे के पास ही संगमरमर की एक कब्र दिखायी दी जो क्रिस्टल के आँसू रो रही थी। उसने उसके ऊपर लटका हुआ एक घड़ा उठाया और उसमें उसने रोना शुरू कर दिया। वह बिना सिर उठाये ही उसमें रोती रही रोती रही रोती रही।

दो दिन बाद उसने देखा कि वह घड़ा तो बस अब केवल दो इंच ही खाली रह गया था। पर वह रोते रोते अब तक थक गयी थी सो उसकी आँख लग गयी और वह एक घंटे तक सोती रही।

---

[18] Hazelnut is also kinf od nut like almond and walnut. See its picture above.

[19] Translated for the word “Saddle”. See its picture above.
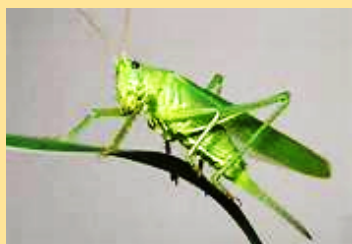
इसी बीच एक दासी जिसकी टिड्डे जैसी टॉगें थीं वहॉ आयी। उसको उस फव्वारे से पानी भरना था।

वह उस फव्वारे का मतलब जानती थी क्योंकि उस फव्वारे के बारे में तो सभी जानते थे। जब उसने ज़ोज़ा को वहॉ इतनी ज़ोर ज़ोर से रोते देखा कि उसकी ऑखों से पानी की दो धाराऐं बहती देखीं तो वह उसको देखती रही और उस पर नजर रखती रही कि वह घड़ा पूरा न भर जाये ताकि वह उस लड़की को धोखा दे सके।

सो अब जबकि ज़ोज़ा सो रही थी तो उसने मौका पा कर उसके नीचे से घड़ा हटा लिया और उसके ऊपर अपनी ऑखें रख दीं। वह घड़ा चार सेकंड में भर गया।

और जैसे ही वह घड़ा भरा वैसे ही राजकुमार अपनी संगमरमर की कब्र से ज़िन्दा हो कर उठ खड़ा हो गया और उस काली लड़की को अपने गले से लगा लिया। वह उसे सीधा अपने महल ले गया। महल में बहुत रोशनी की गयी और दावतों का इन्तजाम हुआ। उसने उससे शादी कर ली।

जब ज़ोज़ा की ऑख खुली तो उसने देखा कि उसके ऑसुओं का घड़ा तो वहॉ से गायब है। घड़े के साथ साथ में उसकी आशाऐं भी चली गयी थीं। इसके लिये वह अपनी ऑखों को ही दोष देने लगी।

इस पर वह इतना दुखी हुई कि वह उस मौत के घर से जाने का सोचने लगी। आखिर में उसको लगने लगा कि अब उसको कोई सहायता नहीं मिलेगी सो वह उठी और वहाँ से शहर की तरफ धीरे धीरे चलने लगी।

शहर जा कर जब उसने सुना कि महल में तो दावतें हो रही हैं और राजकुमार किस लड़की से शादी कर रहा है तो उसको अपने साथ किया गया धोखा समझ में आ गया।

उसके मुँह से निकला "इन दो काली चीज़ों ने मुझे बरबाद कर दिया – एक तो काली नींद और दूसरी यह काली दासी।"

फिर उसने राजकुमार के महल के सामने एक घर लिया जहाँ से वह अपने दिल के भगवान को तो नहीं देख सकती थी पर वह कम से कम उन दीवारों को देख सकती थी जिनके अन्दर वह जिसके लिये तड़प रही थी वह बन्द था।

पर टैडियो ने जो हमेशा उस काली लड़की के चारों तरफ चिमगादड़ की तरह उड़ता रहता था एक बार ज़ोज़ा को देख लिया तो वह उसकी सुन्दरता से बहुत प्रभावित हो गया।

जब दासी को इस बात का पता चला तो वह तो गुस्से भर गयी और कसम खायी कि अगर टैडियो ने खिड़की नहीं छोड़ी जिसमें बैठ कर वह जोज़ा को देखता रहता था तो वह उसके बच्चे को उसके पैदा होते ही मार देगी।

टैडियो जिसको एक वारिस चाहिये था और उसके आने की वह बड़ी उत्सुकता से इन्तजार कर रहा था उसको नाराज नहीं करना चाहता था सो वह ज़ोज़ा की नजरों से दूर हट गया।

अपने इस दर्द की दवा को दूर जाता देख कर ज़ोज़ा की आशाओं पर पानी फिर गया। अब उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे।

और कोई चारा न देख कर उसने परियों की दी हुई भेंटों का इस्तेमाल करने का सोचा। उसने पहली परी का दिया हुआ अखरोट तोड़ दिया। उसमें से एक बौने जैसा गुड्डा निकल पड़ा। वह दुनियाँ भर का सबसे सुन्दर खिलौना था।

जब वह अपनी खिड़की पर बैठी तो उस गुड्डे ने गाना शुरू कर दिया। उसने ऐसी आवाज में गाया कि ऐसा लगता था जैसे कोई चिड़ियों का राजा गा रहा हो।

दासी ने जब यह देखा और सुना तो उसको इतना मोह लिया कि उसने टैडियो को बुलाया और उससे कहा — "मुझे वह छोटा आदमी ला दो जो उधर सामने गा रहा है नहीं तो मैं जैसे ही तुम्हारा बच्चा जन्मेगा उसे मार दूँगी।"

बेचारे राजकुमार को उसको कहा मानना पड़ा उसने तुरन्त ही ज़ोज़ा से पुछवाया कि क्या वह अपना वह बौना उसको बेचेगी। ज़ोज़ा ने कहा कि वह कोई सामान बेचने वाली नहीं थी पर हॉ वह उसको उसे भेंट में दे सकती थी।

टैडियो ने उसकी बात मान ली क्योंकि वह अपनी पत्नी को खुश रखना चाहता था।

चार दिन बाद ज़ोज़ा ने चेस्टनट तोड़ दिया तो उसमें से एक बहुत सुन्दर मुर्गी अपने 12 चूज़ों के साथ निकल पड़ी। सब सोने के बने थे। उसने उनको खिड़की पर रख दिया। जब दासी ने देखा तो वे उसको बहुत अच्छे लगे। उसने उनको टैडियो को भी दिखाया। उसने टैडियो से उनको लाने के लिये कहा। कहा कि वह उसको वे मुर्गी और उसके चूज़े ला दे।

टैडियो फिर उसके जाल में फँस गया। उसने उसको खुश करने के फिर से ज़ोज़ा से उनको बेचने के लिये कहा पर ज़ोज़ा ने फिर वही जवाब दिया कि वह कोई सामान बेचने वाली नहीं थी बल्कि अगर वह चाहे तो वह उनको उसे भेंट में दे सकती थी।

अब टैडियो और तो कुछ कर नहीं सकता था सो उसने उनको भेंट की तरह स्वीकार कर लिया।

फिर चार दिन बीत गये। अबकी बार ज़ोज़ा ने हैज़लनट तोड़ दिया तो उसमें से तो एक गुड़िया निकल पड़ी। वह सोना कातती थी। यह तो एक बहुत ही अद्भुत दृश्य था। उसने उसको भी खिड़की पर रख दिया।

जैसे ही उसने उसे खिड़की पर रखा तो दासी की नजर उस पर गयी। तुरन्त ही उसने टैडियो को बुलाया और उससे कहा कि उसे

वह गुड़िया चाहिये। अगर उसने उसे ला कर उसे नहीं दिया तो वह उसके बच्चे को जन्मते ही मार देगी।

टैडियो जो अब तक अपनी घमंडी पत्नी के हाथों शटल की तरह से इधर उधर कूद रहा था हिम्मत नहीं कर पा रहा था कि वह उस गुड़िया के लिये ज़ोज़ा को बुलवा भेजे।

पर फिर अपने बच्चे का ख्याल करके उसने यह तय किया कि उसका वहाँ खुद का जाना ही अच्छा रहेगा। और फिर ये कहावतें याद करके कि "अपने आपसे अच्छा कोई और दूत नहीं है।" और "जिस आदमी को अगर मछली खानी है तो उसको उसे उसकी पूँछ से पकड़ना चाहिये।" वह खुद ज़ोज़ा के पास गया और अपनी पत्नी की बेचैनी के लिये उससे माफी माँगी।

ज़ोज़ा ने जब अपने दुख की वजह को देखा तो उसने अपने आपको रोक लिया और बहुत देर तक उसका माफी माँगना सुनती रही ताकि उसका प्यार उसकी आँखों के सामने ज़्यादा देर तक रहे जिसको उस काली दासी ने चुरा लिया था।

आखिर उसने वह गुड़िया उसको दे दी जैसा कि उसने अपनी दूसरी चीज़ों के साथ किया था। पर उसको देने से पहले उसने अपने मन में एक इच्छा माँगी कि जैसे ही वह दासी अपने हाथ में इस गुड़िया को ले तो उसके मन में उससे कहानी सुनने की इच्छा जाग जाये।

जैसे ही टैडियो ने गुड़िया हाथ में ली तो बिना एक पैसा दिये हुए ही उसके दिल में एक ऐसी भावना पैदा हो गयी कि उसने अपना राज्य और ज़िन्दगी दोनों उसको दे दीं।

गुड़िया ले कर वह घर लौट आया और आ कर वह गुड़िया अपनी पत्नी के हाथों में रख दी। तुरन्त ही उसके मन में भी यह इच्छा हुई कि वह उस लड़की से कहानियाँ सुने।

उसने फिर अपने पति को बुलाया और कहा कि मुझे कुछ ऐसे कहानी कहने वाले बुलाओ जो मुझे कहानी सुनायें। नहीं तो मैं अपनी बात की पक्की हूँ मैं तुम्हारे बच्चे को मार दूँगी।

उसके इस पागलपन को दूर करने के लिये टैडियो ने तुरन्त ही एक फरमान जारी कर दिया कि बताये गये दिन पर राज्य की सारी स्त्रियाँ महल में इकट्ठी हों।

और उस दिन जब शुक्र तारा सुबह को जगाने के लिये निकला और उस रास्ते पर रोशनी बिखेरने के लिये कहा जिस पर सूरज को जाना होता है राज्य की बहुत सारी स्त्रियाँ महल में इकट्ठी हुईं।

पर टैडियो को लगा कि वह इतनी सारी स्त्रियों को केवल अपनी पत्नी के आनन्द के लिये महल में इकट्ठी नहीं कर सकता सो उसने सोचा कि दस सबसे अच्छी कहानी कहने वालियों और तरीके वाली स्त्रियों को चुना।

ये थीं झाड़ी जैसे बालों वाली ज़ीज़ा, मुड़ी हुई टाँगों वाली सीका, फूली हुई गर्दन वाली मेनेका, लम्बी नाक वाली टौला, कुबड़ी

पोपा, दाढ़ी वाली एन्टोनैला, ठिगनी चूला, धुँधला देखने वाली पाओला, गंजी शिवोनमिटैला और चौकोर कन्धों वाली जकोवा।[20]

इन सबके नाम एक कागज पर लिख लिये गये और दूसरी स्त्रियों को वापस भेज दिया गया। वह दासी के साथ अपने सिंहासन की छतरी के नीचे से उठा और दोनों अपने महल के बागीचे में चले गये जहाँ पत्तों वाली शाखाऐं आपस में इतनी गुँथी हुई थीं कि उनमें से हो कर सूरज की रोशनी भी नहीं आ पा रही थी।

वे सब वहाँ आ कर घनी बेलों से बने हुए एक कमरे में बैठ गये। उसके बीच में एक फव्वारा चल रहा था।

वहाँ टैडियो अपनी हल्की आवाज में बोला — "दुनियाँ में दूसरों के कामों के बारे में जानने से अच्छी बात तो कोई है ही नहीं ओ मेरी प्यारी पत्नी। और बड़े बड़े विचारकों ने कहानियाँ सुनने को भी सबसे ज़्यादा खुशी पाने वाला साधन माना है।

जब कोई आदमी कोई अच्छी अच्छी बातें सुनता है तो उसके दुख दूर हो जाते हैं। परेशान करने वाले विचार उड़न छू हो जाते हैं और आदमी की उम्र बढ़ जाती है।

इसी वजह से तुम देखती हो कि कलाकार अपना काम छोड़ देते हैं, सौदागर लोग अपने घर छोड़ देते हैं, वकील अपने मुकदमे छोड़ देते हैं, दूकान वाले अपनी दूकान बढ़ा देते हैं, लोग नाइयों की

---

[20] Bushy-haired Zeza, Bandy-legged Cecca, Wen-necked Meneca, Long-nosed Tolla, Humph-backed Popa, Bearded Antonella, Dumpy Ciulla, Blear-eyed Paola, Bald-headed Civonmetella, and Square-shouldered Jacova.

दूकान से उनकी कहानियॉ सुनने के लिये बात करने वालों के पास चले जाते है।

इसलिये मैं अपनी पत्नी की इस जिद को केवल माफ करता हॅू कि उसको वह गुड़िया इतनी अच्छी लगी कि उसने उस गुड़िया को जिद करके मुझसे मॅगवाया जिसने उसके मन में कहानी सुनने की इच्छा जगायी।

इसलिये मेहरबानी कर के आप लोग यहॉ आयें और मेरी इच्छा और राजकुमारी की जिद को पूरा करें। अगले **4–5** दिनों तक आप में से हर एक यहॉ एक ऐसी कहानी रोज सुनायेगा जो बुढ़ियें अपने बहुत छोटे छोटे बच्चों को सुनाना पसन्द करती हैं।

आप लोग नियमित रूप से यहॉ आयेंगी और अच्छा खाना खाने के बाद एक कहानी सुनायेंगी ताकि समय खुशी से गुजरे।"

यह सुन कर उन सबने हॉ में सिर हिलाया। इस बीच मेज पर खाना लगाया गया और फिर हर एक स्त्री बारी बारी से अपनी कहानी सुनाने लगी।

# 2 1–2 मेंहदी का पेड़[21]

एक बार की बात है कि मियानो[22] के एक गॉव में एक पति पत्नी रहते थे। उनके कोई बच्चा नहीं था। उनको अपने एक वारिस की बहुत इच्छा थी।

स्त्री हमेशा ही यह कहती — "हे भगवान काश मेरे एक बच्चा होता। मुझे चिन्ता नहीं चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न होता। चाहे वह मेंहदी की एक डंडी के बराबर ही क्यों न होता।"

और इस बात को वह बराबर गाती रहती। उसके इस गीत को सुनते सुनते आसमान भी इतना थक गया था कि उसको उस स्त्री की इच्छा पूरी करने पड़ी।

नौ महीने बाद उसको न तो लड़का हुआ न कोई लड़की हुई बल्कि उसको मेंहदी की एक छोटी सी डंडी हुई। उसने उसे बहुत खुश हो कर एक गमले में लगा दिया। गमले को उसने बहुत सारी शक्लों से सजा दिया और उसे एक खिड़की में रख दिया।

वह उसकी दिन रात किसी ऐसे माली से भी ज़्यादा अच्छी तरह से देखभाल करती जो अपने बन्द गोभी के खेत की देखभाल इसलिये करता है क्योंकि उसको उस जमीन का किराया देना पड़ता है।

[21] The Myrtle. (Tale No 1) Day 1, Tale No 2

[22] Miano – name of a city in Italy

राजा का बेटा जब शिकार खेलने के लिये जाता था तो वह उधर से जाया आया करता था जहाँ वह मेंहदी के पेड़ वाला गमला रखा हुआ था। वह उधर से जाते हुए उसको रोज देखता तो कुछ दिन में ही वह उसको भी बहुत पसन्द आने लगा।

एक दिन उसने अपने एक आदमी को घर की मालकिन से यह पूछने के लिये भेजा कि क्या वह पौधा राजकुमार को बेचेगी। वह उसके लिये अपनी एक आँख भी देने को तैयार है।

हजारों बार विनती करने के बाद मना करने के बाद मनुहार करने के बाद धमकियों से डरने के बाद स्त्री ने उस गमले को राजकुमार को दे दिया।

उसने राजकुमार से बहुत बार प्रार्थना की कि वह उसको बहुत सँभाल कर रखे क्योंकि वह उसको अपनी बेटी से भी ज़्यादा प्यार करती थी और उसका इतना ख्याल रखती थी जैसे वह उसका अपना बच्चा हो।

राजकुमार ने बहुत सँभाल कर वह गमला स्त्री से ले लिया अपने महल ले गया और एक छज्जे पर रख दिया। वह उसको अपने हाथ से पानी देता था।

एक दिन ऐसा हुआ कि वह सोने के लिये चला गया था सारी मोमबत्तियाँ बुझा दी गयीं थीं सब कुछ शान्त पड़ा था कि राजकुमार ने घर में से किसी के कुछ चोरी करने की आवाज सुनी।

उसको लगा कि कोई बड़ी सॅभाल कर उसके बिस्तर की तरफ चला आ रहा था। उसने सोचा कि शायद महल का कोई नौकर होगा जो उसका बटुआ चुराने चला आ रहा होगा या किसी ने शरारत से उसके बिस्तर की चादर खींची।

लेकिन क्योंकि वह एक बहुत ही बहादुर नौजवान था कोई चीज़ उसको डरा नहीं सकती थी वह वहीं मरी हुई बिल्ली की तरह से लेटा रहा यह देखने के लिये अब आगे क्या होता है।

जब उसने देखा कि वह चीज़ उसके पास आती जा रही है अपने चिकने हाथ फैला कर उसने महसूस किया कि वह चीज़ तो कोई ऊन से भी ज़्यादा मुलायम है। मार्टिन[23] जानवर की पूँछ से भी ज़्यादा लचीली और बालों वाली है। थिसिल की रुई से भी ज़्यादा कोमल है।

उसके विचार इधर उधर दौड़ने लगे। उसको एक परी समझते हुए, हालॉकि वह एक परी ही थी, उसको उससे प्यार हो गया।

अगली सुबह सूरज निकलने से पहले एक अच्छे डाक्टर की तरह राजकुमार बाहर अपने फूलों को देखने गया तो वह यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया कि वहॉ उसके बागीचे से एक गुलाब का फूल वहॉ से गायब था। उसकी उत्सुकता जाग गयी कि वह फूल कहॉ गया।

---

[23] Marten is a kind of big squirrel. See its picture above. It is found in several colors and its fur is very expensive saleable item.

पर जब इस बात को होते हुए सात दिन बीत गये तो उसके मन में यह इच्छा जाग उठी कि यह उसके कौन से सितारे थे जो यह खुशकिस्मती उसके ऊपर गिरा रहे थे। और यह प्रेम की खुशी भी कौन से जहाज़ पर बैठ कर उसके पास आयी थी।

सो एक दिन जब वह सुन्दरी गहरी नींद सो रही थी तो उसने उसके बालों की एक लट अपनी बॉह में बॉध ली ताकि वह वहॉ से उठ कर न भाग सके।

उसके बाद उसने अपने महल के पहरेदार को बुलाया और उससे मोमबत्तियॉ जलाने के लिये कहा। तब उसने उस सुन्दरता के फूल को देखा स्त्रियों में चमत्कारी स्त्री को देखा। शीशे जैसी, वीनस[24] के रंगे हुए अंडे जैसी, बहुत प्यारी।

वह एक गुड़िया जैसी थी, एक सुन्दर फाख्ता, एक फ़ैटा मौरगैना[25], एक सोने का सुन्दर गहना, एक शिकारी, एक बाज़ की ऑख, पूनम का चॉद, कबूतर की चोंच, राजा के खाने का एक कौर, एक रत्न – थोड़े में कहो तो एक असाधारण दृश्य।

यह देखते ही वह चिल्लाया — "ओ नींद ओ मीठी नींद। इस प्यारे से रत्न की सुन्दर ऑखों पर बहुत सारे पौपी के फूल[26] रख दे।

[24] Venus is the Goddess of Love in Greek Mythology

[25] Fata Morgana – an Italian witch

[26] Poppy flower – a flowering plant from which opium is extracted. See its flower above.

जब तक मैं इसकी सुन्दरता देखना चाहूँ तब तक मुझे यह सुन्दर दृश्य देखने में बाधा न डाल। ओ सुन्दर बालों की लट जिसने मुझे बाँध रखा है। ओ प्यारी प्यारी आँखें जो मेरे अन्दर प्यार जगाती हैं। ओ प्यारे होठ जो मुझे तरोताजा करते हैं। उफ़ प्रकृति के आश्चर्यों की कौन सी दूकान पर इस अद्भुत ज़िन्दा मूर्ति को बनाया गया होगा।

कौन से इन्डिया ने इसके सुनहरे बालों के लिये सोना दिया होगा। कौन से इथियोपिया ने इसकी भौहों के लिये हाथी दाँत दिया होगा। कौन से समुद्र के किनारे ने इसकी इसकी आँखों की पुतली बनाने के लिये अपना कार्बन्किल[27] दिया होगा।

कौन से टीयर[28] ने इसके चेहरे को यह जामुनी रंग दिया होगा। कौन से पूर्व ने इसके मोती जैसे दाँतों को बनाया होगा। और इसकी छाती बनाने के लिये कौन से पहाड़ों से बर्फ लायी गयी होगी। जबकि बर्फ जो अपने स्वभाव के खिलाफ फूल खिला रही है और दिलों में आग लगा रही है।

ऐसा कहते हुए उसने अपनी बाँहों की बेल सी बना कर उसके गले में डाल दी। इससे उस लड़की की आँख खुल गयी और उसने देखा कि राजकुमार की भी आँख खुल गयी।

---

[27] Carbuncle is any red gemstone, most often a red garnet. A carbuncle is also a stone with magical properties, usually capable of providing its own illumination to an otherwise dark interior.

[28] Tyre – pronounced as Tear, is the name of a place. It has been mentioned in the context of Solomon, the Jew King. Its King was a good friend of Solomon. He is mentioned in my book “Raja Solomon” published by Prabhat Prakashan, 2019.

राजकुमार ने एक आह भरते हुए उससे अपनी मीठी बोली में कहा — "ओ मेरे खजाने। अगर बिना मोमबत्तियाँ जलाये हुए मैं अपने प्यार के मन्दिर में इतना खुश था तो अगर तुमने दो मोमबत्तियाँ जला दी होतीं तो तो मेरी ज़िन्दगी का क्या होता।

ओ सुन्दर आँखें तुम अपने तुरप के पत्ते[29] की रोशनी से सितारों को भी दिवालिया कर दो। तुमने तो अकेले ने मेरे दिल को छेद दिया है तो तुम्हीं मेरे इस घाव की ताजे अंडे की पुल्टिस भी बना सकती है।

ओ मेरे सुन्दर डाक्टर। मुझ पर दया करो। अपने प्यार के मारे पर दया करो। जिसने अँधेरे की हवा को सुन्दरता की रोशनी की हवा में बदल कर अपने आपको बीमार कर लिया है। यह बीमार तुम्हारा हाथ अपने दिल पर रखता है। मेहरबानी कर के मेरी नाड़ी को महसूस करो और मेरा इलाज करो।

पर ओ प्रिये मैं तुमसे दवा क्यों माँग रहा हूँ। मुझे तो केवल तुम्हारे उस छोटे से हाथ के छूने में ही बहुत आराम मिल जायेगा। क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि तुम्हारे पास रहने से तुम्हारी जीभ जो ठीक करने की जड़ है मैं उसी से ठीक हो जाऊँगा।"

यह सुन कर वह सुन्दर लड़की तो आग जैसी लाल हो गयी और बोली — "मेरे राजकुमार तुम मेरी इतनी प्रशंसा न करो। मैं तो

[29] Trump Card

तुम्हारी दासी हूँ और तुम्हारे शाही चेहरे पर खुशी देखने के लिये कुछ भी करने के लिये तैयार हूँ।

यह मेरी खुशकिस्मती है कि मिट्टी के गमले लगायी गयी मेंहदी की एक शाख एक राजकुमार के दिल के दरवाजे पर लटकाने वाला विजय का चिन्ह[30] बन गयी जिसका दिल बहुत बड़ा है बहुत भला और अच्छा है।

राजकुमार तो यह सुन कर मोमबत्ती की तरह से पिघल गया। उसने उसको फिर से गले लगाना और उसके होठों पर अपने चुम्बन की मुहर लगानी शुरू कर दी।

फिर उसने उसको अपना हाथ दिया और कहा — "तुम मेरा विश्वास करो तुम्हीं मेरी पत्नी बनोगी। तुम्हीं मेरे दंड[31] की महारानी बनोगी। मेरे इस दिल की चाभी हमेशा तुम्हारे पास रहेगी। तुम्हीं मेरी ज़िन्दगी की रक्षा करने वाली रहोगी।"

और फिर इस तरह की रस्मी बातें बहुत दिनों तक चलती रहीं।

पर जैसे खेल बिगड़ जाते हैं ऐसे ही शादी और बिछड़ना भी प्यार के रास्ते में रोड़े अटकाते हैं।

---

[30] Translated for the word "Laurel". Laurel is a wreath worn on the head usually as a symbol of the victory. If you see an image of Julius Ceaser, chances are he is wearing one Laurel. The Laurel can be hung on the door also. See both ways to use Laurel in above pictures.

[31] Translated for the word "Scepter" – a kind of ceremonial staff. Church officials, kings etc always have it. See its picture along with the Crown above.

सो एक बार ऐसा हुआ कि राजकुमार को शिकार के लिये बुलवाया गया। उसको एक जंगली सूअर को मारना था क्योंकि उसने शहर भर में लोगों को तंग कर रखा था। सो उसको वहाँ जाने के लिये अपनी पत्नी को घर में ही छोड़ना पड़ा।

लेकिन क्योंकि वह उसको अपनी जान से भी ज़्यादा चाहता था। और उसने देखा कि उससे ज़्यादा सुन्दर कोई और चीज़ उसके पास थी नहीं सो उसको उसकी इस सुन्दरता से कुछ जलन सी हो गयी जिसने प्यार के सागर में तूफान उठा दिया।

जैसे कोई प्यार के बीच में आ कर कोई गन्दगी गिर जाये। जैसे कोई साँप काट जाये। कोई कीड़ा कुतर जाये। जैसे कोई जहर की कड़वाहट भर जाये। जैसे कोई पाला मार जाये। इससे उसकी ज़िन्दगी बहुत परेशान हो गयी। उसका दिमाग हमेशा परेशान रहने लगा। दिल में तरह तरह के शक उठने लगे।

सो उसने परी को बुलाया और उससे कहा — "प्रिये मुझे दो तीन दिनों के लिये घर छोड़ कर जाना पड़ रहा है। भगवान जानता है कि इस तरह से तुमसे बिछड़ने पर मुझे कितना दुख हो रहा है जो मेरी आत्मा है।

और यह भी भगवान ही जानता है कि जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ से मैं ज़िन्दा वापस आ जाऊँगा या नहीं। पर क्योंकि अपने पिता को खुश करने के लिये मुझे जाना तो पड़ेगा ही इसलिये मुझे तुम्हें छोड़ कर जाना पड़ रहा है।

इसलिये मैं तुम्हें अपने प्यार का वास्ता दे कर कहता हूँ कि तुम अपने उसी गमले में चली जाओ जब तक मैं वापस लौट कर आऊँ। मैं जल्दी से जल्दी आने की कोशिश करूँगा।"

परी बोली — "मैं ऐसा ही करूँगी जैसा कि तुम कहोगे क्योंकि मैं उस काम को कभी मना नहीं कर सकती जो तुम्हें अच्छा लगता है। इसलिये तुम आराम से जाओ भगवान करे तुम्हारी खुशकिस्मती भी तुम्हारे साथ जाये। मैं तुम्हारी जितनी भी सेवा हो सकेगा करूँगी।

पर मेरा एक कहा मानो रेशम का एक धागा एक घंटी से बाँध कर मेंहदी के पौधे में बाँधते जाओ। जब तुम वापस आओगे तब तुम उस रेशम के धागे को खींच देना जिससे वह घंटी बज जायेगी। उस घंटी की आवाज सुन कर मैं तुरन्त ही उसमें से निकल आऊँगी कि "देखो मैं यह रही।"

राजकुमार ने ऐसा ही किया। उसने अपने नौकर को बुला कर कहा — "यहाँ आओ। यहाँ आओ। जो मैं तुमसे अब कहने जा रहा हूँ तुम उसे दिमाग खोल कर सुनो। हर शाम को यह बिस्तर ठीक कर देना जैसे कि जब मैं सोता हूँ तब तुम करते हो। और इस गमले को रोज पानी जरूर देना।

और देखो मैंने इसकी पत्तियाँ गिन कर रखी हुई हैं। अगर इसकी एक भी पत्ती कम हुई तो मैं तुमसे तुम्हारी रोजी रोटी छीन लूँगा।"

ऐसा कह कर वह अपने घोड़े पर चढ़ा और वहाँ से सूअर को मारने के लिये ऐसे चल दिया जैसे कोई भेड़ जिसे काटा जा रहा हो तुरन्त ही कसाई की पकड़ से भागती है।

इतने में सात नीच स्त्रियाँ जिनको राजकुमार जानता था में भी जलन बढ़ने लगी। वे इस भेद को जानने की कोशिश करने लगीं कि आखिर राजकुमार इतना बदला बदला सा क्यों है।

उन्होंने एक राज[32] को अपने घर बुलाया और उसे काफी पैसे दे कर अपने घर से राजकुमार के कमरे तक एक सुरंग खुदवायी। इस तरह सब उस सुरंग से हो कर राजकुमार के कमरे को देखने के लिये वहाँ तक जा पहुँचीं।

लेकिन जब उन्हें वहाँ कुछ नहीं मिला तो उन्होंने उसके कमरे की खिड़की खोली। कमरे के बाहर तो एक सुन्दर सा मेंहदी का पौधा खड़ा था। उन्होंने उसमें से हर एक ने एक एक पत्ती तोड़ ली। पर सबसे छोटी वाली ने उसका ऊपर वाला सारा का सारा हिस्सा ही तोड़ लिया।

उसी हिस्से में वह छोटी घंटी लटकी हुई थी जो राजकुमार लटका कर गया था। जैसे ही उसने पौधे का ऊपर वाला हिस्सा छुआ तो उसके हाथ से घंटी भी छू गयी और बज उठी। जैसे ही वह घंटी बजी तो लड़की ने सोचा कि राजकुमार आ गया और वह बाहर निकल आयी।

---

[32] Translated for the word “Mason”

जैसे ही उन नीच स्त्रियों ने उस अजीब सी लड़की को देखा उन्होंने उसको अपने हाथों से जकड़ लिया और बोलीं — "तो वह तुम हो जो हमारी आशाओं की नदी को अपनी तरफ मोड़ रही हो। सो वह तुम हो जो हमारे राजकुमार का प्रेम चुरा रही हो। पर अब तुम्हारी सब चालें खत्म हो जायेंगीं। और अगर तुम बच भी गयीं तो फिर कभी जन्म नहीं लोगी।"

ऐसा कह कर वे उसके ऊपर कूदीं और उसके चिथड़े कर दिये। और उनमें से छह स्त्रियों ने उसमें से अपना अपना हिस्सा ले लिया पर सबसे छोटी वाली लड़की ने उनके इस बेरहम काम में कोई हिस्सा नहीं लिया।

जब उसकी छहों साथिनों ने उसको वैसा ही काम करने के लिये कहा जो उन्होंने किया था तो उसने वह काम नहीं किया। बस उसने उस लड़की के थोड़े से सुनहरे बाल लिये और उसी रास्ते से वापस चली गयी जिससे वे आयी थीं।

जैसा कि राजकुमार उसको हुक्म दे कर गया था इस बीच नौकर राजकुमार का बिस्तर बनाने के लिये और पौधे को पानी देने के लिये कमरे में आया तो उसने वह सुन्दर काम देखा तो डर के मारे तो वह तो मरे जैसा ही हो गया।

दुखी मन से अपने नाखून अपने दाँतों से काटते हुए उसने काम करना शुरू किया। उसने उसकी हड्डी और माँस सब एक जगह इकट्ठा कर के गमले में रख दिया और उसे पानी दिया। फिर उसने

राजकुमार का बिस्तर बनाया। दरवाजे में ताला लगाया चाभी दरवाजे के नीचे रखी और उलटे पैरों शहर से बाहर भाग गया।

जब राजकुमार शिकार कर के वापस आया तो उसने पौधे की रेशम की डोर खींची जिससे घंटी बज उठी। पर घंटी का बजना तो बेकार ही रहा। वह पागल सा घंटी बजाता रहा जब तक वह थक नहीं गया पर परी पर कोई असर नहीं हुआ। तो वह सीधा कमरे में चला गया।

वहाँ पहुँच कर उसको इतना धीरज नहीं था कि वह अपने कमरे के नौकर को बुलाता और उससे चाभी माँग कर अपने कमरे का दरवाजा खोलता। उसने तो बस ताले में एक ज़ोर की ठोकर मारी दरवाजा खोला और कमरे में घुस कर अपनी खिड़की खोली तो अपने मेंहदी के पौधे की सारी पत्तियों को टूटा देख कर तो वह बहुत ज़ोर से रो पड़ा। साथ में वह चिल्लाने लगा।

वह बोला — "हाय मैं अभागा। ओ मेरे बिना पत्तों के मेंहदी के पौधे। किसने मेरे साथ यह चाल खेली है। किसने मेरे पत्ते पर इस तरीके से तुरप लगायी है। ओ मेरी खोयी हुई परी। ओ नष्ट हुए राजकुमार। ओ बिना पत्तों के मेंहदी के पौधे यह गड्ढा पार कर मेरे पास आजा। खुशी तुझसे बहुत दूर चली गयी है। मेरी खुशियाँ सब खट्टी पड़ गयी हैं। क्या तुम मर नहीं जाओगी।

तुमसे तुम्हारी ज़िन्दगी छीन ली गयी है। क्या तुम पागल नहीं हो जाओगी। तुम कहाँ हो मेरी मेंहदी तुम कहाँ हो। संगमरमर से भी

ऐसी कौन सी कठोर आत्मा है जिसने इस संगमरमर के गमले को भी तोड़ दिया है।

उफ़ यह बदकिस्मत शिकार जिसने मेरी खुशियों का ही शिकार कर लिया है। मैं तो बर्बाद हो गया। अब मेरे दिन खत्म हो गये। अब मेरे लिये अपनी ज़िन्दगी के बिना जीना मुमकिन नहीं है। मुझे अब मेरे पैर फैला लेने चाहिये क्योंकि बिना मेरे प्यार के तो सोना भी दुख है खाना भी जहर है आनन्द बेकार है और जिन्दगी दूभर है।"

ऐसा कह कह कर वह रोता रहा। उसके इस रोने से सड़क का पत्थर भी पिघल रहा था। वह ऐसा बार बार कहता रहा और ज़ोर ज़ोर से रोता रहा। सोने के लिये उसकी ऑख भी बन्द नहीं हुई और खाने के लिये उसका मुँह भी नहीं खुला।

उसका चेहरा जो पहले गुलाबी हुआ करता था अब बिल्कुल पीला पड़ गया था। उसके होठ सूख कर सूअर के मॉस जैसे काले[33] हो गये थे।

परी अपने उस बचे हुए शरीर के हिस्से से जो गमले में छोड़ दिया गया था फिर से निकल आयी थी। जब उसने अपने प्रेमी की ऐसी हालत देखी कि किस तरह वह एक बीमार स्पेन के रहने वाले की तरह हो गया था, किस तरह वह एक ज़हरीले गिरगिट में बदल गया था, किस तरह वह किसी पत्ती के रस की तरह बदल गया था,

---

[33] Explained for the word "Bacon"

पीलिया हुए रोगी की तरह हो गया था एक सूखी नाशपाती की तरह हो गया था तो उसको उस पर दया आ गयी।

वह अँधेरी लालटेन में से मोमबत्ती की रोशनी की तरह गमले में फिर से उग आयी और कोला मार्चियोन[34] के सामने आ कर खड़ी हो गयी।

वह उसको गले लगा कर बोली — "सँभलो मेरे राजकुमार सँभलो। यह रोना धोना बन्द करो। ऑखों से ऑसू पोंछो। गुस्सा शान्त करो। चेहरा साफ करो। उन नीच स्त्रियों के मेरे सिर को तोड़ने और मेरे साथ इतना बुरा व्यवहार करने के बावजूद भी देखो मैं ज़िन्दा हॅू। मैं सुन्दर हॅू। मैं तन्दुरुस्त हॅू।"

राजकुमार तो इसकी आशा ही नहीं कर रहा था सो यह देख कर तो उसके मरे हुए शरीर में जैसे जान ही पड़ गयी हो। उसके गालों का रंग वापस आ गया। उसके खून में गर्मी आ गयी।

सैकड़ों बार उसको सहलाने और गले लगाने के बाद अब वह यह जानना चाहता था कि यह सब क्या हुआ कैसे हुआ।

जब उसको पता चला हुआ कि उसके कमरे की देखभाल करने वाले नौकर की उसमें कोई गलती नहीं थी तो उसने उसे बुलाने का हुक्म दिया और एक बड़ी दावत दे कर अपने पिता की मर्जी से उस परी से शादी कर ली।

---

[34] Cola Marchione is the name of the Prince.

उसमें राज्य के सभी बड़े लोगों को बुलवाया गया पर इस सबसे ऊपर उसने उन सात सॉपिनों को भी बुलवाया था जिन्होंने उस कोमल बछिया[35] का कत्ल किया था।

जब सब लोग खाना खा चुके तो राजकुमार ने उस परी की तरफ इशारा कर के एक एक कर के सब मेहमानों से पूछा कि उसको क्या सजा दी जाये जिसने एक बहुत सुन्दर राजकुमारी को जितनी कि वह थी जो सबके दिल के अन्दर घुस जाने वाली थी और हवा की बेटी की तरह से उनकी आत्मा तक निकाल ले आने वाली थी।

तो जितने भी लोग वहॉ मेज पर बैठे हुए थे, राजा से शुरू हो कर एक ने कहा कि उसको फॉसी लगा देनी चाहिये दूसरे ने कहा कि उसको पहिये से बॉध कर घसीटवाना चाहिये तीसरे ने कहा कि उसे चिमटे से पकड़ कर नुचवाना चाहिये और चौथा बोला कि उसे पहाड़ की चोटी से नीचे फिंकवा देना चाहिये। थोड़े में कहो तो किसी ने कुछ सजा बतायी तो किसी ने कुछ और।

बाद में उन सातों स्त्रियों के बोलने की बारी आयी तो हालॉकि उनमें से किसी ने भी इस बातचीत की बड़ाई नहीं की पर जैसे जब शराब के चढ़ जाने के बाद लोग सच बोलते हैं उन्होंने कहा कि

[35] Translated for the word “Calf” – means daughter of the cow or buffalo. Bachchiya is the symbol of innocence.

जिसका दिल इतना मजबूत था जो उस पवित्र प्रेमियों के जोड़े को छू भी सके उसको किसी तहखाने में ज़िन्दा बन्द कर देना चाहिये।

राजकुमार बोला — "अब क्योंकि तुम लोगों ने अपनी सजा अपने आप ही सुना दी है और तुम लोगों ने अपने लिये यह सब खुद ही लिख लिया है तो बस अब मेरे लिये तो उस हुक्म का पालन करना ही रह गया।

क्योंकि यह वह तुम ही थीं जिसने एक नीग्रो के जैसे दिल से मैडिया[36] जैसी बेरहमी से इसके सिर को पकौड़े जैसा तल दिया और इसके सुन्दर शरीर को सौसेज की तरह से काट पीट दिया सो जल्दी उठो देर मत करो और इन सबको तहखाने में फेंक दो जहाँ ये अपना अन्त बहुत ही बुरे हाल में देखेंगी।

राजकुमार के हुक्म का तुरन्त ही पालन किया गया। राजकुमार ने इन सातों की सबसे छोटी बहिन की शादी अपने कमरे की देखभाल करने वाले नौकर से करवा दी और उसको काफी कुछ दे दिया।

उसने मेंहदी के माता पिता के लिये भी बहुत अच्छा रहने खाने का इन्तजाम कर दिया। वह खुद भी परी के साथ बहुत दिनों तक आराम से रहा जबकि वे सातों स्त्रियाँ तहखाने में बुरी मौत मारी गयीं।

---

[36] Medea

इससे अक्लमन्दों की यह कहावत सच पायी जाती है – "लॅगड़ा बकरा भी कूद कूद कर चला जाता है अगर उसको बीच में कोई रोके नहीं।"

# 3 1–3 पैरूऔन्टो[37]

कोई भी अच्छा काम कभी बेकार नहीं जाता। जो नम्रता से व्यवहार करता है उससे उसको फायदा ही होता है। जो दया बटोरता है वही प्यार भी पाता है। जो लोग दूसरों के कृतज्ञ होते हैं वे कभी बेकार नहीं होते। वे हमेशा ही दूसरों का भला करते हैं। यही इस कहानी की सीख है जो मैं अब आप सबसे कहने जा रही हूँ।

एक बार की बात है कि एक गॉव में एक स्त्री रहती थी जिसका नाम था सीकारैला[38]। उसके एक बेटा था जिसका नाम था पैरूऔन्टो। वह एक बहुत ही बड़ा बेवकूफ लड़का था जैसा किसी ने कभी शायद ही देखा हो।

इस बात से उसकी मॉ बहुत दुखी रहती थी। अपने इस दुर्भाग्य पर वह सारा दिन दुखी होती रहती। क्योंकि चाहे वह उससे नम्रता से कहती या चिल्ला कर कहती जिससे उसका गला सूख जाता और वह बेवकूफ अपनी मॉ का कोई काम नहीं करता।

आखिर उसके दिमाग में हजारों विचारों के आने के बाद और हजारों विचारों के रद्द कर देने के बाद, रोज रोज "मैंने कहा था न।" या "मैं कहता हूँ न।" कहने के बाद उसकी मॉ ने उसको लकड़ी लाने के लिये तैयार कर ही लिया।

---

[37] Peruonto (Tale No 3) Day 1, Tale No 3

[38] Ceccarella – name of the woman. Her son's name was Peruonto.

उसने कहा — "चलो आओ अभी खाने का समय हो गया है। जाओ दौड़ जाओ और कुछ लकड़ियाँ ले आओ और देखो तुम अपने आपको कहीं मत भूल आना बल्कि लकड़ियाँ ले कर जल्दी आना। फिर हम ज़िन्दा रहने के लिये अपने लिये कुछ बन्द गोभी उबालेंगे।"

सो बेवकूफ पैरूऔन्टो चल दिया। वह कुछ ऐसे सिर झुकाये हुए जा रहा था जैसे कोई जेल जा रहा हो। वह ऐसे चल रहा था जैसे कोई चिड़िया चलती है। या फिर कोई अंडों पर चलता है या जैसे वह अपने कदम गिनता जा रहा हो या फिर घोंघा चल रहा हो। कभी कभी वह लहराता हुआ चल रहा था। या फिर जैसे रैवन[39] चल रहा हो।

जब वह एक मैदान के बीच में पहुँचा तो वहाँ उसके बीच में एक नदी बह रही थी जिसमें पत्थर बड़ी बेतरतीबी से पड़े थे जिसकी वजह से उसमें बहुत आवाज हो रही थी और वे उसका रास्ता भी रोक रहे थे।

वहीं उसने यह भी देखा कि तीन नौजवान घास में एक चकमक पत्थर का तकिया लगाये तेज़ धूप में गहरी नींद सो रहे थे। सूरज की किरनें उनके ऊपर सीधी पड़ रही थीं।

[39] Raven is a crow-like bird. See its picture above.

जब पैरूऔन्टो ने इनको देखा तो उसे लगा कि वे तो आग के फव्वारे में लेटे हुए थे। उसको उन पर दया आ गयी। उसने ओक के पेड़ से कुछ लकड़ी काटी और उससे उनके ऊपर एक अच्छा सा शेड बना दिया।

इस बीच वे तीनों नौजवान जो परी थे जाग गये और पैरूऔन्टो की दया और नम्रता देख कर उन्होंने उसको एक टोटका[40] दिया और कहा कि वह उससे जो कुछ भी कराना चाहेगा वह टोटका उसके लिये वही करेगा।

पैरूऔन्टो यह अच्छा काम करने के बाद जंगल की तरफ अपने रास्ते चला गया। वहॉ उसने लकड़ी काट कर एक इतना बड़ा गट्ठर बनाया कि उसको खींचने के लिये एक इंजन की जरूरत थी। यह देख कर कि वह उसको किसी तरह भी अपनी पीठ पर नहीं ले जा सकता था वह उसके बराबर में बैठ गया और ज़ोर ज़ोर से रोने लगा।

"मैं कितना किस्मत वाला होता अगर यह गट्ठर मुझे घोड़े की पीठ की तरह लाद कर घर ले जाता।"

बस उसके ये शब्द उसके मुॅह से निकले ही थे कि उस लट्ठे के ढेर ने तो चलना और फिर घोड़े की तरह से कुलाचें मार कर भागना

[40] Translated for the word "Charm". It is considered to bring good luck, protection and to fulfill wishes. It can be anything and can be worn over the body or can be kept with to make it work. See its one shape above in the picture.

शुरू कर दिया। जब वह राजा के महल के सामने आया तो वह इस तरह से घूम कर खड़ा हो गया कि तुमको देख कर आश्चर्य होता।

महल की खिड़कियों में से एक खिड़की पर कुछ स्त्रियॉ खड़ी थीं। ऐसा आश्चर्यजनक दृश्य देख कर वे राजा की बेटी वास्तोला[41] के पास दौड़ी चली गयीं। वास्तोला खिड़की की तरफ आयी तो लकड़ी के गठ्ठरों को अपने आप भागते हुए देख कर बहुत ज़ोर से हॅस पड़ी।

वह तो बहुत दिनों से हॅसी ही नहीं थी। उसे याद ही नहीं था कि इससे पहले वह कब हॅसी थी। उसकी हॅसी की आवाज सुन कर पैरूऔन्टो ने ऊपर देखा तो उसने देखा कि वे लोग तो उसी पर हॅस रही थीं।

यह देख कर वह बोला — "ओह वास्तोला। काश मैं तुम्हारा पति होता तो मैं तुम्हें अपने ऊपर हॅसने का सबक सिखा देता।"

ऐसा कहते हुए उसने अपना पैर जमीन पर पटका और एक ही कूद में वह अपने घर में था। कुछ छोटे छोटे बच्चे उसके पीछे लगे हुए थे। अगर उसकी मॉ बहुत जल्दी ही घर का दरवाजा बन्द न कर लेती तो वे उसके बेटे को उन पत्थरों और डंडियों से मार देते जो वे अपने साथ ले कर आये थे।

अब सवाल था वास्तोला की शादी का कि उसकी शादी किसी बड़े राजकुमार से कर दी जाये। उसके पिता ने उन सब राजाओं

---

[41] Vastolla – name of the daughter of the King

और राजकुमारों को राजकुमारी को देखने के लिये बुलाया जिन जिनको भी वह जानता था।

पर राजकुमारी ने किसी से भी बात करने से इनकार कर दिया। उसने कहा "मैं तो केवल उसी लड़के से शादी करूँगी जो लकड़ी के गट्ठर पर बैठ कर जा रहा था।

यह सुन कर तो राजा बहुत गुस्सा हो गया। बहुत जल्दी ही उसका गुस्सा इतना बढ़ गया कि वह उसे काबू में न रख सका।

उसने अपने सलाहकारों की काउन्सिल बुलायी और उनसे कहा — "क्या आप लोग जानते हैं कि मेरी अब तक कितनी बदनामी हो चुकी है। मेरी बेटी ने इस तरह से व्यवहार किया है कि सारे अखबार मुझे बदनाम करेंगे।

सो मेहरबानी कर के अब आप सब मुझे सलाह दें और बतायें कि मैं उसके साथ क्या करूँ क्योंकि उसने तो मुझे इतना बदनाम किया हुआ है कि इससे पहले वह फिर कोई शरारत करे मैं तो उसको इस दुनियाँ से ही भेज देना चाहता हूँ।"

सलाहकार जो समय के साथ साथ काफी अक्लमन्दी हासिल कर चुके थे बोले — "अगर आप सच पूछते हैं तो इस सबके लिये राजकुमारी जी को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिये। पर वैसे तो आपको परेशान करने वाला तो वह गधा है तो वह बिना किसी सजा के कैसे बच जाये।

हमको तब तक इन्तजार करना चाहिये जब तक वह सामने नहीं आता। तब हम इस अपमान की जड़ तक पहुँचने की कोशिश करेंगे और निश्चय करेंगे कि हमको क्या करना चाहिये।"

यह सलाह राजा को अच्छी लगी क्योंकि राजा को लगा कि वे लोग तरीके की बात कर रहे थे। उसने अपने आपको अपना कोई फैसला करने से रोक लिया और ठीक समय का इन्तजार करने लगा।

उसके बाद राजा ने एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया जिसमें उसने अपने राज्य के हर कुलीन को उसमें बुलाया। वास्तोला को उसने कमरे में एक तरफ ऊँची जगह बिठाया गया।

वह बोला — "यह काम कोई साधारण आदमी नहीं कर सकता। और जब राजकुमारी उस आदमी को पहचान लेगी तो वह अपनी नजरों से उसकी तरफ देखेगी और हम उसको तुरन्त ही पकड़ लेंगे और उसे अपने रास्ते से हटा देंगे।

पर जब दावत खत्म हो गयी और सारे मेहमान वहाँ से लाइन बना कर चले गये। वास्तोला ने तो उनकी तरफ देखा भी नहीं जैसे अलैक्ज़ैन्डर के कुत्ते खरगोशों की तरफ नहीं देखते थे तो राजा और भी गुस्सा हो गया।

उसने फैसला किया कि वह अपनी बेटी को तुरन्त ही मार देगा। पर उसकी सलाहकारों की काउन्सिल ने उसको फिर से शान्त किया।

वे बोले — "योर मैजेस्टी थोड़ा सॅभल कर। शान्ति से। अपना गुस्सा थोड़ा शान्त रखिये। ऐसा करते हैं कि कल हम एक दावत और रखते हैं जिसमें हम सब गरीब लोगों को बुलायेंगे। कुछ स्त्रियॉ ऐसी होती हैं जिन्हें नीचे लोग ही पसन्द आते हैं।

उनमें घास काटने वाले होंगे। मोती के गहने बनाने वाले होंगे। कंघी बेचने वाले होंगे जो आपके गुस्से की जड़ हो सकते हैं और जो इन बड़े आदमियों में नहीं थे।

राजा को उनका यह तर्क अच्छा लगा सो अगले दिन एक और दावत का इन्तजाम किया गया जिसमें सब गरीब और नीचे लोग बुलाये गये जैसे भंगी, सफाई करने वाले, रास्ता चलने वाले, भिखारी आदि। जब वे सब मेज पर बैठ गये तो उन्होंने खाने को बहुत जल्दी जल्दी खाना शुरू कर दिया।

जब सीकारैला[42] ने यह राजा का यह फरमान सुना तो उसने अपने बेटे पैरूऔन्टो से वहॉ जाने के लिये कहा। और वह तब तक उससे कहती रही जब तक वह दावत में जाने के लिये तैयार नहीं हो गया।

जैसे ही वह दावत में पहुॅचा तो वास्तोला बिना कुछ सोचे समझे चिल्ला पड़ी — "वह रहा मेरा लकड़ी के गट्ठर वाला नाइट।"

[42] Ceccarrella – name of the mother of Peruonto

जब राजा ने यह सुना तो गुस्से और अपमान से अपनी दाढ़ी नोचने लगा। यह देख कर कि केक की बीन और लौटरी का इनाम उसको इतने भद्दे रूप में मिलेगा जिसकी तरफ कि वह देख भी नहीं सकता था – उसका उलझे बालों वाला सिर, उल्लू की सी ऑखें, तोते की सी नाक, हिरन का सा मुँह, झुकी हुई और नंगी टॉगें।

उसको देख कर उसने एक लम्बी सी सॉस भरी और कहा "क्या देख कर मेरी जेड जैसी बेटी ने इस राक्षस को शादी के लिये चुना है। इस बालों वाली टॉग वाले के साथ वह कैसे नाचेगी। हे भगवान किसने उसके ऊपर यह जादू डाला है।

पर हम इन्तजार क्यों करें। इसकी सजा वह अपने आप भुगते जो उसे मिलनी चाहिये। उसको वह सजा मिलनी ही चाहिये जो तुमने उसकी किस्मत में लिखी है। इसको मेरे सामने से दूर ले जाओ। मैं इसको अपनी नजरों से और नहीं देख सकता।"

तब सलाहकारों की काउन्सिल ने निश्चय किया कि राजकुमारी और उस नीच को एक बक्से में बन्द कर दिया जाये और उसे समुद्र में फेंक दिया जाये ताकि राजा के हाथ अपने परिवार के किसी सदस्य के खून से भी न रॅगें और उनको सजा भी मिल जाये।

जैसे ही फैसला सुनाया गया एक बक्सा लाया गया दोनों को उसमें रखा गया पर इससे पहले कि वे उसे बन्द करते कुछ स्त्रियॉ जो वास्तोला की नौकरानियॉ थीं इतनी ज़ोर ज़ोर से रोने लगीं जैसे उनका दिल फट जायेगा।

रोते रोते उन्होंने एक टोकरी किशमिश और सूखे अंजीर उनके बक्से में रखवा दिये ताकि उनके सहारे वह कुछ देर तक ज़िन्दा रह सके। उसके बाद बक्सा बन्द कर दिया गया और समुद्र में बहा दिया गया। हवा के बहाव से वह बक्सा समुद्र के ऊपर तैर गया।

वास्तोला तो यह सब देख कर रोने लग गयी जब तक उसकी ऑखों के ऑसुओं की नदियॉ नहीं बन गयीं। वह पैरूऔन्टो से बोली — "यह हमारी कैसी बदकिस्मती है। काश मैं जानती कि मेरे साथ यह चाल किसने खेली है जिसकी वजह से मैं आज इस तहखाने में बन्द हूॅ। मैं यही नहीं जानती कि मैं इस हालत में कैसे आयी।

ओ बेदर्द आदमी तुम्हीं मुझे बताओ कि तुमने मेरे ऊपर ऐसा क्या जादू पढ़ दिया है। मुझे बताओ कि तुमने मेरे ऊपर ऐसा कौन सा जादू पढ़ा है जो मैं इस बक्से में बन्द हूॅ।"

पैरूऔन्टो ने पहले तो उसकी तरफ कुछ ध्यान नहीं दिया फिर बाद में बोला — "अगर तुम यह बात जानना चाहती हो तो पहले मुझे थोड़ी सी किशमिश और अंजीर दो।"

सो वास्तोला ने यह राज़ जानने के लिये उसे एक एक मुट्ठी किशमिश और अंजीर दोनों दे दिये। जैसे ही उसने वे दोनों खा लिये तो ईमानदारी से उसने अपना पूरा हाल बता दिया जो अब तक उसके साथ हुआ था – तीन नौजवानों का उसे मिलना उनका उसको

टोटका देना फिर उसका लकड़ी के गट्ठर को घोड़े की तरह से भगाना आदि आदि।

जब राजकुमारी ने यह सब सुना तो उसने अपने दिल को सॅभाला और उससे पूछा — "तो क्या अब हम अपनी ज़िन्दगी इसी बक्से में बन्द रह कर गुजारेंगे। तुम अब इसको कहो कि यह बहुत बड़े सुन्दर जहाज़ में बदल जाये और इस खतरे से बचने के लिये किसी अच्छे से बन्दरगाह पर जा कर लग जाये।"

पैरूऔन्टो बोला — "अगर तुम यह चाहती हो कि मैं यह जादू पढ़ूँ तो तुम मुझे किशमिश और अंजीर फिर से पेट भर कर खिलाओ।"

सो वास्तोला ने उसके मुँह में किशमिश और अंजीर ठूँस कर भर दीं और पैरूऔन्टो ने वह जादू पढ़ दिया। और लो। जैसे ही पैरूऔन्टो ने वह जादू पढ़ा तो वह बक्सा तो एक बहुत सुन्दर जहाज़ बन गया।

उसके नाविक आ गये उसमें मस्तूल लग गये बहुत सारे नौकर चाकर आ गये और जो जो चीज़ें उसमें चाहिये थीं वे सब उसमें आ गयीं। बन्दूकें तोपें आ गयीं और एक बहुत ही सुन्दर और आरामदेह केबिन आ गया जिसमें वास्तोला आराम से बैठी हुई थी।

अब समय आ गया था जब चॉद सूरज के पीछे पीछे आ गया था तो वास्तोला ने पैरूऔन्टो से कहा — "ओ मेरे बढ़िया लड़के। अब तुम इसे एक महल में बदल दो क्योंकि तब हम लोग इसमें

ज़्यादा सुरक्षित रहेंगे। तुम्हें वह कहावत मालूम है न कि "समुद्र की तो केवल प्रशंसा करो पर रहो जमीन पर।"

पैरूऔन्टो ने फिर कहा — "अगर तुम यह चाहती हो कि मैं यह जादू पढ़ूँ तो तुम मुझे किशमिश और अंजीर पेट भर कर खिलाओ।"

सो वास्तोला ने पैरूऔन्टो को फिर से किशमिश और अंजीर खिलाये और पैरूऔन्टो ने फिर से जादू पढ़ दिया। जहाज़ तुरन्त ही किनारे पर आ गया और एक बहुत ही शानदार महल में बदल गया। उसमें परदे फर्नीचर सजावट सभी कुछ उसी के लायक हो गयी जैसी कि उसे चाहिये थी। किसी चीज़ की वहाँ कोई कमी नहीं थी।

वास्तोला जो कुछ देर पहले तक अपनी आगे की ज़िन्दगी के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी अब वहाँ से कहीं और जाना नहीं चाहती थी। वह तो वहाँ की रानी थी।

अपनी इस खुशकिस्मती पर सील लगाने के लिये उसने पैरूऔन्टो से विनती की कि वह भी अब सुन्दर और तौर तरीके वाल हो जाये ताकि वे अपनी बाकी की ज़िन्दगी खुशी खुशी गुजार सकें। हालाँकि एक कहावत तो यह कहती है कि "किसी सूअर को अपना पति रखना ज़्यादा अच्छा है बजाय एक बादशाह की मुस्कुराहट के।"

फिर भी उसकी शक्ल सूरत अगर बदल जाती तो वह अपने आपको दुनियॉ की सबसे खुशकिस्मत स्त्री समझती। और पैरूऔन्टो ने फिर कहा — "अगर तुम यह चाहती हो कि मैं यह जादू पढ़ूॅ तो तुम मुझे एक बार फिर से किशमिश और अंजीर पेट भर कर खिलाओ।"

वास्तोला ने तुरन्त ही उसका मुॅह खोल कर उसके मुॅह में फल डाल दिये। और जैसे ही पैरूऔन्टो ने अपने जादू के शब्द कहे तो वह तो एक बहुत ही सुन्दर आकर्षक और तरीके वाला नौजवान बन गया।

जैसे कोई उल्लू बुलबुल में बदल गया हो। जैसे कोई राक्षस किसी सुन्दर नौजवान में बदल गया हो। या फिर जैसे कोई बिजूका[43] एक बढ़िया भले आदमी में।

वास्तोला ने जब यह सब बदला हुआ रूप देखा तो उसने पैरूऔन्टो को गले से लगा लिया और खुशी के मारे आपे से बाहर सी हो गयी। फिर वे कई साल तक खुशी खुशी रहे।

इस बीच राजा बूढ़ा हो गया और बहुत दुखी हो गया। एक दिन उसके दरबारियों ने उसको खुश करने के लिये शिकार का प्रोग्राम बनाया।

---

[43] Translated for the word "Scarecrow". See its picture above.

शिकार खेलते खेलते उसे रात हो गयी तो पास में ही उसने एक महल में रोशनी देखी तो अपने एक नौकर को वहाँ यह पूछने के लिये वहाँ भेजा कि क्या उसको वहाँ रात भर के लिये शरण मिल सकती है। वह वहाँ गया और पूछा तो उसे जवाब मिला कि सब कुछ उसी का है।

सो राजा वहाँ चला गया और एक अच्छे बड़े शानदार कमरे में ठहरा दिया गया। अन्दर जाते समय उसने वहाँ कोई ज़िन्दा आदमी नहीं देखा पर दो छोटे बच्चे उसके चारों ओर नाचते हुए उसका स्वागत कर रहे थे।

राजा उनको देख कर आश्चर्यचकित रह गया। वह तो वहाँ ऐसे खड़ा रह गया जैसे किसी ने उस पर जादू डाल दिया हो। वह वहीं पास में पड़ी एक मेज पर बैठ गया।

उसका आश्चर्य और भी बढ़ गया जब उसने देखा कि उस मेज पर फ्लैन्डर्स का मेजपोश बिछा हुआ था और वहाँ पर अदृश्य रूप से खाने की प्लेटें लगी हुई थीं जिनमें भुना हुआ माँस था और दूसरे बढ़िया खाने रखे हुए थे।

उसने वहाँ एक राजा की तरह खाना खाया जबकि दोनों बच्चे उसके पास ही खड़े रहे। वह जब तक मेज पर बैठा रहा तब तक संगीत बजता रहा जो उसके शरीर को आनन्द दे रहा था।

जब वह खाना खा चुका तो अचानक वहाँ सोने का बना हुआ एक पलंग प्रगट हो गया। उसने अपने जूते निकाले और उस पर

सोने के लिये लेट गया। ऐसा ही उसके दरबारियों ने भी किया। उन्होंने भी दूसरे कमरों में सैंकड़ों मेजों पर खाना खाया और फिर सोने चले गये।

सुबह को राजा ने दोनों बच्चों को इस सबके लिये धन्यवाद देना चाहा तो उनके साथ वास्तोला और उसका पति वहाँ आ गये।

वास्तोला अपने पिता के पैरों पर गिर पड़ी उसने उससे माफी माँगी और सब कहानी उसे सुनायी। राजा ने जब अपने दो धेवतों को देखा जो उसके लिये जवाहरात जैसे थे और अपने दामाद को देखा जो एक परी लग रहा था तो उसने एक एक करके सबको अपने गले से लगाया।

फिर वह बच्चों को गोद में उठा कर शहर ले आया और महल में कई दिनों तक खूब जश्न मनाया गया।

# 4 1–4 वरडीलो[44]

अगर प्रकृति ने जानवरों को खुद कपड़ा पहनने की और खाना खरीदने की जरूरत दी होती तब तो चार पैरों वालों की जाति ही खत्म हो जाती। इसी लिये ऐसा है कि उनको खाना बिना किसी मुश्किल के मिल जाता है। वे बिना किसी माली के उसको इकट्ठा कर सकते हैं। वे बिना किसी खरीदने वाले के उसको पा सकते हैं। बिना किसी रसोइये के उसको तैयार कर सकते हैं। बिना किसी काटने वाले के काट सकते हैं।

उनकी खाल बरसात और बर्फ में उनकी रक्षा करती है इसलिये उनको किसी कपड़े के व्यापारी की जरूरत भी नहीं पड़ती। किसी दर्जी की जरूरत नहीं है किसी चीज़ को सिलने के लिये क्योंकि उनको पोशाक की ही जरूरत नहीं है। उनको किसी लड़के की जरूरत नहीं जो उन्हें पानी पिलाये।

पर आदमी जो अक्लमन्द है प्रकृति ने उसको ये सब सुविधाऐं नहीं दीं क्योंकि उसमें यह योग्यता है कि उसे जिस किसी चीज़ की जरूरत है वह उसे पा सकता है। यही वजह है कि हम अक्लमन्द आदमी को गरीब देखते हैं और खरदिमाग को अमीर। यह कहानी जो अब मैं आप सबको सुनाने जा रही हूँ यही बताती है।

अप्रानो की ग्रैनोनिया[45] एक बहुत ही समझदार स्त्री थी पर उसके एक बेटा था वरडीलो जो दुनियाँ का सबसे बड़ा बेवकूफ था और सारे देश में सबसे ज़्यादा सीधा था। फिर भी एक माँ की आँखों में तो ऐसा जादू होता है कि वे वह भी देखती हैं जो नहीं होता।

उसकी माँ उसको कुछ इस तरह से देखती थी और कुछ इस तरह से सहलाती और प्यार करती थी कि जैसे वह दुनियाँ का सबसे सुन्दर प्राणी था।

---

[44] Vardiello. (Tale No 4) Day 1, Tale No 4

[45] Grannonia of Aprano (a place)

ग्रैनोनिया के पास एक मुर्गी थी जिसको उसने कुछ अंडों पर बिठा रखा था। उसी से उसको सारी आशाऐं लगी थीं। वह सोचती थी कि उन अंडों से अच्छे चूज़े निकलेंगे जिनके उसको अच्छे पैसे मिल जायेंगे।

एक दिन किसी काम से वह घर से बाहर गयी तो उसने अपने बेटे को बुलाया और उससे कहा — "अपनी माँ के मेरे प्यारे बेटे। अब तू मेरी सुन जो मैं तुझसे कहती हूँ। तू मुर्गी पर ध्यान लगाये रखना।

अगर वह खुजाने या किसी और काम के लिये वहाँ से उठे तो उसे तेज़ निगाहों से देखना और फिर उसे वापस अंडों पर ला कर बिठा देना। क्योंकि नहीं तो अंडे ठंडे हो जायेंगे और फिर हमारे पास न तो चूज़े होंगे और न ही अंडे।"

वरडीलो बोला — "तुम मुझ पर छोड़ दो माँ। तुम किसी ऐसे आदमी से बात नहीं कर रहीं जो सुनता ही न हो।"

माँ आगे बोली — "एक बात और मेरे प्यारे बेटे। उधर की आलमारी में एक बर्तन में कुछ जहरीली चीज़ें रखी है ध्यान रखना कि शैतान तुझे उन्हें छूने के लिये ललचाये नहीं क्योंकि वे चीज़ें तुझे पल भर में हीं मार सकती हैं।"

वरडीलो बोला — "ओह नहीं भगवान की कसम। जहर मुझे किसी भी हालत में नहीं ललचा सकता। पर माँ तुमने यह एक बहुत ही अक्लमन्दी का काम किया है कि मुझे पहले ही चेतावनी दे दी।

क्योंकि अगर वह मुझे मिल जाता तो मैं तो उसे निश्चित रूप से खा जाता।”

मॉ घर से चली गयी और वरडीलो घर में ही रह गया। अपना समय न गॅवा कर वह बागीचे में गड्ढे खोदने के लिये चला गया जो बाद में उसने डंडियों और मिट्टी से ढक दिये। यह गड्ढे उन छोटे छोटे चोरों को पकड़ने के लिये थे जो वहॉ आ कर उसके फल खा जाया करते थे।

जब वह यह काम कर रहा था तो उसने देखा कि मुर्गी तो कमरे में से भाग कर बाहर आ रही है। सो उसने उसको “हिश हिश, इधर जा उधर जा।” कर कर के उसको वापस कमरे में भेजने की कोशिश की पर वह मुर्गी तो टस से मस ही नहीं हुई।

वरडीलो ने देखा कि वह तो गधे की तरह से व्यवहार कर रही है तो उसने “हिश हिश” के साथ अपना पैर भी पटकना शुरू कर दिया। जब पैर पटकने से कुछ काम नहीं बना तो उसने उसके ऊपर अपनी टोपी फेंकी। टोपी फेंकने के तुरन्त बाद ही उसने उसको एक छोटे डंडे से मारा। वह उसके लगते ही मर गयी।

जब वरडीलो ने यह देखा तो उसने सोचा कि इस गड़बड़ी को कैसे सुधारा जाये। उसने सोचा कि अब तो ये अंडे ठंडे हो जायेंगे सो उन अंडों के ऊपर वह खुद जा कर बैठ गया।

पर ऐसा करते समय उससे अंडों को ठोकर लग गयी वे टूट गये सो तुरन्त ही उसने उनका एक आमलेट बना लिया।

उसको फिर कुछ लगा कि उसने यह सब क्या कर दिया तो वह अपना सिर दीवार से टकराने लगा।

आखिर उसका सारा दुख अब भूख में बदल गया था। उसका पेट अब भूख से गुड़गुड़ाने लगा था तो उसने सोचा कि वह उस मुर्गी को खा जायेगा। सो उसने उसके पंख निकाले और उसके अन्दर एक लोहे की सलाख घुसा कर एक गड्ढे के ऊपर एक बहुत बड़ी आग जलायी और उसको भूनने बैठ गया।

जब वह भुन गयी तो वरडीलो ने सब काम तरतीबवार करने के ख्याल से एक पुराने बक्से पर एक साफ मेजपोश बिछाया। फिर वाइन लाने के लिये एक गिलास ले कर वह नीचे गया।

जब वह वाइन अपने गिलास में पलट रहा था तो उसने कुछ शोर सुना जैसे घर में कोई कुछ कर रहा था। उसे घोड़े के खुरों की आवाज आयी। वह सावधान हो गया।

उसने अपनी ऑखें इधर उधर घुमायीं तो देखा कि वहॉ तो एक टौम बिल्ला था जो उसकी सलाख लगी मुर्गी ले कर भागा जा रहा था। और इसके ऊपर से एक और बिल्ला उसका पीछा कर रहा था म्याऊॅ म्याऊॅ करता हुआ और उस मुर्गी में से अपना हिस्सा मॉगता हुआ।

वरडीलो ने इस गड़बड़ी को ठीक करने के लिये बिल्ले के ऊपर निशाना साधा जैसे किसी खुले शेर को मारने लिये लगाते हैं।

इस जल्दी में उसने शराब के बैरल का नल खुला छोड़ दिया। सारी जगह बिल्ले का पीछा करने के बाद आखिर उसने अपनी मुर्गी तो पा ली पर इस बीच शराब का बैरल खाली हो गया था।

जब वरडीलो लौटा तो देखा कि शराब का बैरल तो खाली पड़ा है तो उसने अपनी ऑखों का शराब का बैरल भी रो रो कर खाली कर दिया।

पर आखिर उसको कुछ बुद्धि आयी और उसको एक प्लान सूझा ताकि वह अपने किये पर परदा डाल सके और मॉ को यह पता न चलने दे कि उसके पीछे क्या हुआ था। उसने आटा लिया और उससे एक बोरा पूरा भर लिया। फिर उसने उस आटे को फैली हुई शराब के ऊपर डाल दिया।

इस बीच में उसने हिसाब लगाया कि उसने कितनी मुश्किलों का सामना किया है तो उसने सोचा कि जितनी बेवकूफियॉ उसने की हैं उस हिसाब से तो वह ग्रैनोनिया की नजरों से बहुत नीचे गिर चुका है। सो उसने निश्चय किया कि वह अपनी मॉ को कभी अपना चेहरा नहीं दिखायेगा।

सो उसने अखरोट के अचार की शीशी में अपना हाथ डाल दिया जिसको उसकी मॉ ने उसे छूने को भी मना किया था क्योंकि उसमें कोई जहरीली चीज़ थी। वह उसे बराबर तब तक खाता रहा जब तक कि वह बोतल खाली नहीं हो गयी। जब उसका पेट भर गया तो वह ओवन के अन्दर छिप कर बैठ गया।

इस बीच उसकी माँ घर लौटी तो वह घर के दरवाजे को बहुत देर तक खटखटाती रही पर जब उसने देखा कि किसी ने दरवाजा नहीं खोला तो उसने उसमें एक लात मारी और दरवाजा खुल गया।

वह घर के अन्दर गयी और बहुत ज़ोर से अपने बेटे को पुकारा। पर इसका भी उसको कोई जवाब नहीं मिला तो उसे घबराहट हुई कि लगता है उसके साथ कुछ बुरा हो गया है। वह और ज़ोर से रोती चिल्लाती हुई इधर उधर भागने लगी —

"वरडीलो वरडीलो। क्या तू बहरा हो गया है जो तुझे सुनायी नहीं पड़ता। क्या तेरे पैरों की नस चढ़ गयी है जो तुझसे भागा नहीं जा रहा। क्या तेरे मुँह में कुछ है जो तू जवाब नहीं दे पा रहा है। तू है कहाँ। ओ शैतान तू कहाँ छिपा हुआ है।"

वरडीलो यह सब सुनता रहा फिर बेचारा दया माँगने के सुर में चिल्लाया — "मैं यहाँ हूँ। मैं यहाँ हूँ ओवन में। पर अब तुम मुझे कभी नहीं देखोगी माँ।"

बेचारी माँ बोली — "क्यों बेटे।"

"क्योंकि मैंने जहर खा लिया है।"

"उफ़ उफ़। पर ऐसा तूने क्यों किया बेटे। ऐसा तूने क्या किया था जिसकी वजह से तुझे जहर खाना पड़ा। और तुझे जहर दिया किसने।"

तब वरडीलो ने उसको एक एक कर के सब घटनाऐं बता दीं। और फिर उसने उसे यह भी बता दिया कि वह किसलिये मरना

चाहता था। क्योंकि वह दुनियाँ में हँसी का पात्र बन कर जीना नहीं चाहता था।

उसकी बेचारी माँ यह सब सुन कर बहुत ही दुखी हो गयी। उसने उसको इसके बारे में उससे बहुत कुछ कहा और समझाया और उसके सिर से बेकार का बोझ उतारा। उसको बहुत प्यार करने की वजह से उसने उसको बहुत समझाया उसको मिठाई दी और अखरोट का मामला भी रफा दफा किया कि उसमें कोई जहर नहीं था बल्कि वह तो पेट को बहुत आराम देने वाले थे।

ऐसा कह कह कर उसने उसको शान्त किया। वह बहुत देर तक उसकी पीठ पर हाथ फेरती रही। उसने उसे ओवन में से बाहर निकाला। फिर उसने उसे एक बहुत बढ़िया कपड़ा दिया और उसको बाजार में बेच आने के लिये कहा। उसने कहा कि वह इसका सौदा ऐसे किसी आदमी से न करे जो बहुत बोलता हो।

वरडीलो बोला — "ठीक है ठीक है। तुम सब मुझ पर छोड़ दो। मुझे मालूम है कि मुझे क्या करना है। तुम डरो नहीं।"

यह कह कर कपड़ा ले कर वह नैपिल्स शहर[46] चला गया और वहाँ जा कर चिल्लाने लगा "कपड़ा ले लो। कपड़ा ले लो।"

अगर कोई उससे पूछता कि "यह क्या कपड़ा है।"

तो वह उससे कहता — "तुम मेरे ग्राहक नहीं हो। तुम तो बहुत बोलते हो।"

---

[46] Naples is historical port city if Italy on its South-Western Coast

जब किसी दूसरे ने उससे पूछा कि "यह कपड़ा किस हिसाब से दिया है।" तो उसने उससे कहा "तुम तो बातों का बक्सा हो मैं तुम्हें यह कपड़ा नहीं बेच सकता।" सो उसने उसे भी चिल्ला कर चुप कर दिया।

आखिर उसे एक मकान के ऑगन में एक मूर्ति लगी हुई दिखायी दे गयी। वह मकान मोनासीलियो[47] की प्लास्टर की मूर्ति के लगे होने की वजह से उजाड़ पड़ा हुआ था। वह चलते चलते थक गया था सो वह वहॉ पड़ी हुई एक बैन्च पर सुस्ताने के लिये बैठ गया।

पर उसको उस घर में कोई भी आदमी दिखायी न देने की वजह से डर सा लगने लगा जैसे वहॉ के सब लोग उस घर को छोड़ कर चले गये हों। उसने मूर्ति से पूछा — "ओ मेरे साथी मुझे बताओ तो सही कि क्या इस घर में कोई नहीं रहता।"

वरडीलो ने सवाल के जवाब का कुछ देर तक तो इन्तजार किया पर जब उसे कुछ जवाब नहीं मिला तो उसने सोचा यही आदमी ठीक है क्योंकि यह कम बोलने वाला आदमी लगता है।

सो उसने उससे पूछा — "दोस्त क्या तुम मुझसे यह कपड़ा खरीदोगे। मैं तुम्हें यह सस्ते में दे दूँगा।"

पर जब उसने यह देखा कि मूर्ति तो कुछ बोली नहीं तो वह बोला — "आखिर मैंने अपना खरीदार पा ही लिया। लो यह कपड़ा

[47] Plaster statue of Monaceilio

लो इसको देखभाल लो और जो चाहो मुझे इसका दाम दे दो। मैं अपने पैसे लेने के लिये कल आऊँगा।"

कह कर वरडीलो ने वह कपड़ा वहीं छोड़ दिया जहाँ वह बैठा हुआ था और वहाँ से चला गया।

कुछ ही देर में वहाँ एक माँ का बेटा आया और वह कपड़ा उठा कर ले गया।

जब वरडीलो बिना कपड़ा लिये घर पहुँचा तो उसने अपनी माँ को सब बताया तो उसको तो यह सुन कर चक्कर आ गया।

वह सँभली तो बोली — "तुझे अक्ल कब आयेगी। देख तूने मेरे साथ कैसी चाल खेली है। ज़रा सोच कर देख। पर इस सबके लिये तो मैं खुद ही जिम्मेदार हूँ। क्योंकि बजाय इसके कि मैं तुझे अच्छी तरह मार लगाऊँ मैं हमेशा तेरे साथ मुलायमियत के साथ बर्ताव करती रही हूँ।

पर मुझे लगता है कि जो डाक्टर दया का बर्ताव करता है वह केवल घाव को कभी न ठीक होने वाला बनाता है। पर तू अपनी शरारत करने से बाज़ नहीं आयेगा जब तक कि हमें कोई भारी नुकसान नहीं पहुँचेगा। और तब तक हमें बहुत देर हो चुकी होगी मेरे बच्चे।"

वरडीलो बोला — "माँ आराम से आराम से। अब मामला इतना खराब भी नहीं है जितना दिखायी देता है। क्या तुम चाहती हो कि मैं टकसाल से नये नये सिक्के निकाल कर ले आऊँ? क्या

तुम मुझे बेवकूफ समझती हो जो मैं यह भी नहीं जानता कि मैं क्या कर रहा हूँ। अभी कल हुआ नहीं है। ज़रा इन्तजार करो फिर तुम देखोगी कि मुझे फावड़े का हैन्डिल फावड़े में लगाना आता है या नहीं।"

अगले दिन जैसे ही रात गयी और दिन निकला वरडीलो उसी मकान के ऑगन में पहुँच गया जहाँ वह मूर्ति को अपना कपड़ा बेच कर आया था। वहाँ जा कर उसने मूर्ति को गुड मौर्निंग की और बोला — "क्या तुम मुझे मेरे वे पैंस दे सकते हो जो तुम्हारे ऊपर मेरे उधार हैं। लाओ मेरे कपड़े के पैसे जल्दी से लाओ।"

पर जब उसने देखा कि मूर्ति तो बोली नहीं तो उसने एक पत्थर उठाया और उसे घुमा कर उसकी छाती पर दे मारा। पत्थर की उस मार ने वहाँ उसमें एक झिरी सी खोल दी पर इससे उसका दुख दूर हो गया क्योंकि इससे मूर्ति के कुछ टुकड़े नीचे भी गिर गये।

उसने उससे बने छेद में झॉक कर देखा तो सोने के सिक्कों से भरा एक बर्तन उसे नजर आया। उसने उसे अपने दोनों हाथों में उठा लिया और उसे ले कर जल्दी से घर भाग लिया। वह चिल्लाता जा रहा था — "माँ माँ देखो मुझे कितनी सारी लाल लूपिन्स[48] मिली हैं। कितनी सारी, कितनी सारी।"

[48] A kind of bean. See its pods' picture above.

मॉ ने देखा कि वरडीलो को तो बहुत सारे सोने के सक्के मिल गये हैं और वह यह बात सबको बता देगा उसने उससे कहा कि वह दरवाजे पर खड़ा हो जाये जब तक कि दूध वाला और चीज़ वाला आ कर न चाले जायें क्योंकि वह एक पैन्स का दूध खरीदना चाहती थी। सो वरडीलो जो बहुत ही बेवकूफ था जल्दी से जा कर दरवाजे पर बैठ गया।

उधर वरडीलो की मॉ करीब आधे घंटे तक खिड़की से नीचे की तरफ किशमिश और सूखी अंजीरों की बारिश करती रही। वरडीलो ने जब यह देखा तो वह उनको इकट्ठा करने पर लग गया।

साथ में वह चिल्लाया भी — "मॉ मुझे कुछ टोकरियॉ दो टब दो बालटियॉ दो। यहॉ तो मेवा की बारिश हो रही है हम लोग थोड़ी ही देर में बहुत अमीर हो जायेंगे।" जब वरडीलो ने उन्हें पेट भर कर खा लिया तो वह ऊपर जा कर सो गया।

एक दिन गॉव के दो आदमी दरबार पहुॅचे। वे एक सोने के सिक्के के ऊपर लड़ रहे थे जो उन्हें कहीं जमीन पर पड़ा मिल गया था।

वरडीलो उधर से गुजर रहा था तो वह बोला — "ओ गधो तुम लोग किस चीज़ पर लड़ रहे हो। क्या इस लाल लूपिन जैसी चीज़ पर? जहॉ तक मेरा सवाल है मैं तो इसको राई के दाने बराबर भी महत्व नहीं देता क्योंकि मुझे तो ये एक बर्तन भर कर मिले हैं।"

जज ने जब यह सुना तो उसकी ऑखें बड़ी बड़ी हो गयीं। उसने वरडीलो को ध्यान से देखा और उससे पूछा कि वह बर्तन उसे कहॉ कैसे और कब मिला।

वरडीलो ने उसको बताया कि वह बर्तन उसको एक महल में एक बिना बोलने वाले आदमी से मिला था जब किशमिश और सूखी अंजीरों की बारिश हो रही थी।

यह सुन कर तो जज और भी ज़्यादा आश्चर्य में पड़ गया पर मामला उसकी समझ में जल्दी ही आ गया। उसने तुरन्त ही वरडीलो को पागलखाने भेजने का फैसला सुना दिया।

इस तरह एक मॉ के बेवकूफ बेटे ने अपनी मॉ को अमीर बनाया और मॉ की भी अपने बेवकूफ बेटे से कैसे बर्ताव किया जाये समझ में आ गया।

अब यह तो साफ साफ दिखायी देता है कि —

एक जहाज़ जो कुशल हाथों से चलाया जाता है<br>
वह चट्टान या रेत से कभी नहीं टकराता

# 5 1–5 पिस्सू[49]

बिना सोचे समझे लिये हुए फैसले इतनी बड़ी आफत लाते हैं कि उनका कोई हल नहीं होता। जो एक बेवकूफ की तरह व्यवहार करता है वह एक अक्लमन्द की तरह पछताता है। जैसा कि हाई हिल[50] के राजा के साथ हुआ। उसने अपने पागलपन की वजह से ऐसा बेवकूफी का काम किया जिसका कोई उदाहरण नहीं मिलेगा। उसने अपनी बेटी और खुद की इज़्ज़त दोनों को झमेले में डाल दिया।

एक बार की बात है कि हाई हिल के राजा को एक पिस्सू ने काट लिया। राजा ने उसे पकड़ भी लिया और यह देख कर कि वह कितना राजा जैसा और शाही पिस्सू था उसने उसको फेंका भी नहीं और मारा भी नहीं। उसने उसको एक शीशी में बन्द कर के रख दिया।

वह उसे रोज अपने हाथ से खाना खिलाता तो वह छोटा सा जानवर इतनी तेजी से बढ़ने लगा कि सात महीने खत्म होते होते तो उसको उसके घर में रखना जरूरी हो गया। क्योंकि वह तो अब एक भेड़ से भी बड़ा हो गया था।

यह देख कर राजा ने अब उसे मारने का और उसकी खाल निकालने का हुक्म दिया। अब उसने सब जगह एक फरमान निकलवा दिया कि जो कोई यह बतायेगा कि यह खाल किसकी है वह उसी से अपनी बेटी की शादी करेगा।

---

[49] The Flea. (Tale No 5) Day 1, Tale No 5

[50] The King of High Hill

जैसे ही यह फरमान निकाला गया तो दुनियाँ के चारों कोनों से लोगों ने भीड़ में वहाँ अपनी अपनी किस्मत आजमाने के लिये आना शुरू कर दिया।

एक बोला यह खाल तो किसी बन्दर की है। दूसरा बोला कि यह खाल किसी लिंक्स[51] की है। तीसरा बोला यह खाल तो किसी मगर की लगती है। थोड़े में कहो तो किसी ने किसी जानवर का नाम लिया तो किसी ने किसी और का।

पर वे सब सच से सैंकड़ों मील दूर थे। कोई भी कील पर हथौड़ा नहीं मार सका।[52] आखिर एक ओगरे इसके लिये कोशिश करने के लिये आया। वह ओगरे दुनियाँ का शायद सबसे बदसूरत आदमी था। जब भी कोई उस ओगरे को देखता तो वह आदमी कितना भी बहादुर होता डर के मारे काँपने लगता।

पर जैसे ही वह आया उसने खाल को घुमा फिरा कर देखा और सूँघा तो तुरन्त ही बता दिया कि यह खाल तो पिस्सुओं के राजा की है।

राजा ने देखा कि ओगरे का तीर तो निशाने पर लगा है। अब वह अपने कहे हुए वायदे से मुकर तो नहीं सकता था सो उसने अपनी बेटी पौर्ज़ीला[53] को बुलवा भेजा।

---

[51] Lynx – a kind of fat cat

[52] It is an idiom – "To hit the nail on the head". Here it means that nobody could tell the name of the correct animal whose hide it was, although he told the name.

[53] Porzeilla – name of the daughter of the King

पौर्ज़ीला का रंग दूध में मिले हुए गुलाब जैसा था। उसको भगवान ने ऐसी जादुई सुन्दरता दी थी कि तुम उसे देखने से कभी थक ही नहीं सकते।

राजा ने अपनी बेटी से कहा — “बेटी। तुम मुझे जानती हो कि मैं कौन हॅू। मैं अपने वायदे से फिर नहीं सकता चाहे वह राजा हो या फिर भिखारी। मैंने जो कह दिया सो कह दिया। हालॉकि यह करते हुए मेरा दिल टूटता है।

किसने सोचा था कि यह इनाम एक ओगरे जीत लेगा। पर किसी को जल्दी में नहीं तौल लेना चाहिये सो धीरज रखो बेटी और अपने पिता के खिलाफ मत बोलो। क्योंकि मेरा दिल कहता है कि तुम खुश रहोगी। क्योंकि कहावत है कि गुदड़ी में ही लाल छिपे रहते हैं।[54]

जब पौर्ज़ीला ने यह सुना तो उसकी ऑखें गीली हो गयीं। उसका चेहरा पीला पड़ गया। उसके होठ लटक गये। उसके घुटने कॉपने लगे।

वह रोते हुए बोली — “मैंने ऐसा कौन सा जुर्म किया है पिता जी जिसकी मुझे यह सजा मिल रही है। क्या मैंने आपके साथ कुछ बुरा किया है। आप तो हमेशा यही कहते थे कि मैं ही आपकी आत्मा की खुशी हॅू। क्या आप उसे ही अपनी ऑखों के सामने से दूर करना चाहते हैं जो आपकी ऑख का तारा है।

---

[54] Translation of the proverb in English “Rich treasures are often found inside a rough earthen jar.”

पिता जी ओ बेरहम पिता जी। काश मेरा पालना ही मेरी मौत का बिस्तर बन गया होता तो मैं कम से कम में यह दिन देखने के लिये तो ज़िन्दा नहीं रहती।"

पौर्ज़ीला कुछ और कहने जा रही थी कि राजा गुस्से से चिल्लाया — "अपने गुस्से को रोको बेटी। कभी कभी सूरत शक्ल धोखा दे जाती है। क्या किसी लड़की के लिये यह ठीक है कि वह अपने पिता को सिखाये। अपने आपको शान्त करो मैं कहता हूँ कि अब चुप रहो। अगर मेरे ये हाथ तुम्हारे ऊपर उठ गये तो तुम्हारे शरीर में तुम्हारी कोई हड्डी पसली नहीं बचेगी।

पौर्ज़ीला यह तो बताओ कि कोई बच्चा कितना समय लेता है मेरी इच्छा के सामने खड़े होने के लिये। इसलिये जाओ जल्दी करो। उसका हाथ पकड़ो और उसके साथ उसके घर चली जाओ। मैं इस चेहरे को अब और ज़्यादा देर तक नहीं देख सकता।"

बेचारी पौर्ज़ीला ने देखा कि वह तो अब इस जाल में फँस गयी है। सो वह ऐसी शक्ल लिये जैसी किसी को मौत की सजा मिल गयी हो और उसकी गर्दन कुल्हाड़ी और पत्थर के बीच में रखी हो वहाँ से चल दी। उसने ओगरे का हाथ पकड़ा। ओगरे भी उसको बिना उसकी दासियों के घसीटता हुआ जंगल की तरफ ले चला।

वहाँ वह उसे पेड़ों के बने एक महल में ले गया जहाँ सूरज भी उसको नहीं देख सकता था। वहाँ टहनियाँ पत्थरों से टकरा टकरा कर अँधेरे में बुदबुदाती रहती थीं।

जंगली जानवर वहाँ बिना कोई टैक्स दिये चारों तरफ घूमते रहते थे। वे कहीं भी किसी भी झाड़ी में बेखटके पहुँच जाते थे जहाँ कोई आदमी कभी नहीं जाता था जब तक कि वह खो नहीं गया हो।

ऐसी जगह पर जो एक बिना साफ की हुई चिमनी की तरह से काली थी ओगरे का घर था। वह चारों तरफ से उन आदमियों की हड्डियों से सजा हुआ था जिनको उसने खा लिया था।

ज़रा सोचो यह सब देख कर तो उस लड़की बेचारी का क्या हाल हुआ होगा। पर यह तो उसके मुकाबले में कुछ भी नहीं था जो अभी उसके सामने और आने वाला था।

शाम के खाने से पहले उसने मटर खायीं फिर शाम के खाने के बाद उसने भुनी हुई बीन्स खायीं। उसके बाद ओगरे शिकार के लिये चला गया। जब वह शिकार से लौटा तो उसके साथ बहुत सारे आदमी थे जो उसने मारे थे।

आ कर बोला — "प्रिय पत्नी। अब तुम मुझसे यह शिकायत नहीं कर सकतीं कि मैं तुम्हारी ठीक से परवाह नहीं करता। देखो मैं कितना सारा बढ़िया बढ़िया खाना ले कर आया हूँ। इसे लो और खुशियाँ मनाओ और मुझे बहुत सारा प्यार करो। क्योंकि अगर मैंने तुम्हें खाने की कमी महसूस होने दी तो आसमान गिर जायेगा।"

बेचारी पौर्ज़ीला यह भयानक दृश्य देख कर तो हैरान रह गयी। उसने उधर से अपना मुँह फेर लिया।

ओगरे ने यह देखा तो ज़ोर से चिल्ला कर बोला — "ओह यह तो सूअर के आगे मिठाई डालने जैसा हो गया। कोई बात नहीं कल सुबह तक धीरज रखो। कल मुझे एक जंगली सूअर के शिकार के लिये बुलाया गया है तो मैं कल तुम्हारे लिये कुछ जंगली सूअर ले कर आऊँगा। फिर हम लोग अपने सम्बन्धियों के साथ एक बड़ी सी दावत खायेंगे और अपनी शादी का जश्न मनायेंगे।"

ऐसा कह कर वह जंगल चला गया। पौर्ज़ीला एक खिड़की में खड़े हो कर रोने लगी।

इत्तफाक से एक बुढ़िया उधर से गुजर रही थी जो बहुत भूखी थी से उसने वहाँ से कुछ खाना माँगा तो पौर्ज़ीला बोली — "ओ मेरी अच्छी स्त्री। काश तुम जानतीं कि मैं एक ओगरे के पास कैद हूँ। वह मेरे लिये कुछ आदमी लोग ले कर आता है जो वह मारता है। मैं एक राजा की बेटी होते हुए भी अपनी ज़िन्दगी का सबसे खराब समय जी रही हूँ। हालाँकि मेरा लालन पालन तो बड़े ऐशो आराम में हुआ है।"

यह कह कर वह उन बच्चों की तरह से ज़ोर ज़ोर से रोने लगी जिनके मुँह से उनकी रोटी छीन ली गयी हो। उसकी यह हालत देख सुन कर वह बुढ़िया को उसके ऊपर दया आ गयी।

उसने पौर्ज़ीला से कहा — "धीरज मत खो बेटी। अपना दिल खुश रख। रो रो कर अपनी सुन्दरता को मत बिगाड़ क्योंकि तुझे अच्छी किस्मत मिल गयी है। मैं तेरी हर तरीके से सहायता करूँगी।

सुन मेरे सात बेटे हैं जो सात बड़े साइज़ के आदमी[55] हैं – मासे, नार्दो, कोला, मिक्को, पैत्रूलो, एस्काडियो और सीकोन।[56] जिनके पास बहुत गुण यानी ताकतें हैं। खास कर मासे हर बार जब भी वह जमीन से कान लगाता है तो उसे **30–30** मील तक के चारों तरफ का सब सुनायी दे जाता है। नार्दो जब अपने हाथ धोता है तब वह बहुत सारे साबुन के झाग बना सकता है।

कोला जब भी अपने हाथों से कोई छोटा सा लोहे का टुकड़ा भी जमीन पर फेंकता है तो वहॉ तेज़ रेज़र का एक जंगल उग आता है। जब मिक्को कोई छोटी सी लकड़ी की डंडी फेंकता है तो वहॉ बहुत ही घना उलझा हुआ जंगल बन जाता है।

अगर पैत्रूलो एक बूॅद पानी जमीन पर फेंक दे तो वहॉ बहुत बड़ी नदी बन जाती है। और जब एस्काडियो चाहता है कि कोई मजबूत मीनार खड़ी हो जाये तो उसको केवल एक छोटा सा पत्थर का टुकड़ा फेंकना होता है।

और सीकोन तो अपनी कमान से इतना सीधा निशाना लगाता है कि वह एक मील दूर किसी मुर्गी की ऑख भी भेद सकता है।

मैं अपने बेटों की सहायता से जो बहुत ही नम्र और दोस्ती का व्यवहार करने वाले हैं और जो सब तुम पर दया करेंगे तुमको इस ओगरे के चंगुल से आजाद करवाने की कोशिश करती हूॅ।"

---

[55] Translated for the word "Giants"

[56] Mase, Nardo, Cola, Micco, Petrullo, Ascaddeo, and Ceccone – these seven giants are the seven sons of the old woman.

पौज़्ज़ीला बोली — “अभी के सिवाय और कोई समय ज़्यादा अच्छा नहीं है क्योंकि मेरा वह नीच पति अभी बाहर गया हुआ है और शाम तक वापस नहीं आयेगा। हमारे पास बहुत समय है यहाँ से निकलने का और भागने का।”

बुढ़िया बोली — “क्योंकि मैं यहाँ से बहुत दूर रहती हूँ इसलिये यह काम आज की शाम तो नहीं हो सकता। पर हाँ मैं तुमसे वायदा करती हूँ कि कल सवेरे मैं और मेरे सब बेटे यहाँ आयेंगे और तुमको इस मुश्किल से निकालने में सहायता करेंगे।”

ऐसा कह कर बुढ़िया वहाँ से चली गयी और पौज़्ज़ीला भी शान्ति से सोने चली गयी। वह रात भर गहरी नींद सोयी।

पर जैसे ही सुबह पंछी बोलने लगे तो सूरज की बड़ी उम्र हो लो वह बुढ़िया अपने सातों बेटों के साथ वहाँ थी। उन सबने पौज़्ज़ीला को अपने बीच में लिया और उसको ले कर शहर की तरफ ले चले।

पर वे अभी आधा मील भी नहीं गये होंगे कि मासे ने अपना कान धरती से लगाया और सुना तो चिल्लाया — “सँभाल कर। वह लोमड़ा आ रहा है। ओगरे घर वापस आ गया है। उसको पता चल गया है कि उसकी पत्नी घर में नहीं है। सो वह अपनी टोपी अपनी बगल में दबा कर जल्दी से घर से निकल रहा है।”

जैसे ही नार्दो ने यह सुना तो उसने अपने हाथ धो लिये जिससे साबुन के झागों का एक बड़ा समुद्र बन गया। और जब ओगरे

आया और उसने झागों का समुद्र सामने देखा तो वह घर भागा और जल्दी से घर से भूसा ले कर आया और उसे नीचे डाल डाल कर उस पर चलता रहा जब तक कि वह उसको पार नहीं कर गया।

उसके बाद मासे ने फिर से अपने कान धरती पर लगा कर सुनने की कोशिश की तो चिल्लाया — "साथियो वह फिर आ रहा है।"

यह सुन कर कोला ने एक लोहे का टुकड़ा जमीन पर फेंक दिया और तुरन्त ही वहाँ तेज़ धार वाले रेज़र्स का एक जंगल उग आया। जब ओगरे ने यह देखा तो वह फिर घर भागा गया। उसने अपने आपको लोहे में लपेटा और तब कहीं जा कर वह उस भयानक रेज़र के जंगल को पार कर सका।

मासे ने फिर से अपने कान धरती से लगाये और सुन कर चिल्लाया — "बाँहों तक बाँहों तक। वह अब इतनी तेज़ चाल से आ रहा है जैसे वह उड़ कर आ रहा हो।"

मिक्को अपनी डंडी के साथ तैयार था। उसने अपनी डंडी फेंक कर अपने और उसके बीच में एक घना जंगल खड़ा कर दिया। अब यह घना जंगल तो पार नहीं किया जा सकता था।

जब ओगरे उसके पास आया तो उसने अपना "करारा"[57] चाकू अपनी कमर में बाँध लिया। उसके इस चाकू के फल उसके बाँये और दाँये दोनों ओर थे। वह उनको इस तरह से बाँध कर जो उड़ा

---

[57] Karrara

तो उसके दोनों तरफ के पेड़ कट कट कर गिरने लगे और वह उसमें से सुरक्षित रूप से निकल आया।

मासे ने फिर धरती पर कान लगा कर सुना तो उसे ओगरे के पैरों की आहट फिर से सुनायी दी। जब पैत्रूलो ने यह सुना तो उसने एक छोटे से स्रोत से मुट्ठी में पानी लिया और धरती पर डाल दिया। तुरन्त ही वहाँ एक बहुत चौड़ी नदी बहने लगी।

जब ओगरे ने नयी अड़चन देखी तो उसने सोचा कि वह जल्दी से कुछ नहीं कर सकता तो वह तुरन्त ही अपने सारे कपड़े उतार कर नंगा हो कर और उन कपड़ों को अपने सिर पर रख उस नदी में तैरने लगा। और दूसरी पार आ गया।

मासे ने एक बार फिर धरती से अपने कान लगाये और फिर एक बार सुनने की कोशिश की तो वह फिर चिल्लाया — "ओगरे हमारे पीछे पीछे आ रहा है और इस बार मामला ज़्यादा खराब है। मुझे ओगरे की एड़ी की आवाज साफ साफ सुनायी दे रही है। हम लोगों को अपना ख्याल रखना चहिये नहीं तो हम सब गये।"

ऐस्कैडियो बोला — "चिन्ता न करो मैं इस बदसूरत को अभी ठीक किये देता हूँ।"

यह कह कर उसने कुछ छोटे छोटे पत्थर उठाये और उनको धरती पर डाल दिया। तुरन्त ही वहाँ एक बहुत ऊँची टावर खड़ी हो गयी। वे सब लोग शरण लेने के लिये उसमें घुस गये और उसका दरवाजा बन्द कर लिया।
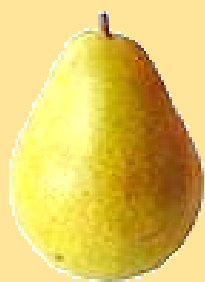
जब ओगरे आया तो उसने देखा कि वे सब तो बहुत ज़्यादा सुरक्षित जगह में चले गये हैं तो वह फिर से घर भागा गया और शराब उतारने वाली एक सीढ़ी ले आया।

मासे ने फिर से अपने कान धरती से लगाये तो सुना कि ओगरे फिर से भागा चला आ रहा है तो चिल्लाया — "अब तो हमारी सारी मोमबत्ती जल गयी बस केवल नीचे का हिस्सा रह गया है। मेरा तो दिल धड़क रहा है मुझे लगता है कि बस आज हमारा आखिरी दिन है।"

सीकोन बोला — "तुम तो बहुत ही कायर हो। तुम सब मेरे ऊपर भरोसा रखो मैंने उसके सिर में गेंद जरूर मारनी है।"

जब सीकोन यह कह रहा था तब ओगरे अपनी सीढ़ी को टावर से लगा कर उसके ऊपर चढ़ना शुरू कर दिया था। सीको ने उस पर निशाना लगाया और उसकी एक ऑख फोड़ दी।

दर्द के मारे वह जमीन पर ऐसे गिर पड़ा जैसे कोई नाशपाती जमीन पर गिर पड़ी हो। तब वह टावर से बाहर गया और अपने बड़े चाकू से जो वह हमेशा अपने पास रखता था ओगरे का सिर काट लिया जैसे वह कोई चीज़[58] हो।

---

[58] Cheese is the processed Paneer of Western world.

उसके बाद वे उस सिर को राजा के पास ले गये तो राजा ने अपनी बेटी को पा कर बहुत ख़ुशियाँ मनायीं। वह ओगरे को अपनी बेटी दे कर हजारों बार पछता चुका था।

उसके कुछ दिन बाद पौर्ज़ीला की शादी एक सुन्दर राजकुमार से कर दी गयी। और बुढ़िया और उसके सातों बेटों को जिन्होंने राजकुमारी को ओगरे से छुड़ाने में सहायता की थी राजा ने बहुत सारा इनाम दिया।

# 6 1–6 सैनैरैन्तोला[59]

बुराइयों के सागर में ही ईर्ष्या ही एक ऐसी बुराई है जो उसकी गहराइयों में से भी ऊपर उठ आती है। और जब वह यह आशा कर रही होती है कि कोई और डूबेगा तो या तो वह खुद डूब जाती है या फिर किसी पत्थर से टकरा जाती है। ऐसा ही कुछ इन लड़कियों के साथ हुआ जिनकी कहानी मैं अब आपको सुनाती हूँ।

एक बार की बात है कि एक राजकुमार रहा करता था जिसकी पत्नी मर गयी थी। उसके एक बेटी थी। वह उसको इतना प्यार करता था कि उसको अलावा और उसको कुछ दिखायी ही नहीं देता था। वह हमेशा उसकी नजर से ही देखता था।

उसने उसके लिये एक आया रख दी थी जो उसे चेन का काम करना और बुनाई सिखाया करती थी। वह उसको इतना प्यार करती थी कि बस कहा नहीं जा सकता।

पर लड़की बहुत अकेलापन महसूस करती। वह उस आया से कई बार कह चुकी थी कि काश वह उसकी माँ होती। वह उससे कितना प्यार करती है। और यह उसने इतनी ज़्यादा बार कहा कि उस आया के सिर में यह कीड़ा घुस गया और उसने उससे कहा — “अगर तुम मुझ जैसी बेवकूफ की बात मानती रहोगी तो मैं एक दिन तुम्हारी माँ जरूर बनूँगी। और तुम मुझे इतनी प्यारी हो जाओगी जैसे मेरी आँखों का तारा।”

---

[59] Cenerentola. (Tale No 6) Day 1, Tale No 6

वह कुछ और भी कहने जा रही थी कि राजकुमारी ज़िज़ोला[60] ने कहा — "माफ करना अगर मैं तुम्हें बीच में टोक रही हूँ। मुझे मालूम है कि तुम मेरा भला चाहती हो इसलिये चुप हो जाओ और मुझे बताओ कि मुझे क्या करना है। तुम मुझे बताती जाओ और मैं करती जाऊँगी।"

तब आया बोली — "तब कान खोल कर मेरी बात सुनो। जब मैं तुम्हारी माँ बन जाऊँगी तब तुम्हें इतनी सफेद रोटी मिलेगी जितने कि ये फूल हैं। तुमको तो मालूम है कि तुम्हारे पिता तुमको खुश करने के लिये कितना भी नकली पैसा छाप सकते हैं।

तो जब वह तुम्हें प्यार कर रहे हों तब तुम उनसे विनती करना कि वे मुझसे शादी कर लें और मुझे अपनी रानी बना लें। तब भगवान तुम्हारा भला करे तब तुम मेरी ज़िन्दगी की रानी बन जाओगी।"

जब ज़िज़ोला ने यह सुना तो उसके बाद का हर घंटा उसको हजारों साल के बराबर लगने लगा जब तक उसने अपनी आया का कहा नहीं कर दिया।

जैसे ही उसकी माँ का शोक का समय खत्म हो गया वह अपने पिता के मूड पर ध्यान रखने लगी। ताकि वह उससे अपनी आया से शादी करने के लिये कह सके।

[60] Princess Zezolla

पहले तो राजकुमार ने इसको हॅसी में टाल दिया पर ज़िज़ोला तो बराबर उससे कहती ही रही। आखिर उसने उससे इतना कहा कि उसे उसकी विनती माननी ही पड़ी और उसने आया से शादी कर ली। शादी की दावतें कई दिनों तक चलीं।

जब नौजवान लोग नाच रहे थे और ज़िज़ोला अपने घर की खिड़की पर खड़ी हुई थी तो एक फाख्ता उड़ती हुई आयी और एक दीवार पर आ कर बैठ गयी।

उसने राजकुमारी से कहा — "जब भी तुम्हें किसी चीज़ की जरूरत पड़े तो सैराडीन के टापू की परियों के फाख्ता[61] को बता देना। तुम्हारी इच्छा तुरन्त ही पूरी हो जायेगी।"

पॉच–छह दिनों तक तो ज़िज़ोला को उसकी सौतेली मॉ बहुत प्यार करती रही। वह उसको बहुत देर तक सहलाती रहती उसके पास बैठी रहती खाने की मेज पर सबसे अच्छी सीट पर बिठाती उसकी पसन्द का खाना खिलाती उसके पसन्द के कपड़े पहनाती।

पर यह सब बहुत दिनों तक नहीं चला। कुछ दिन में ही वह अपनी अच्छी सेवाऐं तो भूल गयी और अपनी छह बेटियों को सामने लाने लगी। उसने यह बात पहले किसी को नहीं बतायी थी कि वह विधवा थी और उसके छह लड़कियॉ हैं।

---

[61] Dove of Fairies in the Island of Saradine

वह राजकुमार के सामने अपनी बेटियों की इतनी तारीफ करती कि उसकी अपनी बेटियों को राजा से ज़्यादा प्यार मिलने लगा। राजा अपनी बेटी के बारे में बिल्कुल भूलता चला गया।

उस बेचारी लड़की के साथ मामला इतना बिगड़ा कि अगर आज उसके लिये बुरा था तो अगला दिन उससे भी बुरा था। बात यहाँ तक बढ़ी कि अब उसको अपना कमरा छोड़ कर रसोईघर में आना पड़ा। शाही छतरी के नीचे से अँगीठी के पास। शानदार सोने और चाँदी के कपड़ों से फटे पुराने कपड़ों में। ऊँची गद्दी से नीचे गड्ढे में।

उसकी केवल यह हालत ही नहीं बदली थी बल्कि उसका नाम भी बदल गया था। अब लोग उसे ज़िज़ोला की बजाय सैनैरैन्तोला कह कर बुलाने लगे थे।

अब ऐसा हुआ कि राजकुमार को कई बार अपने देश के काम से सैराडीन जाना पड़ता था। सो एक बार जब उसका ऐसा मौका आया तो उसने अपनी छहों बेटियों को बुला कर उनसे पूछा कि वह वापसी पर उनके लिये क्या क्या ले कर आये।

एक ने कहा कि वह उसके लिये शानदार पोशाकें ले कर आये। दूसरी ने कहा कि वह उसके लिये सिर पर पहनने के लिये कोई गहना ले कर आये। तीसरी ने कहा कि वह उसके लिये रूज ले कर आये। चौथी ने कहा कि वह उसके लिये छोटी छोटी चीज़ें ले कर आये।

आखिर राजकुमार ने अपनी बेटी से इस तरह से पूछा जैसे वह उससे मजाक कर रहा हो कि वह उसके लिये क्या ले कर आये। उसने जवाब दिया — "कुछ नहीं पिता जी। बस आप परियों की फाख्ता को मेरे बारे में बताना और उससे कहना कि वह मेरे लिये कुछ भी भेज दे।

और अगर आप मेरा यह काम भूल जायें तो आप न आगे जा सकें और न पीछे ही जा सकें इसलिये जो मैंने आपसे कहा है उसे आप याद रखें। आपके साथ ऐसा ही होगा जैसा कि मैंने आपसे कहा है।"

इसके बाद राजकुमार सैराडीनिया चला गया जा कर वहाँ अपना काम किया। उसने वे सब चीज़ें खरीदीं जो उसकी सौतेली बेटियों ने मँगवायीं थीं। पर बेचारी ज़िज़ोला तो उसके दिमाग में थी ही नहीं।

यह सब सामान ले कर वह घर लौटने के लिये जहाज़ पर चढ़ा पर उसका जहाज़ तो बन्दरगाह से बाहर ही न निकले। वह तो वहाँ ऐसा जम गया जैसे उसे समुद्र की किसी लैम्प्रे[62] ने पकड़ लिया हो।

जहाज़ का कप्तान तो बिल्कुल निराश ही हो चुका था। वह थक गया था सो वह सोने चला गया। सपने में उसने एक परी देखी जिसने उससे कहा — "क्या तुम जानना चाहते हो कि तुम्हारा जहाज़ बन्दरगाह से बाहर क्यों नहीं निकाल पा रहे? यह सब तुम्हारे जहाज़

---

[62] Sea Lemprey is kind of fish which is a parasite and lives upon the blood and other body juices of other fishes.

पर चढ़ी एक सवारी एक राजकुमार की वजह से हो रहा है जो अपनी कई बेटियों से किये गये वायदों में से एक बेटी से किया गया वायदा भूल गया है।"

उसके बाद कप्तान की ऑख खुल गयी तो वह यह बात बताने के लिये राजकुमार के पास भागा गया। राजकुमार यह सुन कर बहुत शर्मिन्दा हुआ और वह परियों के घर चल दिया। राजा ने अपनी बेटी के बारे में उनको बताने के बाद उनसे उसके लिये कुछ मॉगा।

लो उस घर में से तो एक बहुत सुन्दर लड़की निकल आयी। उसने उससे कहा कि वह उसकी बेटी की बहुत कृतज्ञ है जो उसने उसको याद रखा। उसने राजकुमार से कहा कि वह उससे जा कर कहे कि वह हमेशा खुश रहा करे। उसने उसके अच्छे दिल की प्रशंसा भी की।"

फिर उसने राजकुमार को एक खजूर का पेड़, एक हल, एक सोने की बालटी और एक रेशमी रूमाल दिया और कहा कि "सोने का हल चलाने के लिये था और सोने की बालटी पेड़ को पानी देने के लिये।"

राजकुमार यह सुन्दर भेंट देख कर बहुत प्रभावित हुआ। वह उसे ले कर वहॉ से चल दिया। घर पहुॅच कर उसने अपनी सौतेली बेटियों को उनकी मॅगवायीं चीज़ें दे दीं। अपनी बेटी को उसने सबसे अन्त में उसकी भेंट दी जो उसे परियों ने भेजी थी।

ज़िज़ोला ने हॅसी हॅसी में वह पेड़ ले कर एक सुन्दर से गमले में लगा दिया। उसके चारों तरफ की मिट्टी को खोदा बालटी से पानी दिया और रेशमी रूमाल से उसकी पत्तियों को पोंछा।

कुछ ही दिनों में वह एक स्त्री के बराबर लम्बा हो गया। उसमें से एक परी निकल कर आयी। उसने ज़िज़ोला से कहा — "तुम्हें क्या चाहिये?"

ज़िज़ोला बोली — "मैं अपनी बहिनों को बताये बिना कुछ देर घर से बाहर रहना चाहती हॅू।"

परी बोली — "जब भी तुम्हें ऐसा करना हो तब तुम इस पेड़ के पास आना और यह गाना —

मेरे छोटे खजूर के पेड़ मेरे सोने के पेड़ सोने के हल से मैंने तुझे जोता है
सोने की बालटी से मैंने तुझे पानी दिया है रेशमी रूमाल से मैंने तुझे पोंछा है
अब तू नंगा हो जा और मुझे जल्दी से कपड़े पहना

और जब तुम्हें वे कपड़े उतारने हों तो उसकी आखिरी लाइन इस तरह से बोलना —

अब तू मेरे कपड़े उतार और तू पहन

जब दावत का समय आया तो सौतेली मॉ की बेटियॉ तो बहुत सुन्दर सुन्दर कपड़े पहन कर आयीं – रिबन और फूल लगाये हुए जूते और स्लिपर पहने हुए, खुशबू और घंटिया लगाये हुए, गुलाब और पोज़ी लगाये हुए।

यह देख कर ज़िज़ोला अपने गमले के पास भागी गयी और वही शब्द दोहरा दिये जो परी ने उसे बताये थे। शब्द खत्म होते ही उसने देखा कि वह तो एक रानी तरह से एक बग्घी में बैठी है। बारह नौकर उसके साथ हैं जो सभी बहुत अच्छे कपड़े पहने हुए थे। इस तरह सज धज कर के वह नाच में पहुँची। उस अनजानी सुन्दरी से उसकी सारी बहिनें जलने लगीं।

नौजवान राजा भी वहाँ था। उसने जैसे ही ज़िज़ोला को देखा तो उस पर तो जैसे किसी ने जादू डाल दिया। वह तो खड़े का खड़ा रह गया। उसने अपने एक खास नौकर से कहा कि वह यह पता लगाये कि वह लड़की कौन थी और कहाँ रहती थी।

सो नौकर ने उसका पीछा किया। ज़िज़ोला ने जब यह चाल देखी तो उसने कुछ सोने के सिक्के पीछे फेंक दिये। ये सोने के सिक्के उसने खजूर के पेड़ से इसी उद्देश्य से लिये थे।

तब नौकर ने अपनी लालटेन जलायी और सोने के सिक्के देखे तो वह बग्घी का पीछा करना तो भूल गया और सिक्के बटोरने में लग गया। इतनी देर में वह अपने घर वापस आ गयी और अपनी नीच बहिनों के आने से पहले पहले उसने जैसे परी ने उसे बताया था उसी तरीके से अपने कपड़े भी बदल लिये।

पर राजा अपने नौकर की इस बात पर बहुत नाराज था। उसने उसे चेतावनी दी कि अगली बार वह उसका पता लगाना न भूले कि वह सुन्दर लड़की कौन थी और कहाँ रहती थी।

जल्दी ही एक और दावत आयी तो फिर से उसकी सौतेली बहिनें खूब सज धज कर दावत में गयीं और बेचारी ज़िज़ोला को घर में अँगीठी के पास ही छोड़ गयीं।

वह फिर से अपने खजूर के पेड़ के पास गयी और वे शब्द कहे तो कई लड़कियाँ प्रगट हो गयीं। एक के हाथ में शीशा था तो दूसरी के हाथ में गुलाबजल। तीसरी के हाथ में बालों को घुँघराले बनाने की मशीन थी तो चौथी के हाथ में कंघी थी। किसी के पास पिन थे तो किसी के पास पोशाक।

उन सबने मिल कर उसको सूरज की तरह सजाया और एक बग्घी में बिठाया जिसे छह घोड़े खींच रहे थे। उसमें कोचवान और नौकर भी थे। जैसे ही वह सजी धजी नाच के कमरे में पहुँची तो उसकी बहिनों का दिल तो आश्चर्य से भर उठा। और राजा तो उसके प्यार में पड़ गया।

नाच के बाद जब ज़िज़ोला घर वापस गयी तो राजा का वह खास नौकर भी उसके पीछे लग लिया। पकड़े जाने के डर से उसने एक मुट्ठी भर कर मोती और जवाहरात नीचे जमीन पर फेंक दिये। उसने देखा कि यह तो छोड़ने की चीज़ नहीं है तो वह उन्हें उठाने में लग गया और ज़िज़ोला अपने घर सुरक्षित पहुँच गयी।

जाते ही वह अपने खजूर के पेड़ के पास पहुँची और बहिनों के आने से पहले ही अपने कपड़े बदल लिये।

उधर नौकर महल पहुँचा तो राजा उसे देख कर फिर बहुत नाराज हुआ वह जोर से चीखा — "अगर तुमने मुझे यह न बताया कि वह लड़की कौन है और कहाँ रहती है तो मैं अपने पूर्वजों की कसम खा कर कहता हूँ कि मैं तुम्हें इतना मारूँगा इतना मारूँगा जैसा कभी किसी ने किसी को नहीं मारा होगा – इतनी बार जितने बाल तुम्हारी दाढ़ी में हैं।"

जब अगली बार दावत हुई और ज़िज़ोला की बहिनें घर से दावत में चली गयीं तो ज़िज़ोला एक बार फिर अपने खजूर के पेड़ के पास गयी और अपने जादू के शब्द दोहराये तो तुरन्त ही उसने अपने आपको सजा धजा और एक सोने की बग्घी में बैठा पाया। कई नौकर उसके साथ थे और वह एक रानी लग रही थी।

पर इस बार जब वह नाच के कमरे में से बाहर आ रही थी तो राजा का नौकर उसकी बग्घी के पास ही खड़ा था। ज़िज़ोला ने यह देख कर यह तो वही आदमी था जो हर बार उसका पीछा कर रहा था अपने कोचमैन से कहा — "कोचमैन जल्दी चलो।"

उसने भी ज़िजोला के कहने पर गाड़ी जल्दी से हाँक दी। इस हबड़ा तबड़ी में उसका एक जूता उसके पैर से निकल गया। इतना सुन्दर जूता पहले कभी नहीं देखा गया था। नौकर उसकी बग्घी को तो नहीं पकड़ सका क्योंकि वह तो चिड़िया की तरह उड़ गयी थी। वह उस जूते को ही उठा कर ले आया और राजा को आ कर सारा हाल बताया।

राजा ने वह जूता अपने हाथ में लिया और बोला — "अगर किसी मकान का बेसमैन्ट ऐसा है तो वह मकान कैसा होगा। तुम अब तक एक गोरे पॉव की जेल में थे अब तुम एक दुखी दिल की खुशी हो।"

तब उसने एक फरमान जारी किया कि देश की सारी स्त्रियॉ एक दावत में आयें जिसमें बहुत तरह की स्वादिष्ट पाई और पेस्ट्री होंगी। मैकैरोनी होगी मिठाई होगी। जो इतनी सारी होगी जो एक फौज को खिलायी जा सके।

जव सब स्त्रियॉ इकट्ठी हो गयीं – कुलीन और बेकुलीन गरीब और अमीर सुन्दर और बदसूरत तब राजा ने हर स्त्री के पैर में वह जूता पहना कर देखा कि वह किसके पैर में फिट बैठता है। उसने सोचा कि इस तरह से वह उस लड़की को ढूॅढने में सफल हो जायेगा जो उसे चाहिये थी।

इसके लिये उसने पहले यह देखा कि सारी स्त्रियॉ वहॉ आ गयीं या नहीं। देख कर उसने बताया कि एक लड़की वहॉ नहीं आयी है। पर वह तो हमेशा ही ॲगीठी के पास बैठी रहती है और इतनी सादी सी है कि वह तो आपके साथ मेज पर बैठने लायक नहीं है।"

"लेकिन सबसे पहले उसको यहॉ आना चाहिये क्योंकि ऐसा मैं चाहता हूॅ।"

सो अगले दिन सब स्त्रियाँ फिर से इकट्ठी हुईं। अपनी नीच छहों सौतेली बहिनों के साथ साथ ज़िलोला भी आयी। जब राजा ने उसे देखा तो एक शक उसके मन में उठा पर उसने कुछ कहा नहीं।

खाना खाने के बाद बारी आयी स्लिपर को पैर में पहन कर देखने की। उसने जब ज़िजोला के पैर में जूता पहना कर देखना चाहा तो वह तो उसके पैर में अपने आप ही चला गया। जैसे लोहा चुम्बक की तरफ दौड़ता है।

यह देख कर तो राजा उसकी तरफ दौड़ा और उसको अपनी बाँहों में भर लिया फिर उसको राजगद्दी पर बिठा कर उसके सिर पर ताज रख दिया। य्ह सब देख कर सबने उसको रानी जान कर उसको सिर झुकाया।

जब उसकी नीच बहिनों ने देखा तो उनके दिल गुस्से और जहर से भर गये। उनको इतना भी धीरज नहीं था कि वे उस चीज़ को देखतीं जिससे उनको इतनी नफरत थी। वे एड़ी के बल चल कर चुपचाप वहाँ से चली गयीं।

वे घर अपनी माँ के पास पहुँचीं और उससे कहने लगीं कि "वह पागल होता है जो अपने सितारों से लड़ता है।"

# 7 1–7 सौदागर[63]

मुश्किलें उस झाड़ू की तरह होती हैं जो इन्सान की अच्छी किस्मत का रास्ता साफ करने के लिये होती हैं जिनके बारे में वह सोच भी नहीं सकता। बहुत सारे लोग बारिश को बुरा भला कहते हैं जो उनके सिर पर गिरती है पर वे यह नहीं जानते कि वह तो उन्हीं की भूख मिटाने आती है। कुछ ऐसा ही इस नौजवान के बारे में कहा जा सकता है जिसकी कहानी मैं अभी आप सबको सुनाने जा रही हूँ।

कुछ ऐसा कहा जाता है कि एक बार की बात है कि एक बहुत ही अमीर सौदागर था जिसका नाम ऐन्टोनीलो[64] था। उसका एक बेटा था जिसका नाम था चीन्ज़ो[65]।

अब कुछ ऐसा हुआ कि एक दिन चीन्ज़ो नैपिल्स के राजा[66] के बेटे के साथ समुद्र के किनारे बैठा हुआ समुद्र में पत्थर फेंक रहा था। इत्तफाक ऐसा हुआ कि वह उस पत्थर से राजकुमार के सिर में चोट मार बैठा।

जब यह बात उसने अपने पिता ऐन्टोनीलो से जा कर कही तो उसके परिणाम के बारे में सोच कर वह तो गुस्से से भर गया और अपने बेटे को बहुत बुरा बुरा कहा।

पर चीन्ज़ो बोला — "सर मैंने सुना है कि घर के डाक्टर से अदालत ज़्यादा अच्छी होती है। क्या यह और ज़्यादा बुरा नहीं

---

[63] The Merchant. (Tale No 7) Day 1, Tale No 7

[64] Antoniello – name of the merchant

[65] Cienzo – name of the son of the merchant

[66] King of Naples – Naples is a port town in Italy on its Souther Western shore.

होता अगर उसने मेरा सिर तोड़ दिया होता। यह वही था जिसने मुझे उकसाया।

हम लोग तो बच्चे हैं और झगड़े के दो पहलू होते हैं। और फिर यह तो पहली गलती है और राजा तो फिर एक समझदार राजा है। पर अब जो होता है होने दीजिये। वह मुझे क्या नुकसान पहुँचा सकते हैं। यह दुनियाँ सबका घर है। और फिर जो कोई डरता है तो उसको तो सिपाही बन जाना चाहिये।"

पर ऐन्टोनीलो उसकी किसी बहस को सुनना नहीं चाहता था। उसको पूरा यकीन था कि राजा उसकी इस गलती के लिये उसको जरूर मरवा डालेगा।

सो वह उससे बोला — "अब तुम अपनी ज़िन्दगी को खतरे में डाल कर यहाँ मत खड़े रहो। यहाँ से तुरन्त ही चले जाओ ताकि किसी को इस बात का पता न चले चाहे वह नया हो या पुराना कि तुमने क्या किया है। एक चिड़िया जो झाड़ी में होती है वह पिंजरे की चिड़िया से ज़्यादा अच्छी होती है।

लो तुम ये पैसे लो और मेरी घुड़साल में से मेरे दो जादुई घोड़ों से एक घोड़ा ले लो और कुत्ता लो वह भी जादुई है और यहाँ मत मँडराओ। यह ज़्यादा अच्छा है कि तुम अपने पैरों पर खड़े हो बजाय इसके कि तुम किसी के सहारे खड़े हो।

अगर तुम अपना थैला ले कर यहाँ से जल्दी ही दफा नहीं हो जाते तो दुनियाँ का कोई सेन्ट तुम्हें नहीं बचा सकता।"

तब पिता का आशीर्वाद ले कर चीन्ज़ो घोड़े पर चढ़ा, जादुई कुत्ते को अपनी बगल में दबाया और शहर से बाहर निकल गया। ऑसू बहाता हुआ और आहें भरता हुआ वह शाम तक चलता रहा।

अब वह एक जंगल में आ गया था। सूरज भी नीचे की तरफ जाता जा रहा था। धरती पर कहीं धूप थी तो कहीं छॉह। वह इस शान्ति और धूप छॉह को देख रहा था। वहीं पास में एक पुराना मकान था जो एक मीनार के पास ही बना हुआ था।

उसने जा कर मीनार का दरवाजा खटखटाया पर उसके मालिक ने डाकुओं के डर से दरवाजा नहीं खोला तो उसे मीनार के पास वाले पुराने मकान में शरण लेनी पड़ी। उसने अपने घोड़े को बाहर मैदान में घास खाने के लिये निकाल दिया था और वह खुद वहॉ पड़े कुछ भूसे के ऊपर लेट गया।

उसने मुश्किल से ही अपनी ऑखें बन्द की थीं कि उसे कुत्ते के भौंकने की आवाज ने जगा दिया। साथ में उसने घर में कुछ चलने की भी आवाजें सुनी।

चीन्ज़ो बहादुर बच्चा था। उसने अपनी तलवार उठायी और ॲधेरे में ही उसे अपने आस पास चलाने लगा। पर फिर उसे लगा कि वह तो तलवार केवल हवा में चला रहा था उससे किसी को चोट नहीं लग रही थी तो वह करवट बदल कर सो गया।

कुछ मिनट बाद ही उसने महसूस किया कि कोई उसे उसके पैर पकड़ कर घसीट रहा है। अबकी बार उसने घूम कर अपना कटलस उठाने की कोशिश की और उसे उठा कर कूद कर खड़ा हो गया।

वह बोला — “हैलो। तुम अब कुछ ज़्यादा ही परेशान करने वाले होते जा रहे हो। पर अब यह खेल खेलना छोड़ो और मुझे भी उसका हिस्सा दो जो तुमने कमाया है।”

यह कहने के बाद उसने एक ज़ोर की हॅसी सुनी और उसके बाद एक खोखली सी आवाज बोली — “तुम यहॉ नीचे तो आओ मैं तुम्हें बताता हूॅ कि मैं कौन हूॅ।”

तब चीन्ज़ो हिम्मत करके बोला — “मैं अभी आता हूॅ।”

कह कर वह इधर उधर देखने लगा तो उसको एक सीढ़ी मिल गयी जो उसके जमीन के नीचे तहखाने तक जाती थी। सो वह उससे उतरा। नीचे जाते समय उसको एक जलता हुआ लैम्प दिखायी दे गया और उसमें दिखायी दीं तीन भूत जैसी शक्लें जो शोर मचा रही थीं — “ओह मेरे सुन्दर खजाने अब मुझे तुम्हें खोना पड़ेगा।”

जब चीन्ज़ो ने यह देखा तो उनके साथ के लिये वह भी रोने लगा। कुछ समय रोने के बाद और चॉद निकल आने के बाद उन तीनों शक्लों ने जो इतना शोर मचा रहे थे चीन्ज़ो से कहा — “लो

यह खजाना लो। यह तुम्हारे अकेले का ही है। पर इसका ख्याल रखना और इसकी ठीक से देखभाल करना।”

इतना कह कर वे गायब हो गये। चीन्ज़ो ने एक छेद से देखा कि अब तो दिन निकल आया है तो उसने ऊपर जाने की सोचा पर उसको कहीं सीढ़ी ही दिखायी नहीं दी। इस पर वह इतनी ज़ोर से चिल्लाया कि मीनार के मालिक की ऑख खुल गयी।

वह एक सीढ़ी ले कर आया और तब उनको एक बहुत बड़ा खजाना मिला। मीनार के मालिक ने उस खजाने का कुछ हिस्सा चीन्ज़ो को देना चाहा पर चीन्ज़ो ने मना कर दिया।

उसने अपना कुत्ता लिया और अपने घोड़े पर सवार हो कर वह फिर आगे चल दिया। कुछ देर बाद वह फिर एक जंगल में आ निकला। यह जंगल इतना ॲधेरा और घना था कि उसको देख कर ही शरीर में फुरफुरी उठती थी। वहीं बीच में एक नदी बहती थी उसने देखा कि उस नदी के किनारे पर एक स्त्री कुछ डाकुओं से घिरी हुई खड़ी थी।

जब उसने यह देखा तो उसने अपनी तलवार निकाली और उन सब डाकुओं को मार दिया। परी ने उसको धन्यवाद दिया और उसको अपने महल ले गयी ताकि वह उसको कुछ इनाम दे सके।

पर चीन्ज़ो बोला — “यह कोई बड़ी बात नहीं है। तुम्हारे बुलाने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद। किसी और समय मैं तुम्हारा

यह बुलावा स्वीकार करूँगा। अभी मुझे जल्दी है मेरा एक बहुत जरूरी काम है।"

यह कह कर उसने उससे विदा ली और आगे चला। बहुत दूर चलने के बाद वह एक राजा के महल के पास आ निकला। सारा महल मुँह लटकाये घूम रहा था।

जब चीन्ज़ो ने इस मुँह लटकाने की वजह जाननी चाही तो लोगों ने कहा कि इस देश में एक सात सिर वाला ड्रैगन आ गया है। इतना बड़ा राक्षस उन्होंने पहले कभी नहीं देखा।

उसके सिर पर मुर्गे की कलगी लगी है। उसका सिर बिल्ले के सिर जैसा है। उसकी ऑखों से आग निकलती है। उसका मुँह कुत्ते के मुँह जैसा है। उसके भालू के पंजे जैसे पंजे हैं। और उसकी सॉप जैसी पूँछ है।

यह ड्रैगन रोज एक लड़की को खाता है आज मैनेचैला[67] यानी हमारे राजा की बेटी की बारी है। इसी लिये महल में सब लोग रोते हुए घूम रहे हैं। क्योंकि राज्य की सबसे सुन्दर लड़की की किस्मत में इस भयानक राक्षस के द्वारा खाना जाना ही लिखा हुआ है।

चीन्ज़ो ने जब यह सुना तो वह एक तरफ को हट कर खड़ा हो गया क्योंकि उससी समय मैनचैला अपनी साथिनों और देश की और बहुत सारी स्त्रियों के साथ उसके पास से गुजर रही थी। वे सब

[67] Menechella – name of the Princess

अपने अपने हाथ मलती जा रही थीं। सब अपने अपने बाल नोचती जा रही थीं। और लड़की की बदकिस्मती को रोती जा रही थीं।

तब एक गुफा से ड्रैगन निकल कर आया। चीन्ज़ो ने जैसे ही उसको देखा उसने अपनी तलवार निकाल ली और एक पल में ही उसका सिर काट दिया।

पर ड्रैगन ने अपना सिर ले जा कर एक खास पौधे पर मला जो वहीं पास में उग रहा था और अचानक अपने धड़ से जा कर चिपक गया जैसे छिपकली अपनी पूँछ से जा कर चिपक जाती है।

यह देख कर चीन्ज़ी बोला — "जो हिम्मत नहीं करता वह जीतता नहीं।"

और अपने दाँत कस कर बन्द कर के उसके सातों सिर एक बार में ही काट दिये। वे सातों सिर उछल कर ऐसे जा पड़े जैसे कढ़ाई से मटर उछल उछल कर बाहर छिटक जाती है।

उसने उन सिरों की जीभें काट कर अपनी जेब में रख लीं और सिरों को एक एक मील दूर फेंक दिया ताकि वे फिर से एक साथ न जुड़ सकें। उसने मैनैचैला को महल वापस भेज दिया और खुद वह एक सराय में चला गया।

राजा ने जब अपनी बेटी को ज़िन्दा देखा तो वह तो बहुत खुश हो गया। और जिस तरीके से वह बची वह सुन कर तो बहुत ही खुश हो गया।

उसने तुरन्त ही एक फरमान निकाला कि जिसने भी ड्रैगन को मारा है उसके पास आये वह अपनी बेटी की शादी उससे करना चाहता है।

अब उस देश में एक बदमाश भी रहता था। उसने ड्रैगन के सिर इकट्ठे किये और उनको राजा के पास ले जा कर दिखा कर बोला कि "मैंने इस ड्रैगन को मारा है। मेरे ही हाथों ने उसे बचाया है। ये रहे उसके सिर जो यह साबित करते है कि उसको मैंने ही मारा है। सो अपना वायदा पूरा कीजिये। हर वायदा एक कर्ज होता है।"

जैसे ही राजा ने यह देखा और यह सुना तो उसने सिर का ताज उतार कर उस आदमी के सिर पर रख दिया। पर वह ऐसा लग रहा जैसे वह कोई चोर हो और उसको फॉसी लगने वाली हो।

इस फरमान की खबर भी सारे देश में फैल गयी। चीन्ज़ो ने भी यह खबर सुनी तो उसने सोचा "मैं तो बिल्कुल ही खरदिमाग निकला। मुझे तो एक खजाना मिल गया था अपनी बेवकूफी में मैंने उसको जाने दिया।

वह आदमी था जो मुझे आधा खजाना देने को तैयार था और मुझे उसकी को चिन्ता ही नहीं थी जैसे किसी जर्मन को ठंडे पानी की चिन्ता नहीं होती।

फिर एक परी मुझे अपने घर ले जाना चाह रही थी मैं वहॉ भी नहीं गया जैसे गधा संगीत की कोई इज़्ज़त नहीं करता।

और अब मुझे ताज बुला रहा है और मैं यहाँ हूँ कि एक गधे चोर को मेरा तुरप का कार्ड ले जाने दे रहा हूँ।"

यह कह कर उसने कलम उठाया और एक कागज पर लिखना शुरू किया —

"मेरी प्रिय स्त्रियों में रत्न मैनैचैला। शेर की आत्मा की कृपा से मैंने तुम्हारी जान बचायी। मैंने सुना है कि कोई दूसरा मेरी मेहनत से खेल रहा है। वह उस सेवा का इनाम ले रहा है जो मैंने की है।

तुम तो उस ड्रैगन के मारे जाने के समय वहाँ पर थीं। तुम तो राजा को बड़ी अच्छी तरह से सच का यकीन दिला सकती हो ताकि यह दूसरा आदमी उस इनाम को न ले जिसके लिये मैंने इतनी मुसीबत उठायी है।

क्योंकि यह आदमी तो तुम्हारी शाही शान को भी नष्ट करेगा। अन्त में बस मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैं तुम्हारे कोमल छोटे छोटे हाथ चूमना चाहता हूँ।

गमले की सराय से[68], रविवार।"

यह चिट्ठी लिख कर उसने एक चिपकी से बन्द की और अपने जादुई कुत्ते के मुँह में रख कर उससे कहा — "यहाँ से जल्दी से जल्दी भाग जा जितनी जल्दी तू भाग सकता हो और यह चिट्ठी जा कर राजा की बेटी को देना। और किसी को मत देना बस चाँद जैसे मुखड़े वाली राजकुमारी को ही देना।"

---

[68] Translated for the words "From the Inn of the Flower-pot"

कुत्ता उस चिट्ठी को ले कर तुरन्त भाग गया जैसे उड़ रहा हो। सीढ़ी से ऊपर जा कर उसको राजा मिला जो देश के हॅसोड़ की तारीफ कर रहा था।

जब उसने एक कुत्ते को अपने मुॅह में कोई कागज दबाये देखा तो उसने वह कागज अपने पास लाने के लिये कहा पर कुत्ता वह कागज किसी और को दे ही नहीं रहा था। वह सीधा मैनैचैला के पास गया और जा कर उसके हाथ में वह कागज दे दिया।

मैनैचैला अपनी कुर्सी से उठी और राजा को सिर झुकाते हुए उसे वह चिट्ठी दे दी। जब राजा ने चिट्ठी पढ़ ली तो उसने कहा कि उसका पीछा किया जाये और देखा जाये कि वह कहॉ जाता है। और फिर जो भी उसका मालिक हो उसको साथ लाया जाये।

तुरन्त ही दो दरबारी उठे और कुत्ते के पीछे चल दिये और उसका पीछा करते करते सराय तक आ पहॅुचे। वहॉ उनको चीन्ज़ो मिल गया। उन्होंने उसे राजा का सन्देश दिया और उसे साथ ले कर राजा के पास चले। उसे ले कर वे राजा के सामने आये।

राजा ने उससे पूछा कि वह किस तरह से इस बात की शान बघार रहा था कि उसी ने ड्रैगन को मारा था इस गधे ने नहीं। क्योंकि सिर तो वही ले कर आया था जो ताज पहने उसके पास ही बैठा हुआ था।

चीन्ज़ो बोला — “इसको तो ताज की बजाय कॉटों का ताज मिलना चाहिये क्योंकि इसने आपसे बिल्कुल सफेद झूठ बोला है।

पर यह साबित करने के लिये मेरे पास सबूत है कि यह काम मेंने किया है इस गधे ने नहीं। आप इससे सिर मँगवाइये। बिना जीभ के कोई सुबूत नहीं बोल सकता और ये सातों जीभें मैं ले कर आया हूँ।"

इतना कह कर उसनें सारी जीभें अपनी जेब में से निकाल कर राजा के सामने रख दीं। जब देहाती ने यह सब देखा तो वह तो देख कर दंग रह गया। उसकी समझ में नहीं आया कि अब इसका अन्त क्या होगा।

और यह तो फिर कुछ ज़्यादा ही हो गया जब मैनैचैला ने यह कहा — "पिता जी यही आदमी है जिसने मुझे बचाया। ओ देहाती तुम तो मेरे साथ बड़ी अच्छी चाल खेलने आये थे।"

जब राजा ने यह सुना तो उसने अपना ताज नकली दुलहे के सिर से उतार कर चीन्ज़ो के सिर पर रख दिया। वह आदमी को मरने के लिये भेजने ही वाला था कि चीन्ज़ो ने उससे प्रार्थना कर के उसको ऐसा करने से रोक दिया और उसकी नीचता को थोड़ा मुलायमियत से बरतने की प्रार्थना की।

उसकी शादी मैनैचैला से हो गयी। दावतों के लिये शाही मेजें सजायी गयीं। सुबह को ऐन्टोनीलो यानी चीन्ज़ो के पिता को भी बुलवा लिया गया। अब तो ऐन्टोनीलो पर राजा की खास कृपा रहने लगी।

अब उसको अपने बेटे में यह कहावत सच लगने लगी —
सीधे बन्दरगाह के लिये टेढ़ा जहाज़[69]

[69] Translated for the words, it is a saying, “A straight port for a crooked ship”.

# 8 1–8 बकरे का चेहरा[70]

जितने भी बुरे काम कोई आदमी करता है उनको करने के लिये उसके पास कोई न कोई वजह जरूर रहती है। या तो कोई अपराध जो उसे उसको करने के लिये उकसाता है। या उसकी कोई जरूरत जो उसको उस बुरे काम को करने पर मजबूर करती है। या फिर प्यार जो उसे अन्धा कर देता है। या फिर गुस्सा जो उसको तोड़ देता है।

पर कृतघ्नता की कोई माफी नहीं – सच्ची या झूठी, जिस पर उसका बोझ डाला जा सके। और इसी लिये यह सब बुरी आदतों में यह सबसे बुरे किस्म की आदत है। क्योंकि यह दया करने वाले के दया करने के फव्वारे को सुखा देती है। क्योंकि यह प्रेम की आग को बुझा देती है। फायदों के रास्ते का रोड़ा बन जाती है। और कृतघ्नों के दिल में पछतावे के बीज बोती है। इस कहानी में ऐसा ही कुछ दिखाया गया है जो मैं आप सबको अभी सुनाने जा रही हूँ।

एक किसान था जिसके 12 बेटियाँ थीं। उनमें से कोई भी पहली से ज़्यादा लम्बी नहीं थी। क्योंकि हर साल उनकी माँ अपने पति को एक बेटी देती इसलिये वह बेचारा गरीब किसान अपने परिवार का ठीक से पालन पोषण करने के लिये रोज सुबह हर दिन काम करने वाले मजदूर की तरह तरह जाता सारा दिन खुदाई करता। इस मेहनत से कमाये गये पैसे से वह अपने परिवार को केवल भूख से मरने से ही बचा पाता।

एक दिन ऐसा हुआ कि पहाड़ की तराई में खोदते समय दूसरे पहाड़ों के जासूस ने बादलों के ऊपर देखा कि वे बादलों के ऊपर

---

[70] Goat-face. (Tale No 8) Day 1, Tale No 8

आसमान में क्या कर रहे थे। और पास में एक गुफा थी जो इतनी गहरी और अँधेरी थी कि सूरज भी उसके अन्दर जाने से डरता था।

इस गुफा के अन्दर से एक बड़े मगर जैसे साइज़ का हरे रंग की गिरगिट बाहर निकली। वह बेचारा गरीब आदमी इतना डर गया कि वह तो वहाँ से भाग भी न सका। वह हर पल यही सोचता रहा कि बस यही उसकी ज़िन्दगी का आखिरी पल था। वह बदसूरत जानवर उसको एक बार में ही सटक जायेगा।

पर वह गिरगिट उसके पास आयी और बोला — "मेरे अच्छे आदमी डरो नहीं। क्योंकि मैं यहाँ तुमको कोई नुकसान पहुँचने नहीं आया हूँ बल्कि मैं तुम्हारी कुछ भलाई ही करना चाहती हूँ।"

जब मसानीलो[71] ने यह सुना तो वह उसके पैरों पर गिर पड़ा और बोला — "देवी जो कुछ भी आपका नाम है। मैं पूरे तरीके से आपके काबू में हूँ इसलिये पेड़ के इस गरीब तने के साथ उसी के अनुसार काम कीजिये क्योंकि मुझे अपनी **12** शाखाओं को भी सँभालना पड़ता है।"

गिरगिट बोली — "मैं इसी लिये तो यहाँ आयी हूँ। कल सुबह तुम अपनी सबसे छोटी बेटी को साथ ले कर यहाँ आना। मैं उसे अपनी बेटी की तरह से पालूँगी और अपनी ज़िन्दगी की तरह से प्यार करूँगी।"

[71] Masaniello – name of the peasant

यह सुन कर तो बेचारा पिता तो ऐसा महसूस करने लगा जैसे उसने किसी की चोरी कर ली हो और वे चोरी की चीज़ें उसकी पीठ पर लदी पायी गयी हों। क्योंकि गिरगिट के उसकी सबसे छोटी बेटी के माँगने पर जो सबसे कोमल बेटी थी उसने यह अन्दाजा लगाया कि शाल बिना ऊन का नहीं था और यह गिरगिट उसको खाना चाहती है।

फिर उसने अपने मन में सोचा "अगर मैं इसको अपनी बेटी दे देता हूँ तो मैं तो उसको अपनी आत्मा ही दे देता हूँ पर अगर मैं अपनी बेटी को उसे नहीं देता हूँ तो वह मेरा शरीर ले लेगी।

अगर मैं उसकी बात मान लेता हूँ तब तो वह मेरा दिल ही लूट लेती है और अगर मैं मना करता हूँ तो वह मेरा खून चूस लेगी। अगर मैं इस बात पर राजी हो जाता हूँ तब तो वह मेरा एक हिस्सा ले लेती है और अगर मैं उसकी बात पर राजी नहीं होता तो वह सारा ले लेती है।

उफ़ आज कितने बुरे दिन मैंने अपना काम शुरू किया था। भगवान ने मुझे कितनी बदकिस्मती दी है।"

जब वह ये सब बातें सोच रहा था कि गिरगिट बोली — "जल्दी से तय कर लो और जो मैं कहती हूँ उसे मान लो वरना यहाँ तुम्हारे चिथड़े ही पड़े मिलेंगे। क्योंकि वह तो मैं ले ही लूँगी जो मैं माँग रही हूँ और वैसा ही होगा जैसा में चाहती हूँ।"

मासानीलो ने जब यह हुक्म सुना और देखा कि उसके लिये तो इसकी अपील करने की भी कोई जगह नहीं है तो बहुत दुखी हो कर वह घर लौट आया। उसका चेहरा इतना पीला पड़ा हुआ जैसे उसे पीलिया हो गया हो।

उसकी पत्नी ने जब देखा कि उसका चेहरा किसी बीमार चिड़िया के चेहरे की तरह पीला हो कर लटक रहा है तो उसने उससे पूछा — "प्रिय तुम्हें क्या हुआ, क्या आज तुम्हारी किसी से लड़ाई हो गयी है। या फिर हमारे खिलाफ किसी का वारंट है। या तुम्हारा कोई गधा मर गया है।"

मासानीलो बोला — "नहीं ऐसा तो कुछ नहीं है। पर एक सींग वाले गिरगिट ने मुझे डरा दिया है क्योंकि उसने मुझे धमकी दी है कि अगर मैंने उसको अपनी सबसे छोटी बेटी नहीं दी तो मुझे उसका फल भुगतना पड़ेगा।

मेरा सिर चकरा रहा है। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मैं इन दो रास्तों में से कौन सा रास्ता चुनूँ। एक तरफ तो मेरा प्यार मुझे रोकता है और दूसरी तरफ परिवार की जिम्मेदारी। मैं रैन्ज़ोला[72] को बहुत प्यार करता हूँ पर साथ में मैं अपनी ज़िन्दगी को भी बहुत प्यार करता हूँ।

[72] Renzolla – name of the youngest daughter of the peasant.

अगर मैं अपने दिल का यह हिस्सा गिरगिट को नहीं देता तो वह तो मेरे इस अभागे शरीर को ही ले लेगी। अब प्रिये तुम ही मुझे कुछ सलाह दो नहीं तो समझो कि मैं तो बस बर्बाद ही हो गया।"

जब उसकी पत्नी ने यह सुना तो बोली — "प्रिय। कौन जानता है इस गिरगिट की दो पूँछें भी तो हो सकती हैं जो तुम्हारी किस्मत बना देंगी। कौन जानता है कि यह गिरगिट हमारे सब दुखों का अन्त कर दे।

कितनी बार ऐसा हुआ है कि जब हमको अपनी खुशकिस्मती को देखने के लिये जो हमसे मिलने आ रही है गरुड़ जैसी तेज़ ऑखों की जरूरत पड़ती है। और जब हम उसे पकड़ने दौड़ते हैं तो हमारी ऑखों के सामने एक परदा पड़ जाता है हमारे हाथ अकड़ जाते हैं।

इसलिये जाओ और उसको भी साथ ले जाओ क्योंकि मेरा दिल कहता है कि उसके लिये अवश्य ही कोई खुशकिस्मती इन्तजार कर रही है।"

पत्नी के इन शब्दों से किसान को बहुत तसल्ली मिली। अगले दिन जैसे ही सूरज की किरनों ने आसमान को साफ किया जिसको रात के काले धब्बों ने गन्दा कर दिया था उसने अपनी सबसे छोटी बेटी का हाथ पकड़ा और उसे गुफा की तरफ ले कर चल दिया।

गिरगिट बाहर आयी। उसने बच्ची का हाथ पकड़ कर अपनी तरफ किया और उसके पिता को एक थैला भर कर क्राउन्स[73] दिये

[73] Crown is the name of the currency in use in those days.

और उससे कहा कि अब वह जा सकता था क्योंकि रैन्ज़ोला को अब उसके माता और पिता दोनों मिल गये हैं।

यह सुन कर मासानीलो बहुत खुश हुआ और अपने घर अपनी पत्नी के पास लौट गया। अब अपनी दूसरी बेटियों की शादी के लिये उसके पास बहुत पैसा था बल्कि उन बूढ़ों के पास भी अब बढ़िया खाने पीने के लिये काफी पैसा था।

उधर गिरगिट ने रैन्ज़ोला के लिये एक बहुत बढ़िया महल बनवाया और उसको इतनी शान से पाला कि वह तो किसी रानी की ऑखों को भी चौंधियाने लगी।

उसको किसी चीज़ की जरूरत नहीं थी। उसका खाना पहनना सब एक राजकुमारी के खाने पहनने जैसा था। सौ लड़कियॉ उसकी सेवा के लिये खड़ी रहती थीं। इतने अच्छे व्यवहार के साथ पल बढ़ कर वह एक ओक के पेड़ की तरह से मजबूत बड़ी हो गयी।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि वहॉ का राजा शिकार खेलने के लिये निकला तो वह इस जंगल की तरफ आ निकला। वहॉ पहुॅच कर उसको रात हो गयी। उसने चारों तरफ नजर डाली कि उसको कोई ऐसी जगह मिल जाये जहॉ वह रात बिता सके तो उसको महल में एक मोमबत्ती जली दिखायी दे गयी।

तो उसने अपना एक नौकर उधर यह पूछने के लिये भेजा कि वहॉ उसको रात को शरण मिल सकती है या नहीं। जब नौकर महल आया तो गिरगिट ने एक सुन्दर स्त्री का रूप रख कर उसका

स्वागत किया। उसका सन्देश सुनने के बाद उसने कहा कि "तुम्हारे मालिक का हजार बार स्वागत है। यहाँ उनको न तो रोटी की और न चाकू की कोई कमी रहेगी।"

राजा यह जवाब सुन कर महल की तरफ चल पड़ा जहाँ उसका एक सिपाही की तरह से स्वागत हुआ। सौ नौकर उसके स्वागत के लिये गये। ऐसा लग रहा था जैसे किसी अमीर आदमी का जनाज़ा निकल रहा हो। सौ और नौकर मेज पर खाना लगा रहे थे। दूसरे सौ नौकर संगीत बजा रहे थे।

पर सबसे बड़ी बात तो यह थी कि रैन्ज़ोला राजा की सेवा में थी। उसने राजा की इतनी अच्छी तरह से सेवा की इतनी अच्छी तरह से शराब पिलायी कि राजा ने शराब कम और "प्रेम" ज़्यादा पिया।

इतने शाही ढंग से स्वागत होने के बाद राजा को लगा कि वह रैन्ज़ोला के बिना नहीं रह सकता। सो राजा ने परी को पुकार कर पूछा कि उसकी पत्नी कहाँ है।

इस पर परी ने जो रैन्ज़ोला की भलाई के अलावा और कुछ नहीं चाहती थी उसको न केवल शादी की इजाज़त दे दी बल्कि साथ में उसे दहेज में सात मिलियन सोने के सिक्के भी दिये।

राजा तो अपनी इस खुशकिस्मती पर बहुत खुश हुआ। वह रैन्ज़ोला को ले कर वहाँ से चल दिया। जो कुछ परी ने उसके लिये किया था रैन्ज़ोला ने उस सबको भुला दिया था। वह तो बस अपने

पति के साथ उसका हाथ पकड़ कर बिना उसको धन्यवाद का एक शब्द कहे बिना ही वहाँ से चली गयी।

जब परी ने उसका यह रवैया देखा तो उसने उसको शाप दिया कि उसका चेहरा बकरे के मुँह जैसा हो जाये।

जैसे ही उसने यह कहा कि रैन्ज़ोला का मुँह लम्बा हो गया। उस पर एक बालिश्त लम्बी दाढ़ी निकल आयी। उसका जबड़ा तंग हो गया। उसकी खाल सख्त हो गयी। उसके गालों पर बाल आ गये। उसके चोटी किये गये बाल उसके दो सींग बन गये।

जब राजा ने यह देखा तो उस पर तो जैसे बिजली गिर पड़ी। उसकी सुन्दरता जिस तरह से और जितनी जल्दी बदल गयी थी उसकी वजह न समझते हुए और रोते हुए और आहें भरते हुए कहा — "वे घुँघराले बाल जिन्होंने मुझे बाँध लिया था वे कहाँ हैं। वे आँखें जिन्होंने मुझे खींच लिया था कहाँ हैं। क्या मैं एक बकरी का पति बनूँगा। नहीं नहीं। मेरा दिल किसी बकरी के चेहरे वाली के लिये नहीं टूटेगा।"

जैसे ही वे लोग महल पहुँचे उसने रैन्ज़ोला को रसोईघर में भेज दिया। उसके साथ उसने उसकी एक दासी को रख दिया। दोनों को कातने के लिये 10–10 रुई के गट्ठर दे दिये जिनको उन्हें हफ्ते के आखीर तक कातना था।

नौकरानी ने राजा के हुक्म के अनुसार रुई साफ करने शुरू कर दी और उसे अटेरन[74] पर रख कर तकली[75] घुमाते हुए सूत कातना शुरू कर दिया। सो अगले शनिवार उसका सारा सूत कत चुका था।

पर रैन्ज़ोला तो बस यही सोचती रही कि वह तो अभी भी परी के घर में थी। उसने शीशे में अपना चेहरा भी नहीं देखा और सारी रुई खिड़की के बाहर फेंक दी और बोली —

"क्या यह राजा के लिये ठीक काम है कि वह मुझे ऐसे काम पर बिठाये। अगर उसे कमीजें चाहिये तो वह जा कर बाजार से खरीदे। यह थोड़े ही कि इस काम के लिये वह मुझे यहाँ ले कर आये।

उसको भी यह याद रहना चाहिये कि मैं अपने दहेज में सात मिलियन सोना ले कर आयी हूँ। मैं उसकी पत्नी हूँ कोई नौकर नहीं। मुझे लगता है कि वह गधा है जो मुझे इस तरीके से रखता है।"

खैर जब शनिवार की सुबह आयी तो यह देख कर कि नौकरानी ने अपनी सारी रुई कात ली है रैन्ज़ोला डर गयी। वह तुरन्त ही परी के महल गयी और अपनी बदकिस्मती की कहानी

---

[74] Translated for the word "Distaff". See its picture above.
[75] Translated for the word "Spindle". See its picture above.

कही। परी ने बड़े प्यार से उसे गले लगाया और उसको एक थैला भर कर कते हुए सूत का दिया कि वह उसे ले जा कर राजा को दे दे और उसको बताये कि वह कितनी मेहनती और कितनी अच्छी घर सँभालने वाली पत्नी है।

रैन्ज़ोला ने उससे थैला लिया और उसे फिर से धन्यवाद दिये बिना ही शाही महल चली गयी। इस बात पर परी फिर से उस कृतघ्न लड़की के व्यवहार से बहुत गुस्सा हो गयी।

जब राजा ने उससे सूत ले लिया तो उसने दो कुत्ते लिये और उनमें से एक रैन्ज़ोला को दिया और दूसरा उसकी नौकरानी को दिया और उनसे कहा कि वे उनको खिलायें पिलायें और पालें।

नौकरानी ने अपने कुत्ते को रोटी के टुकड़ों पर पाला और उसे अपने बच्चे की तरह रखा। लेकिन रैन्ज़ोला तो बस उसको देख देख कर बड़बड़ाती रही "यह सुन्दर तो जरूर है। पर जैसे मेरे बाबा कहा करते थे "क्या हम तुर्कों के राज में रह रहे हैं।" तो क्या मैं इस कुत्ते के बाल सवारूँ और इसकी सेवा करूँ।" कह कर उसने उसे खिड़की के बाहर फेंक दिया।

कुछ महीनों बाद राजा ने कुत्तें के बारे में जानना चाहा तो रैन्ज़ोला तो परेशान हो कर परी के पास भाग गयी। वहॉ फाटक पर एक नौकर खड़ा हुआ था। उसने रैन्ज़ोला से पूछा — "आप कौन हैं और आपको किससे मिलना है।"

रैन्ज़ोला अपने लिये ऐसी बातें सुन कर बहुत गुस्सा हो गयी।

वह गुस्से से बोली — “क्या तुम जानते नहीं कि मैं कौन हूँ ओ बूढ़े बकरे की दाढ़ी वाले।”

नौकर बोला — “आप मुझसे इस बुरे ढंग से क्यों बात कर रही हैं। यह तो ऐसा हो गया जैसे उलटा चोर कोतवाल को डॉटे। मैं बकरे की दाढ़ी वाला हूँ ठीक है पर आप भी तो बकरे की दाढ़ी वाली हैं और आधी बकरी भी।

और आप इसको अच्छा समझती हैं। ज़रा रुको ओ स्त्री। मैं अभी आपको बताता हूँ तब आपको पता चलेगा कि आपको किस बात पर घमंड है और आप कितनी बदतमीज हैं।”

ऐसा कह कर वह अपने कमरे में भाग गया और वहाँ से एक शीशा ले कर लौटा। उस शीशे को उसने रैन्ज़ोला के चेहरे के सामने किया तो जब उसने अपनी बालों वाली बदसूरत शक्ल उसमें देखी तो वह तो डर के मारे मर ही गयी।

अपने चेहरे को इतना बदलते देख कर दुख में वह यह भी नहीं सोच सकी कि वह अपने से क्या कहे।

इस पर बूढ़े ने उससे कहा — “रैन्ज़ोला तुमको याद रखना चाहिये कि तुम एक किसान की बेटी हो। और वह परी ही थी जिसने तुम्हें बड़ा किया और रानी बनाया।

और तुम तो बहुत ही बड़ी कृतघ्न निकलीं कि तुमने उसको धन्यवाद भी नहीं दिया। इतनी कृपा के बाद भी तुमने उसे अपना कोई प्यार नहीं दिखाया। इससे तुम अपने लिये ही लड़ाई ले

आयीं। देखो ज़रा अपना चेहरा देखो। तुम अपनी कृतघ्नता से अपने लिये कितनी बदसूरती ले आयीं।

परी के शाप से न केवल तुम्हारा चेहरा ही बदला है बल्कि तुम्हारी तो हालत ही बदल गयी है। पर अब अगर तुम वैसा ही करोगी जैसा कि यह बूढ़ा सफेद दाढ़ी वाला तुम्हें सलाह देता है तो तुम्हारा भला हो सकता है।

जाओ और जा कर परी को ढूँढो। अपने आपको परी के पैरों पर डाल दो। अपनी छाती पीट पीट कर इतना रोओ कि तुम्हारी दाढ़ी भीग जाये। अपने इस सारे बुरे व्यवहार की उससे माफी माँगो। वह बहुत नर्म दिल है तुम्हारी इस प्रार्थना से पिघल कर वह तुम्हें माफ कर देगी।"

रैन्ज़ोला उसकी बात सुन कर समझ गयी कि उस बूढ़े ने ठीक समय पर कील पर हथौड़ा मारा है। उसने उसकी सलाह मानी। परी ने उसको गले से लगाया चूमा और उसको उसकी पुरानी शक्ल सूरत उसे वापस कर दी।

फिर परी ने उसे सोने के तारों की बनी हुई एक बहुत भारी पोशाक पहनायी उसको एक बहुत ही शानदार बग्घी में बिठाया बहुत सारे नौकर दिये और फिर उसको ले कर वह राजा के पास आयी।

राजा ने जब उसके इतना सुन्दर और इतने सुन्दर कपड़े पहने हुए देखा तो वह तो उसे अपनी जान जैसी चाहने लगा। वह अपने

आपको ही उन सब दुखों का जिम्मेदार ठहराने लगा। पर इन सबके लिये उसने उसके बकरे वाले चेहरे को जिम्मेदार ठहराया और अपने आपको माफ कर दिया।

इस तरह रैन्ज़ोला अब अपने पति के साथ खुश खुश रहने लगी। अब वह परी की भी इज़्ज़त करने लगी थी और बूढ़े की भी जिसने उसे सिखा दिया था कि "हर एक के साथ ढंग से व्यवहार करना चाहिये।

# 9 1–9 जादुई हिरनी[76]

दोस्ती बहुत ही कीमती चीज़ है जिसकी वजह से हम अपने दोस्तों के लिये खतरों को अपनी इच्छा से उठा सकते हैं। हम अपनी सम्पत्ति को बहुत कम महत्ता देते हैं और ज़िन्दगी को उसका भोग करने के लिये एक तिनके के बराबर समझते है जब हमें उनको अपने किसी दोस्त को देने की बारी आती है।

बहुत सारी कहानियाँ हमें यह बात सिखाती हैं और इतिहास भी ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है। अब मैं आपको एक वैसा ही उदाहरण देने जा रही हूँ जो मेरी नानी मुझे सुनाया करती थीं। सो अब आप लोग उसे कान खोल कर और मुँह बन्द कर के सुनें।

एक बार की बात है कि लौंग ट्रैलिस का एक राजा था जिसका नाम था जियानोने।[77] उसके कोई बच्चा नहीं था सो उसको बच्चों की बहुत इच्छा थी। इसके लिये वह अक्सर भगवान से प्रार्थना किया करता था ताकि वह उसकी इच्छा पूरी कर दें।

केवल प्रार्थना ही नहीं बल्कि इस काम के लिये वह भिखारियों और तीर्थयात्रा करने वालों को दान भी बहुत देता था। उनको वह वे सभी चीज़ें देता था जो उसके पास थीं।

पर जब उसने देखा कि इस सबसे उसे कुछ फायदा नहीं हुआ और उसके अपने हाथ अपनी जेब में डालने का कोई अन्त ही नहीं था तो उसने अपना दरवाजा कस कर बन्द कर दिया और फिर जो

---

[76] The Enchanted Doe. (Tale No 9) Day 1, Tale No 9
This story is very similar to "Bada Andu Aur Chhota Andee" – an African tale given in "Africa Ki Lok Kathayen" by Sushma Gupta

[77] King of Long-Trellis named Giannone

कोई भी उसके दरवाजे पर आया तो उसको अपने तीर कमान से मार दिया।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि एक लम्बी दाढ़ी वाला तीर्थयात्री उधर से गुजर रहा था। उसको या तो पता नहीं था कि राजा अब निल्कुल ही बदल चुका था और या शायद उसे पता था तो वह उसको बदलना चाहता था।

उसने जा कर राजा से रहने के लिये शरण मॉगी तो राजा ने एक भयानक नजर उस पर डालते हुए और गुर्राते हुए उससे कहा — "अगर तुम्हारे पास इसके अलावा कोई और घर शरण के लिये न हो तो तुम ॲधेरे में कहीं जा कर सो जाओ। बिल्ली के बच्चों ने अपनी ऑखें खोल ली हैं और मैं अब कोई बच्चा नहीं हूॅ।"

जब बूढ़े ने पूछा कि उसके इस बदलाव की क्या वजह है तो राजा बोला — "मेरी बच्चों की बहुत इच्छा है। उसको पूरी करने के लिये मैंने जो भी यहॉ आया और जो भी यहॉ से गया मैंने उन सबको बहुत दान दिया। अपना सारा खजाना लुटा दिया।

आखिर जब मैंने देखा कि मेरी तो सारी दाढ़ी ही खत्म हो गयी तो मैंने अपनी हजामत बनानी बन्द कर दी और अपना रेज़र उठा कर रख दिया।"

तीर्थयात्री बोला — "बस अगर इतनी सी बात है तो तुम अपने दिमाग को शान्त रखो। मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूॅ कि तुम्हारी इच्छा जरूर पूरी होगी चाहे मुझे अपने कान ही क्यों न खोने पड़ें।"

राजा बोला — "ऐसा ही हो। मैं कसम खाता हूँ कि मैं अपना आधा राज्य तुम्हें दे दूँगा।"

आदमी बोला — "तो मेरी बात सुनो। अगर तुम्हें वाकई बच्चे की इच्छा है तो तुमको एक समुद्री ड्रैगन का दिल लाना पड़ेगा और उसे पका कर रानी को खिलाना पड़ेगा। और फिर तुम देखना कि मैंने जो कुछ कहा है वह हो कर रहेगा।"

राजा बोला — "यह काम होना तो बहुत मुश्किल लगता है। पर इस कोशिश में मैं ज़्यादा से ज़्यादा कुछ खोऊँगा तो नहीं न। इसलिये मुझे समुद्री ड्रैगन का दिल लाना ही चाहिये।"

सो उसने तुरन्त ही सौ मछियारे समुद्र में ड्रैगन पकड़ने और उसका दिल लाने के लिये भेज दिये। उन्होंने भी ड्रैगन पकड़ने के लिये अपने सब साधन जुटाये और समुद्र की तरफ चल दिये।

वहाँ जा कर उन्होंने एक समुद्री ड्रैगन को पकड़ा उसको मार कर उसका दिल निकाला और उसे राजा के पास ले गये। राजा ने उसे पकाने और खाने के लिये रानी को दे दिया। जब रानी ने उसे खा लिया तो राज्य भर में राजा की इच्छा पूरी करने के लिये बहुत खुशियाँ मनायी गयीं।

समय आने पर राजा के दो बेटे हुए। वे दोनों इतने एकसे थे कि राजा तो राजा रानी खुद भी यह नहीं बता सकती कि कौन सा बेटा कौन सा है। दोनों लड़के इस तरह एक साथ बड़े हुए कि वे दोनों एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे।

उनका आपस में एक दूसरे के लिये इतना प्यार था कि रानी को भी उनसे ईर्ष्या होने लगी कि जो राजा का वारिस बनने वाला था और जिसका नाम फ़ौन्ज़ो[78] था वह अपनी माँ के मुकाबले में अपने भाई को बहुत ज़्यादा प्यार करता था। वह नहीं जानती थी कि वह अपनी आँख के इस काँटे को किस तरह से दूर करे।

अब एक दिन क्या हुआ कि फ़ौन्ज़ो अपने भाई के साथ शिकार के लिये जाने वाला था तो उसने अपने कमरे में आग जलायी और उस पर लैड[79] पिघलाने लगा जिससे वह बन्दूक की गोलियाँ बना सकता।

यह करते हुए शायद उसे किसी चीज़ की जरूरत पड़ी, मुझे नहीं मालूम क्या, तो वह उसे ढूँढने के लिये कमरे से बाहर गया। इस बीच रानी वहाँ आ गयी तो उसने केवल कैनैलोरो[80] को ही वहाँ देखा तो उसने उसको दुनियाँ से ही भेजने का निश्चय किया।

उसने झुक कर गोली बनाने का गर्म साँचा उठाया और उसके चेहरे पर फेंक दिया। वह उसकी भौंह पर जा कर लगा जिससे वहाँ एक बहुत ही बुरा घाव हो गया।

वह उसको एक बार और मारना चाह रही थी कि इतने में फ़ौन्ज़ो अन्दर आ गया। तो उसने बहाना बनाया कि वह तो फ़ौन्ज़ो

---

[78] Fonzo – name of the elder son of the King. He was to be the future King.

[79] Lead – a kind of metal

[80] Canneloro – name of the younger son of the King.

को देखने के लिये आयी थी कि वह कैसा है। उसने उसको कई बार सहलाया और चली गयी।

इधर कैनैलोरो ने अपना टोप कुछ माथे की तरफ खिसका लिया और फ़ौन्ज़ो से उसने इसके बारे में कुछ भी नहीं कहा बल्कि और शान्त खड़ा रहा हालाँकि उसको बहुत जबरदस्त दर्द हो रहा था।

जैसे ही उनकी गोलियाँ बन कर खत्म हुईं तो उसने अपने भाई से कहा कि वह अब वहाँ से जाना चाहता है। फ़ौन्ज़ो को उसका यह अचानक लिया हुआ फैसला बड़ा अजीब सा लगा।

सो उसने उसकी वजह पूछी तो वह बोला — "मुझसे और ज़्यादा मत पूछो मेरे प्यारे फ़ौन्ज़ो। बस मैं इतना ही कहना चाहूँगा कि मुझे यहाँ से जाना पड़ रहा है और तुमसे अलग होना पड़ रहा है। तुम जो मेरे दिल हो मेरे शरीर की साँस हो मेरी जान हो। वह तुम मेरे लिये हमेशा ही रहोगे। क्योंकि अब और कुछ नहीं हो सकता सो विदा। मुझे याद करते रहना।"

यह कह कर दोनों आपस में गले मिले और बहुत देर तक रोते रहे। फिर कैनैलोरो अपने कमरे में चला गया।

वहाँ पहुँच कर उसने अपना जिरहबख्तर[81] पहना अपनी तलवार ली ऊपर से ले कर नीचे तक हथियारों से लैस हुआ और घुड़साल से एक घोड़ा ले कर वह उसके पैर के छल्ले पर पैर रख कर चढ़ने वाला ही हो रहा था कि फ़ौन्ज़ो रोता हुआ वहाँ आ पहुँचा।

---

[81] Translated for the word "Armor"

वह आ कर कैनैलोरो से बोला — “अब जब तुमने मुझे छोड़ कर जाने का इरादा कर ही लिया है तो कम से कम अपने प्यार की कोई याद ही छोड़ते जाओ तोक मैं तुम्हारी गैरहाजिरी में मैं अपने आपको कुछ तसल्ली दे सकूँ।”

यह सुन कर कैनैलोरो ने अपना खंजर[82] जमीन में गाड़ा तो एकदम से वहाँ से एक फव्वारा निकल पड़ा। उसने अपने जुड़वाँ भाई से कहा — “अपनी याद में में यही सबसे अच्छी चीज़ छोड़ कर जा रहा हूँ। इसके बहाव से तुम मेरी ज़िन्दगी को जान पाओगे। अगर तुम इसे साफ बहते हुए देखो तो समझना कि मेरी भी ज़िन्दगी साफ और शान्त गुजर रही है।

अगर तुमको इसमें कुछ हलचल दिखायी दे तो समझना कि मेरी ज़िन्दगी में कुछ उतार चढ़ाव है। और अगर यह सूख जाये तो समझना कि मेरी ज़िन्दगी के दिये का तेल जल चुका है।”

इसके बाद उसने अपनी तलवार जमीन में घुसायी तो एकदम से एक मेंहदी का पेड़ वहाँ उग आया। फिर उसने भाई से कहा —

जब तक यह मेंहदी का पेड़ हरा है तो समझना कि मैं लीक[83] की तरह हरा हूँ। अगर तुम इसको मुरझाता देखो तो समझना कि मेरी किस्मत अच्छी नहीं है।

---

[82] Translated for the word “Dagger” – dagger is a small knife about of 8-10” long blade.

[83] Leek is a kind of vegetable, similar to spring onions,

और अगर यह सूख जाये तो फिर तुम कैनैलोरो के लिये रो सकते हो।"

यह सब कह सुन कर दोनों ने एक दूसरे को फिर से गले लगाया और फिर कैनैलोरो अपनी यात्रा पर चल दिया। बीच में उसने बहुत सारी चीज़ों का सामना किया। आखिर वह चलते चलते साफ पानी के राज्य[84] में आ गया।

इत्तफाक की बात थी कि उसी समय वे एक टूर्नामैन्ट का इन्तजाम कर रहे थे। और उस टूर्नामैन्ट में जो कोई भी जीतता राजा उसी से अपनी बेटी की शादी करता।

यहाँ कैनैलोरो ने इस टूर्नामैन्ट में हिस्सा लिया और टूर्नामैन्ट में वहाँ के सारे हिस्सा लेने वालों को पछाड़ कर राजकुमारी फ़ैनीचा[85] को जीत लिया। इस जीत की खुशी में एक बहुत बड़ी दावत दी गयी।

कैनैलोरो वहाँ कुछ महीने सुख शान्ति से रह रहा था तो एक दिन एक बुरा विचार उसके दिमाग में आया कि उसको शिकार के लिये जाना चाहिये।

उसने यह बात राजा से कही तो राजा बोला — "बच्चे सँभाल कर जाना। वहाँ जा कर तुम वहम में मत पड़ जाना। अपनी अक्ल काम में लाना और आँखें खुली रखना। क्योंकि यहाँ के जंगलों में

[84] Translated for the words "Kingdom of Clear Water"

[85] Fenicia – name of the Princess of the King of Clear Water.

एक बहुत ही नीच ओगरे रहता है जो रोज अपना रूप बदलता रहता है। कभी वह भेड़िया बन जाता है तो कभी शेर बन जाता है। अभी गधा है तो बाद में बारहसिंगा बन जाता है। यानी कभी एक चीज़ और कभी दूसरी चीज़।

वह हजारों ऐसे तरीके जानता है जिससे वह आने जाने वालों को अपनी गुफा में पकड़ता है। वह वहीं उनको मारता है और खा जाता है। इसलिये बच्चे अपनी सुरक्षा को खतरे में नहीं डालना वरना वहाँ केवल तुम्हारे कपड़े ही मिलेंगे।"

कैनैलोरो जानता ही नहीं था कि डर क्या होता है सो उसने अपने ससुर की सलाह की ऊपर कोई ज़्यादा ध्यान ही नहीं दिया। जैसे ही सूरज की किरनों की झाड़ू ने रात के अँधेरे की सफाई की वह शिकार के लिये बाहर निकल गया।

चलते चलते वह एक जंगल में आया जहाँ की पत्तियों के नीचे सूरज अँधेरे से आँखमिचौली खेल रहा था। ओगरे ने उसे आते देख लिया था सो वह एक सुन्दर हिरनी बन गया। जिसको जैसे ही कैनैलोरो ने देखा तो वह भी उसके पीछे भाग लिया।

फिर वह उसको जंगल में इधर उधर इस तरह से भगा ले गयी कि वह उसे जंगल के बीच में ले आयी। वहाँ उसने एक बहुत बड़ा बर्फ का तूफान ला दिया। ऐसा लगने लगा जैसे आसमान ही गिर पड़ेगा।

कैनेलोरो ने देखा कि वह तो एक गुफा के सामने खड़ा है तो उसने गुफा में शरण लेने का सोचा। वह ठंड से जमा जा रहा था। उसने कुछ लकड़ियॉ बीनीं जो वहीं गुफा में ही पड़ी थीं। वहॉ उसने उनसे आग जलायी।

जब वह आग के पास खड़ा था और अपने कपड़े सुखा रहा था तो हिरनी गुफा के दरवाजे पर आ कर बोली — "सर नाइट। मेहरबानी कर के मुझे भी यहॉ अपने ठंड मिटाने के लिये आने की इजाज़त दें। मैं ठंड से कॉप रही हूॅ।"

कैनैलोरो जो बहुत दयालु था बोला — "आ जाओ तुम्हारा स्वागत है।"

हिरनी बोली — "यकीनन मैं आती हूॅ पर मुझे डर है कि तुम मुझे खा जाओगे।"

कैनैलोरो बोला — "डरो नहीं। मेरा विश्वास करो।"

हिरनी बोली — "अगर तुम चाहते हो कि मैं अन्दर आऊॅ तो तुम अपने कुत्ते बॉध दो ताकि ये मुझे कुछ नुकसान न पहुॅचा सकें। और तुम अपने घोड़े को भी बॉध दो ताकि यह मुझे मार न सके।"

सो कैनैलोरो ने अपने कुत्ते बॉधे अपना घोड़ा बॉधा। फिर भी हिरनी ने कहा — "मुझे अभी भी पूरा भरोसा नहीं है। फिर भी जब तक तुम अपनी तलवार नहीं बॉध देते मैं अन्दर नहीं आ सकती।"

कैनैलोरो वास्तव में हिरनी से दोस्ती करना चाहता था सो उसने उसकी बात मान कर अपनी तलवार भी कस कर बॉध दी जैसे कोई

देहाती करता है जब वह उसको ले कर शहर जाता है तो सिपाही के डर से करता है।

जैसे ही ओगरे ने देखा कि कैनैलोरो के पास अब उसकी सुरक्षा का कोई साधन नहीं है उसने अपना असली रूप रखा और कैनैलोरो के ऊपर चढ़ बैठा और उसको गुफा में एक गड्ढे में डाल दिया। फिर उसने उस गड्ढे के ऊपर एक पत्थर रख दिया ताकि वह उसे बाद में खा सके।

उधर फ़ौन्ज़ो ने जो कैनैलोरो की खबर जानने के लिये सुबह शाम मेंहदी के पेड़ और फव्वारे के चक्कर लगाया करता था एक दिन देखा कि पेड़ की पत्ती मुरझा गयी थी और फव्वारे के पानी में हलचल थी।

उसको तुरन्त ही लगा कि उसका भाई किसी खतरे में पड़ गया है। उसको बचाने के लिये उसने घोड़ा लिया दो जादुई कुत्ते लिये और अपने माता पिता से इजाज़त लिये बिना ही अपने सब हथियार ले कर वहाँ से चल दिया।

वह इधर उधर घूमता हुआ चल दिया। चलते चलते वह भी साफ पानी के राज्य आ पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि वहाँ तो सभी दुखी और उदास घूम रहे है। क्योंकि उनको लग रहा था कि कैनैलोरो शायद मर गया है।

जैसे ही वह दरबार में गया तो क्योंकि उसकी शक्ल सूरत कैनैलोरो से बिल्कुल मिलती थी तो वहाँ बैठे दरबारियों ने सोचा कि

कैनैलोरो वापस आ गया। सो वे तुरन्त ही यह अच्छी खबर राजकुमारी को सुनाने गये। यह खबर सुनते ही फ़ैनीचा तुरन्त भागती हुई दरबार में आयी और फ़ौन्ज़ो के गले लगते हुए बोली — “मेरे दिल तुम अब तक कहाँ थे।”

फ़ौन्ज़ो को तुरन्त एहसास हो गया कि कैनैलोरो यहाँ आया था पर यहाँ से फिर कहीं चला गया। सो उसने इस मामले को सुलझाने का विचार बना लिया।

राजकुमारी से बात करने से उसे पता चला कि उसका भाई उसको कहाँ मिल सकता था। यह सुन कर कि उसने अपने आपको शिकार पर जा कर एक बड़े खतरे में फँसा लिया है खास कर के जब जबकि उसे अगर ओगरे मिल जाये तो। उसको विश्वास सा हो गया कि कैनैलोरो जरूर वहीं होगा।

अगले दिन जैसे ही सूरज निकला वह जागा। वह शिकार खेलने जाना चाहता था पर न तो फ़ैनीचा की विनती और न ही राजा का कोई हुक्म उसको अपने भाई को ढूँढने से रोक सका। उसको तो शिकार खेलने जाना ही था। सो उसने अपने जादुई कुत्ते लिये और घोड़े पर चढ़ कर वह शिकार के लिये चल दिया।

वहाँ पर उसके साथ भी वही हुआ जो कैनैलोरो के साथ भी हुआ। पर जब वह गुफा में घुसा तो उसको अपने भाई के हथियार बँधे दिखायी दे गये। उसका घोड़ा और कुत्ते भी वहीं बँधे हुए थे।

इससे उसको उस जाल का पता चल गया जिससे उसको वहॉ फॉसा गया था। हिरनी ने उससे भी उसी तरह से कहा कि वह अपने हथियार घोड़ा और कुत्ते बॉध दे। पर उसने उनको बॉधने की बजाय खोल दिया और उसके ऊपर छोड़ दिया जो उसे फाड़ कर खा गये।

फिर वह अपने भाई के निशान ढूॅढने लगा तो एक गड्ढे में से आती उसकी आवाज सुनायी दे गयी। उसने गड्ढे पर से पत्थर उठा दिया और अपने भाई को निकाल लिया। साथ में उसने दूसरे कुछ और लोगों को भी निकाल लिया जिनको ओगरे ने बाद में खाने के लिये उस गड्ढे में बन्द कर रखा था।

पहले तो दोनों खूब गले मिले फिर दोनों घर चले गये। जब फ़ैनीचा ने उन दोनों को एक साथ देखा तो वे दोनों इतने एक से थे कि वह यह ही नहीं पहचान सकी कि उसका पति कौन सा है। फिर कैनैलोरो ने अपने सिर से टोपी उतारी तो उसको उसका घाव का निशान दिखायी दे गया।

फ़ौन्ज़ो वहॉ एक महीना रहा। आनन्द करने के बाद उसने अपने घर जाने की इच्छा प्रगट की। तो कैनैलोरो ने अपनी मॉ को लिखा कि वह दुश्मनी भूल कर उसके पास आ कर रहे और वहॉ आ कर आनन्द करे।

उसकी माँ ने ऐसा ही किया। पर उस समय के बाद से उसने कभी कुत्तों की और शिकार की आवाज नहीं सुनी।

वही आदमी नाखुश है जो अपनी कीमत पर सीखता है।

# 10 2–1 पार्सले[86]

यह उन कहानियों में से एक है जिसे मेरे मामा की नानी सुनाया करती थीं। और अगर मैंने अपना चश्मा उलटा नहीं पहना हुआ है तो मुझे यकीन है कि यह कहानी आप सबको भी बहुत अच्छी लगेगी और आनन्द भी देगी।

एक बार की बात है कि एक जगह एक स्त्री रहती थी जिसका नाम था पास्काडोज़िया[87]। एक दिन वह अपनी खिड़की पर खड़ी हुई थी जो एक ओग्रैस[88] के बागीचे की तरफ खुलती थी तो उसने देखा कि उसके बागीचे में तो बहुत सुन्दर पार्सले[89] लगा हुआ है। उसको देख कर तो उसे उसको खाने की इच्छा हो आयी।

सो जब ओग्रैस घर से बाहर चली गयी तब वह अपने आपको रोक न सकी और उसके बागीचे में पार्सले खाने जा पहुँची। उसने एक मुट्ठी पार्सले तोड़ा और खा लिया।

ओग्रैस अपने घर वापस आ गयी और अपना खाना बनाने लगी तो उसने देखा कि कोई उसका पार्सले चुरा रहा है। वह बोली — "मेरा बुरा हो। पर मैं इस चोरनी को पकड़ूँगी जरूर। और इसके लिये उसको पछताना पड़ेगा। मैं उसको सिखाऊँगी कि हर एक को

[86] Parsley. (Tale No 10) Day 2, Tale No 1

[87] Pascadozia – name of the woman

[88] Ogre (male) and Ogress (female) – a cruel and terrifying person who eats human beings

[89] Parsley is a kind green leaves to be used for flavor in dishes. See its picture above. It looks like cilantrho but it is different from it.

अपनी थाली में से ही खाना खाना चाहिये न कि उसे दूसरों के प्याले से खेलना चाहिये।"

बेचारी स्त्री बार बार उस बागीचे में जाती रही और पार्सले खाती रही। पर एक दिन उसको ओग्रैस मिल गयी तो वह बहुत गुस्से में बोली — "तो आज मैंने तुम्हें पकड़ ही लिया। तुम चोर तुम रोग। क्या तुम इस बागीचे का किराया देती हो जो तुम इस तरीके से मेरे बागीचे में आती हो और मेरे पौधे चुराती हो। मुझे अपने भगवान की कसम मैं तुम्हें बिना रोम भेजे यहीं तप करवा दूँगी।"

बेचारी पास्काडोज़िया तो यह सुन कर बहुत ही डर गयी और घबरा कर उससे बहाने बनाने लगी कि उसने यह पार्सले भूख की वजह से नहीं चुराया बल्कि किसी शैतान ने उसे यह काम करने पर ललचाया इस डर से कि कहीं मेरे बच्चे के चेहरे पर पार्सले के पौधे न उग आयें।"

ओग्रैस बोली — "शब्द तो हवा में उड़ जाते हैं पर मैं तुम्हारी इस बहाने में नहीं आने वाली। तुमने तो अपनी ज़िन्दगी का बही खाता ही बन्द कर दिया जब तक कि तुम अपना बच्चा मुझे देने का वायदा नहीं करोगी चाहे वह लड़का हो या लड़की।

बेचारी स्त्री ने इस खतरे से बचने के लिये जिसमें वह अपने आपको डाल चुकी थी अपना एक हाथ दूसरे हाथ के ऊपर रखा और वायदा किया कि वह अपना बच्चा उसे दे देगी चाहे वह लड़का हो लड़की ताकि ओग्रैस उसको अभी तो जाने दे।

पर जब उसके बच्चा हुआ तो वह तो लड़की थी। वह इतनी सुन्दर थी कि सबको केवल उसकी तरफ देखने से ही आनन्द मिलता था। उसने उस बच्ची का नाम पार्सले ही रख दिया।

नन्हीं बच्ची दिन ब दिन बढ़ने लगी। अब वह सात साल की हो गयी थी तो उसकी माँ ने उसको स्कूल भेजा। अब हर बार जब भी वह स्कूल जाती तो सड़क पर उसको ओग्रैस दिखायी देती और वह ओग्रैस हमेशा ही उससे कहती — “अपनी माँ से कहना कि वह अपना वायदा याद रखे।”

और वह यह सन्देश बार बार अपने माँ से जा कर कह देती। माँ उस सन्देश को सुनते सुनते इतना थक गयी थी  कि एक दिन उसने पार्सले से कहा — “अगर आज तुझे वह बुढ़िया मिल जाये और तुझे इस गन्दे वायदे की याद दिलाये तो उसको जवाब देना “ले लो।”

अब पार्सले को तो कुछ पता नहीं था तो उसने तो कुछ भी सपने में भी नहीं सोचा था सो जब वह ओग्रैस से दोबारा मिली तो उसने भोलेपन से उसको वही जवाब दे दिया जो जवाब उसको उसकी माँ ने उसे देने के लिये कहा था।

यह सुनते ही बस ओग्रैस ने उसे बालों से पकड़ा और उसे एक जंगल में ले गयी जहाँ अँधेरा इतना ज़्यादा था कि सूरज के घोड़े भी वहाँ तक कभी नहीं पहुँचे थे। वहाँ लड़की को ले जा कर उसने उसे एक मीनार में रख दिया।

यह मीनार उसने अपनी कला से बनायी थी जिसमें न कोई दरवाजा था और न ही कोई सीढ़ी। बस इसमें केवल एक छोटी सी खिड़की थी जिससे वह उस मीनार में पार्सले के बाल पकड़ कर चढ़ती और उतरती थी।

पार्सले के बाल बहुत लम्बे थे उनको वैसे ही इस्तेमाल किया जा सकता था जैसे किसी जहाज़ के नाविक अपने जहाज़ के मस्तूल पर चढ़ते उतरते हैं।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि जब ओग्रैस उस मीनार से उतर कर नीचे गयी तो पार्सले ने अपना सिर खिड़की से बाहर निकाला और अपने बाल धूप में सुखाने के लिये नीचे लटका दिये।

उधर से राजकुमार का बेटा जा रहा था तो उसने वे बाल लटके हुए देखे। वह तो उनकी सुन्दरता को देखता का देखता रह गया। उनके अन्दर सुनहरी लहरें पड़ी हुई थीं और उनके बीच था चमकता हुआ मन को मोह लेने वाला पार्सले का चेहरा।

वह तुरन्त ही उसके प्यार में पड़ गया। वह नीचे खड़ा खड़ा आहें भरने लगा तो पार्सले ने सोचा कि उसको ऊपर बुला लिया जाये। उसने उससे अपनी परेशानी कही और उससे विनती की कि वह वहाँ से छुड़ा कर ले जाये।

लेकिन ओग्रैस की एक जासूस जो बहुत बकबक करती थी हर जगह अपनी नाक अड़ाती थी चाहे उसके मतलब की कोई बात हो या न हो। उसने इस बात को चुपके से सुन लिया। उसने ओग्रैस

को सावधान किया कि वह पार्सले का ध्यान रखे क्योंकि पार्सले दूसरे लोगों से बात करती पायी गयी और उसको उस पर शक था।

ओग्रैस ने अपनी जासूस को इस खबर देने पर बहुत बहुत धन्यवाद दिया और इससे कहा कि वह उस सड़क पर आने जाने वाले को रोक कर रखेगी।

जहॉ तक पार्सले का सवाल था उसको तो वहॉ से बच कर निकलना नामुमकिन था क्योंकि ओग्रैस ने उस पर जादू डाल रखा था। सो जब तक उसके हाथ में रसोईघर की छत में रखी तीन गौल गिरियॉ[90] न हों वह किसी भी तरह से वहॉ से बाहर नहीं जा सकती थी।

पार्सले जो यह सब अपने कान खोल कर छिप कर सुन रही थी उसको लगा कि जरूर ही यहॉ कुछ जरूरी बात हो रही है। जब रात का काला ॲधेरा चारों ओर फैल गया तो राजकुमार अपने तय किये गये समय पर वहॉ आया और लड़की ने अपने बाल नीचे गिरा दिये।

लड़के ने उसके बाल पकड़े और चिल्लाया "मुझे खींचो।" लड़की ने उसे तुरन्त ही ऊपर खींच लिया और यह जानते हुए भी कि उनका असर क्या होगा उसको रसोईघर की छत में से तीन गौल

[90] Translated for "Gall Nuts" – a Gall on a tree is caused by insects that resembles a nut. See its picture above. To know more about it see "Gall Nut" term in Wikipedia

गिरियॉ लाने के लिये कहा। क्योंकि वह खुद तो ओग्रैस के जादू के ज़ोर में थी।

फिर उन्होंने रस्सी की एक सीढ़ी बनायी और दोनों नीचे उतर आये। तुरन्त ही वे शहर की तरफ भाग गये। पर ओग्रैस की जासूस ने उनको उतरते और भागते हुए देख लिया। वह चिल्लायी "हलो" और दूसरे ऐसे शब्द जिससे ओग्रैस की ऑख खुल गयी।

यह देख कर पार्सले भाग गयी वह उसी सीढ़ी से नीचे उतरी जो अभी तक खिड़की से बॅधी हुई थी और उन दोनों के पीछे भागी। उन्होंने जब देखा कि वह उनके पीछे एक छोड़े हुए घोड़े से भी तेज़ भागती चली आ रही है तो उन्होंने छिपने का इरादा छोड़ दिया।

लेकिन अब वे करें क्या। तब उसको याद आयी तीनों गौल गिरियों की। उसने तुरन्त ही एक गौल गिरी निकाल कर अपने पीछे फेंक दी। तुरन्त ही एक कोर्सीकन बुल डौग[91] प्रगट हो गया। उफ़ कितना भयंकर कुत्ता था वह। वह अपना मुॅह खोल कर ओग्रैस की तरफ भौंकता हुआ दौड़ा जैसे वह उसे एक ही बार में खा जायेगा।

पर वह स्त्री बहुत चतुर थी। उसने अपनी जेब में हाथ डाला एक डबल रोटी का टुकड़ा निकाला और कुत्ते की तरफ फेंक दिया जिससे वह उसकी तरफ देख कर अपनी पूॅछ हिलाने लगा और उसका गुस्सा भी कम हो गया।

[91] Corsican Bull Dog

पर उसने उन भागे हुओं के पीछे फिर से भागना शुरू कर दिया। तो पार्सले ने अपने पीछे एक और गिरी फेंक दी। लो इससे तो वहाँ एक भयानक शेर पैदा हो गया जो अपनी पूँछ जमीन पर मारते हुए गर्दन के बालों को झटकते हुए अपने गज भर के जबड़ों को खोलते हुए ओग्रैस को खाने के लिये दौड़ा।

यह देख कर ओग्रैस पलटी जल्दी से एक गधे की खाल उधेड़ी जो वहीं पास में मैदान में चर रहा था और खुद उसे ओढ़ कर शेर की तरफ दौड़ी। शेर को लगा कि यह तो असली गधा है यह देख कर वह इतना डर गया कि वह वहाँ से जितनी जल्दी हो सकता था भाग गया।

ओग्रैस इस दूसरी कठिनाई को पार कर के फिर से दोनों का पीछा करने दौड़ी। उन्होंने जब उसके दौड़ने की आवाज सुनी और उसके पैरों से उड़ता हुआ धूल का बादल देखा तो उनको पता चल गया कि वह अभी भी उनके पीछे आ रही है।

पर वह बुढ़िया तो इसी बात से डर रही थी कि कहीं शेर उसका पीछा करते हुए न आ जाये सो उसने गधे की खाल अभी तक नहीं उतारी थी।

इस बीच पार्सले ने अपने पास की तीसरी और आखिरी गौल गिरी भी फेंक दी। इस बार उससे एक भेड़िया पैदा हो गया जिसने ओग्रैस को कोई नयी चाल खेलने का मौका ही नहीं दिया और उसको एक गधा समझ कर खा लिया।

अब पार्सले और राजकुमार दोनों ही खतरे से बाहर थे। वे दोनों अब शान्ति से चलते हुए राजकुमार के देश चले गये। वहॉ राजकुमार के पिता की मर्जी से दोनों ने शादी कर ली।

ज़िन्दगी के इतने सारे तूफान सहने के बाद में उनको यह सच जानने को मिला —

एक घंटे के लिये भी अगर जहाज़ बन्दरगाह पर खड़ा हो
तो वह सैंकड़ों सालों के तूफान को भूल जाता है

# 11 2–2 तीन बहिनें[92]

यह एक बहुत बड़ा सच है कि जंगल के उसी पेड़ की लकड़ी से ही बड़े लोगों की मूर्तियॉ बनती हैं और उसी पेड़ की लकड़ी से मकान की छतें भी बनती हैं। उसी से राजा का सिंहासन भी बनता है और उसी लकड़ी से चमार की दूकान भी बनती है। एक और अजीब बात यह भी है कि जिन फटे कपड़ों से कागज बनता है जिस पर विद्वानों की अक्लमन्दी की बातें लिखी गयी है और उन्हीं फटे कपड़ों का ताज भी बनता है जो किसी बेवकूफ के सिर पर रखा जाता है।

ऐसी ही कुछ बात बच्चों के बारे में भी कही जा सकती है। एक लड़की अच्छी होती है तो दूसरी बुरी। एक सुस्त होती है तो दूसरी चुस्त। एक सुन्दर होती है तो दूसरी बदसूरत। एक बहुत गुस्से वाली होती है तो दूसरी बहुत दयावान। एक अभागी होती है तो दूसरी खुशकिस्मत जो केवल अच्छी किस्मत ले कर आती है।

इस कहानी में तीन बेटियॉ है जो एक ही मॉ की हैं। पर आप देखेंगे कि किस तरह से उनके व्यवहार में भेद होने की वजह से नीच लड़कियॉ तो दुख उठाती हैं और अच्छी लड़कियॉ ऊपर उठ जाती हैं।

एक बार की बात है कि एक स्त्री थी जिसके तीन बेटियॉ थीं। इनमें से उसकी दो बेटियॉ कुछ अभागिन थीं। उन्हें किसी भी काम में कामयाबी नहीं मिलती थी। वे जो कोई भी काम उठातीं उसमें कहीं न कहीं कुछ न कुछ गलत हो जाता। उनकी सारी आशाओं पर पानी फिर जाता।

पर उसकी जो सबसे छोटी बेटी थी नैला[93] वह बहुत ही अच्छी किस्मत ले कर पैदा हुई थी। मुझे पूरा विश्वास है कि जब वह पैदा

[92] Three Sisters. (Tale No 11) Day 2, Tale No 2
In the Wikipedia list its title is given as “Green Meadows”. Author says that “since there was no relationship of the Title “Green Meadow” that is why he has changed ir to “Three Sisters”.
[93] Nella – name of the youngest daughter of the woman

हुई होगी तब सब चीज़ों ने मिल कर यह सोच लिया होगा कि वे जो कुछ भी उनकी ताकत में होगा वह सब उसको देंगी।

आसमान ने उसको पूरी रोशनी दी थी। शुक्र ने उसको निराली सुन्दरता दी थी। प्यार ने उसे वह ताकत दी कि जो कोई उसे पहली बार देखता वही उससे प्यार करने लग जाता। प्रकृति ने उसे अच्छे ढंग चाल दिये।

वह जो कोई भी काम हाथ में ले लेती वह उसे बड़े अच्छे ढंग से पूरा करती। वह कभी भी नाच के लिये खड़ी नहीं होती पर फिर भी हर एक उसको पसन्द करता।

इसलिये उसकी बहिनें उससे ईर्ष्या करने लगी थीं परन्तु फिर भी वह सबको प्यारी थी और सभी लोग उसके उतने ही भले की इच्छा करते थे जितनी कि उसकी बहिनें उसके न होने की इच्छा करती थीं।

उसी शहर में एक जादू पड़ा राजकुमार रहता था। वह उसकी सुन्दरता से इतना प्रभवित था कि उसने छिप कर उससे शादी कर ली थी। और राजकुमार ने बिना अपनी माँ को शक में डाले, क्योंकि वह एक बहुत ही नीच घराने की स्त्री थी, एक दूसरे के साथ रहने के लिये एक क्रिस्टल का रास्ता बनवा लिया था जो उसके शाही महल से सीधा नैला के कमरे में जाता था। हालाँकि वह आठ मील दूर था।

राजकुमार ने नैला को एक पाउडर दे रखा था कि "जब भी तुम्हें मुझे देखने की इच्छा हो तो तुम इसमें एक चुटकी पाउडर आग में फेंक देना। मैं इस क्रिस्टल के रास्ते से हो कर तुम्हारा चाँदी जैसा चेहरा देखने के लिये तुरन्त ही आ जाऊँगा। इतनी जल्दी जैसे कि कोई चिड़िया आती है।"

यह इन्तजाम करने के बाद कोई रात ऐसी नहीं गयी जिस रात राजकुमार नैला से मिलने न गया हो। वह आता रहा जाता रहा उस क्रिस्टल के रास्ते पर।

एक दिन नैला की बहिनों को जो हमेशा नैला की गतिविधियों पर नजर रखती थीं इस राज़ का पता चल गया। उन्होंने सोचा कि इस खेल को रोकना चाहिये। इस काम को तुरन्त रोकने के लिये वे क्रिस्टल के रास्ते पर गयीं और उसको जगह जगह पर तोड़ दिया।

सो उस रात जब नैला ने अपने पति को बुलाने के लिये वह पाउडर आग में डाला तो साधारणतया तो राजकुमार तुरन्त ही भागता हुआ चला आता था। ऐसा ही उसने अभी भी किया तो क्योंकि उसको रास्ते के टूटे होने का पता नहीं था सो वह बीच रास्ते में ही बहुत घायल हो गया। वह आगे नहीं जा सका और घर वापस लौट गया।

सचमुच यह एक दर्दभरा दृश्य था। उसने शहर के सारे डाक्टरों को बुलाया पर क्योंकि राजकुमार के घाव तो दुनियावी थे पर क्रिस्टल का रास्ता तो जादू का था और वे घाव उस जादू के रास्ते से

हुए थे इसलिये उसके ऊपर इस दुनियाँ की कोई दवा काम नहीं कर रही थी।

जब राजा ने अपने बेटे की यह खराब हालत देखी तो उसने एक फरमान निकाला कि “जो कोई भी राजकुमार को ठीक करेगा तो अगर वह आदमी होगा तो वह उसको आधा राज्य दे देगा और अगर कोई लड़की होगी तो वह उससे उसकी शादी कर देगा।”

जब नैला ने यह सुना तो वह तो राजकुमार के लिये बहुत दुखी हो रही थी सो उसने अपना चेहरा रंगा अपना भेष बदला और बहिनों को बताये बिना वह घर छोड़ कर इससे पहले कि वह मर जाये वह उसको देखने चली गयी।

पर इस समय तक सूरज पश्चिम की तरफ जा रहा था सो चलते चलते उसको रात हो गयी। रात जंगल में हुई थी पास में ही वहाँ एक ओगरे रहता था। सो उसके डर की वजह से वह एक पेड़ पर चढ़ गयी।

इस बीच ओगरे और उसकी पत्नी खाना खाने के लिये मेज पर बैठे। उनकी खिड़की खुली हुई थी ताकि ताजा हवा उनके कमरे में आ सके। उन्होंने पी कर अपने प्याले रखे और फिर रोशनी बुझायी तो भी वे आपस में किसी न किसी के बारे में बात करते ही रहे।

नैला जिस पेड़ पर बैठी थी वह पेड़ वहीं पास में था सो उसने वह सब सुन लिया जो कुछ भी वे बातें कर रहे थे।

और दूसरी बातों के साथ ओगरे की पत्नी ने अपने पति से कहा — "मेरे प्यारे बालों वाली खाल के। मुझे कुछ खबर सुनाओ। दुनियाँ में लोग क्या क्या बातें कर रहे हैं।"

ओगरे बोला — "मेरा विश्वास करो किसी के हाथ साफ नहीं हैं। सब चीज़ें उलट पलट हो रही हैं।"

"ऐसा क्या है।"

"मैं तुम्हें ये मजेदार कहानियाँ सुना सकता हूँ जो दुनियाँ में इधर उधर हो रहा है। जो कोई उस में से एक भी सुन लेता है वह उसी को पागल करने के लिये काफी है।

जैसे किसी हँसोड़िये को इनाम मिल रहा है। समाज के रोग लोगों और कायरों की इज़्ज़त हो रही है। डाकुओं को शरण मिल रही है। और ईमानदारों की तो आजकल कोई पूछ ही नहीं है।

पर ये सब तो छोटी छोटी बातें हैं अब मैं तुम्हें एक बहुत बड़ी बात बताता हूँ कि हमारे राजा के बेटे के साथ क्या हुआ है। उसने क्रिस्टल का एक रास्ता बनवाया जिसको वह एक सुन्दर लड़की से मिलने के लिये इस्तेमाल करता था।

पर किसी तरह से वह हर दिन की तरह से उस रास्ते से जा रहा था कि उसमें से गुजरते हुए घायल हो गया। यह तो मुझे पता नहीं कि कैसे पर किसी ने उस रास्ते को तोड़ दिया। उसी की वजह से वह इतना घायल हुआ कि उसका काफी खून बाहर निकल गया।

अब राजा ने एक फरमान जारी करवाया है कि जो कोई भी उसको ठीक कर देगा तो वह अगर आदमी होगा तो उसको अपना आधा राज्य दे देंगे और अगर कोई लड़की होगी तो उसके साथ उसकी शादी कर देंगे।

पर अब तक सारी कोशिशें बेकार गयी हैं। अगर जल्दी ही कुछ न हुआ तो राजा को उसके दफ़न के लिये तैयार रहना चाहिये।"

नैला ने जब यह सुना कि राजकुमार कैसे घायल हुआ तो वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रो पड़ी। वह अपने आपसे पूछने लगी "वह कौन नीच हो सकता है जिसने वह रास्ता तोड़ा हो और इस दुख की वजह बना हो।"

पर क्योंकि ओगरे अभी बोले जा रहा था तो नैला चुप हो कर फिर उसकी बात सुनने लगी। ओगरे की पत्नी ने पूछा — "क्या यह मुमकिन है कि इस बेचारे राजकुमार के लिये जो अपनी सारी दुनियाँ ही खो चुका हो कोई दवा हो।"

ओगरे बोला — "धीरज रख ओ दादी। धीरज रख। इन डाक्टरों के पास वह दवा नहीं है जो प्रकृति से परे हो। और यह कोई बुखार भी नहीं है जो दवा या खाने के परहेज से ठीक हो जाये। इसके अलावा ये कोई मामूली घाव भी नहीं है जो किसी तेल या मरहम लगाने से ठीक हो जायें।

क्योंकि उस टूटे हुए शीशे के जादू ने वही असर पैदा किया है जो प्याज का रस तीर की लोहे की नोक पर करता है जिससे उससे बने घाव लाइलाज हो जाते हैं। केवल एक ही चीज़ है जो उसकी ज़िन्दगी बचा सकती है। पर यह बात तुम मुझसे बताने के लिये नहीं कहना क्योंकि यह बहुत ही खास चीज़ है।"

ओगरे की पत्नी उस पर चिल्ला कर बोली — "ओ लम्बे दॉत वाले तुम मुझे बताओ न। अगर तुम मुझे मरता नहीं देखना चाहते तो तुम मुझे बताओ न।"

ओगरे यह धमकी सुन कर बोला — "ठीक है ठीक है मैं तुम्हें बताता हूॅ अगर तुम इस बात का वायदा करो तो कि तुम इसको किसी भी ज़िन्दा आदमी को नहीं बताओगी। क्योंकि अगर तुम ऐसा करोगी तो यकीनन तुम हमारी ज़िन्दगी ले लोगी अैर साथ में हमारा घर भी बर्बाद करोगी।"

ओगरे की पत्नी बोली — "नहीं नहीं। डरो नहीं। मेरे प्यारे प्यारे पति। क्योंकि तुम अभी थोड़ी ही देर में सींग वाले सूअर, पूॅछ वाले बन्दर और ऑखों वाले मोल[94] तो देख सकते हो पर मेरे होठों से एक शब्द भी बाहर जाते नहीं सुनोगे।"

ऐसा कह कर उसने एक हाथ दूसरे हाथ पर रख कर कसम खायी। ओगरे बोला — "तब तुम सुनो। ऐसी कोई चीज़ न तो

[94] A Mole is a big large rat type animal. See its picture above.

आसमान के नीचे है और न जमीन के ऊपर है जो राजकुमार को मौत के फन्दे से बचा सके – सिवाय हमारी चर्बी के। अगर उसके घावों पर यह लगा दिया जाये तो वह उसकी आत्मा को कैद कर सकता है जो अब किसी भी समय अपना घर छोड़ने वाली है।

नैला जिसने ये सब बातें सुन ली थीं उनको अपनी बातें खत्म करने का समय दिया। फिर वह पेड़ पर से उतरी और अपना दिल पक्का कर के ओगरे के घर का दरवाजा खटखटाया।

वह चिल्लायी — "ओ मेरे अच्छे लोगों। मुझे कुछ भीख दीजिये कुछ दया चाहिये। एक गरीब अभागिन पर दया कीजिये जो अपने ही देश से अपनी बदकिस्मती की वजह से बाहर निकाल दी गयी है। मुझे कोई सहायता करने वाला भी नहीं है। मुझे यहाँ इस जंगल में रात हो गयी है। मैं ठंड और भूख से मरी जा रही हूँ।"

इस तरह से चिल्लाती चिल्लाती वह ओगरे के मकान का दरवाजा खटखटाती रही खटखटाती रही। बहरा बना देने वाली यह आवाज सुन कर ओगरे की पत्नी उसको आधी डबल रोटी फेंक कर भगाने जा रही थी।

पर ओगरे जो आदमी के माँस खाने का बहुत ज़्यादा लालची था – यानी जैसे गिलहरी गिरी खाने की, भालू शहद खाने का, बिल्ली मछली खाने की, भेड़ नमक खाने की, गधा भूसा खाने का, उनसे भी ज़्यादा, सो उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह उस बेचारी

को अन्दर आने दे। क्योंकि अगर वह बाहर सोयी तो क्या पता उसे कोई भेड़िया ही खा जाये।

थोड़े में कहो तो उसने अपनी पत्नी को इस बारे में इतना कहा कि आखिर उसकी पत्नी ने उस लड़की के लिये अपने घर के दरवाजे खोल ही दिये।

उसके लिये सारे दानों का वायदा करते हुए वह उसकी तरफ भूखी ऑखों से देखता रहा। ओगरे और उसकी पत्नी ने इतनी पी ली थी कि वे लोग काफी बेहोश हो चुके थे सो वे सोने चले गये।

जब वे खूब गहरी नींद में सोये हुए थे तो नैला उठी और आलमारी से एक चाकू निकाल कर उसने उनका मॉस काट लिया। फिर उसने उसकी चर्बी एक छोटी शीशी में भरी और सीधी राजा के दरबार में चली गयी।

वहॉ जा कर उसने राजा से कहा कि वह राजकुमार का इलाज कर सकती है। राजा तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया। वह उसको अपने बेटे के कमरे में ले गया।

जैसे ही उसने उसके घावों पर वह चर्बी लगायी तो वे घाव तो वैसे ही भरते ही चले गये जैसे पानी आग पर डालने से आग बुझती चली जाती है। और वह मछली जैसा तन्दुरुस्त हो गया।

राजा ने जब यह देखा तो उसने अपने बेटे से कहा कि “यह भली लड़की तो उस इनाम के काबिल है जो हमने फरमान में निकलवाया था। अब तुम्हें इससे शादी कर लेनी चाहिये।”

राजकुमार बोला — “यह बिल्कुल बेकार की बात है क्योंकि मेरे शरीर में कोई ऐसा दिल का भंडारघर नहीं है जिसमें से मैं कई दिल किसी को दे सकूँ। मैंने अपना दिल पहले से ही किसी को दिया हुआ है। और वही दूसरी लड़की मेरे दिल की मालिक है।”

यह सुन कर नैला बोली — “तुमको ऐसी लड़की के बारे में तो सोचना ही नहीं चाहिये जो तुम्हारे लिये इतनी बदकिस्मती ले कर आयी हो।”

राजकुमार बोला — “मेरी बदकिस्मती तो उसकी बहिनें ले कर आयी हैं। इस सबके लिये उनको पछताना पड़ेगा।”

नैला ने पूछा — “तो क्या तुम अभी भी उसे चाहते हो।”

राजकुमार बोला — “अपनी ज़िन्दगी से भी ज़्यादा।”

नैला बोली — “तब तुम मुझे अपने गले लगा लो क्योंकि मैं ही तुम्हारे दिल की आग हूँ।”

पर राजकुमार ने जब उसका चेहरा देखा तो वह उसे कुछ काला काला सा लगा। वह बोला — “मैं तुम्हें आग की जगह कोयला समझता हूँ इसलिये तुम मुझसे अलग रहो। तुम मुझे काला मत कर देना।”

नैला को लगा कि उसने उसे पहचाना नहीं सो उसने पानी भरा एक बर्तन मँगवाया और अपना मुँह धोया। जैसे ही कालौंस का बादल छँटा तो सूरज चमकने लगा। राजकुमार ने तुरन्त ही उसे

पहचान लिया और उसे गले से लगा लिया और उसे अपनी पत्नी स्वीकार किया।

राजकुमार ने नैला की बहिनों को ओवन में फिंकवा दिया और इस तरीके से पुरानी कहावत साबित की —

कोई बुराई कभी सजा से नहीं बचती

# 12 2–3 वायलैट[95]

ईर्ष्या एक ऐसी हवा है जो इतनी ज़ोर से बहती है कि भले आदमियों की इज़्ज़त को यूँ ही इधर उधर फेंक देती है और खुशकिस्मती की पैदावार के स्तर पर ला देती है। जब किसी को ईर्ष्या जमीन के स्तर तक ला देती है तो अक्सर यह देखा गया है कि भगवान से मिली हुई यह सजा उसको ऊपर उठने में सहायता करती है। जैसा कि आप इस कहानी में देखेंगे जब आप यह कहानी सुनेंगे जो अब मैं आपसे कहने जा रही हूँ।

एक बार की बात है कि एक भला आदमी रहता था जिसका नाम था कोला अनीलो।[96] कोला अनीलो के तीन बेटियॉ थीं – रोज़, पिंक और वायलैट।

इनमें से कोला की सबसे छोटी बेटी वायलैट सबसे सुन्दर थी। वह इतनी सुन्दर थी कि वह तो बस प्रेम की चाशनी जैसी लगती थी हर उस देखने वाले के दिल को खुश कर देती थी जिसका दिल दुखी होता था।

राजा का बेटा उसको बहुत प्यार करता था। जब कभी वह उसके घर के पास से निकलता जहॉ वे तीनों लड़कियॉ काम करती रहतीं तो हमेशा ही वह अपना टोप उठा कर उससे "गुड डे वायलैट कहता चला जाता।

वायलैट भी उसको जवाब देती "गुड डे ओ राजकुमार। मैं तुमसे ज़्यादा जानती हूँ।"

---

95 Violet. (Tale No 12) Day 2, Tale No 3

96 Cola Aniello – name of the man

यह सुन कर उसकी बहिनें बुड़बुड़ाती हुई उससे फसुफुसाती हुई कहती — "तुम बहुत ही बदतमीज लड़की हो। कभी तुम राजकुमार को गुस्सा दिला दोगी।"

पर वायलैट उनकी बातों पर कोई ध्यान ही नहीं देती कि वे क्या कह रही हैं। सो उन्होंने उसकी शिकायत अपने पिता से की कि वह बात करने में कुछ ज़रा ज़्यादा ही हिम्मत वाली थी।

कि उसने राजकुमार को बहुत ही बदतमीजी से जवाब दिया जैसे वह उसके बराबर की थी। कि किसी दिन वह बड़ी मुश्किल में पड़ने वाली है और फिर उसे अपने किये की सजा भुगतनी पड़ेगी।

कोला अनीलो एक दूर की समझ रखने वाला आदमी था। आगे कोई शरारत हो इसको रोकने के लिये वायलैट को उसकी चाची के घर रहने के लिये भेज दिया।

अब अगली बार रोज की तरह से जब राजकुमार उधर से गुजरा तो उसे वायलैट कहीं दिखायी नहीं दी। अपनी प्यारी चीज़ को वहाँ न पा कर तो वह ऐसा हो गया जैसे बुलबुल अपने घोंसले से अपने बच्चों के चोरी हो जाने से चारों तरफ इधर उधर बैठती फिरती है और उन्हें ढूँढती रहती है।

पर उसके कान हमेशा खुले रहते सो उसको पता चल गया कि कम से कम उसकी वायलैट अभी ज़िन्दा है और कहाँ रह रही है। वह उसकी चाची के घर गया और उससे पूछा — "मैडम क्या आपको पता है कि मैं कौन हूँ। और मेरे पास कितनी ताकत है।

सो अब यह हमारे और आपके बीच की बात है कि आप मेरा एक काम कर दें और उसके बदले में कुछ भी माँग लें।"

चाची बोली — "कुछ भी काम जो आप चाहें। मैं आप ही की गुलाम हूँ।"

राजकुमार बोला — "मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिये पर एक बार आप मुझे वायलैट को चूम लेने दीजिये।"

चाची बोली — "बस अगर तुम्हें यही कुछ चाहिये तो नीचे बागीचे में जा कर कमरे में छिप जाओ। मैं वायलैट को तुम्हारे पास भेजने का कोई बहाना ढूँढती हूँ।"

जैसे ही राजकुमार ने यह सुना तो वह बागीचे में जा कर उसके नीचे वाले कमरे में छिप गया। चाची ने बहाना किया जैसे वह कोई कपड़ा काटना चाहती थी सो उसने वायलैट से कहा — "प्यारी वायलैट। ज़रा नीचे वाले कमरे में जा कर वहाँ से गज़[97] तो ले आओ।"

सो वायलैट नीचे वाले कमरे में चली गयी जैसा कि उसकी चाची ने उससे कहा था। पर जब वह कमरे में घुसी तो उसने वहाँ कुछ खतरा देखा तो बहुत डर गयी। उसने जल्दी से गज़ उठाया और उस कमरे से ऐसे निकल भागी जैसे कोई बिल्ली निकल भागती है।

राजकुमार बेचारा वहाँ शर्म के मारे बेइज़्ज़त सा खड़ा रह गया।

---

[97] Gaz means "yard" measuring tape

जब बुढ़िया ने वायलैट को इतनी तेज़ी से भागते आते देखा तो उसे शक हो गया कि उसकी चाल काम नहीं की सो उसने लड़की से फिर कहा — "अरे धागा तो रह ही गया। तुम दोबारा नीचे जाओ और फलॉ फलॉ धागा ले आओ। वह आलमारी के ऊपर वाले तख्ते पर रखा है।"

सो वायलैट फिर भागी गयी और आलमारी के ऊपर वाले तख्ते से धागे का गोला उठाया और राजकुमार के हाथ से ईल मछली की तरफ से फिसल कर वापस आ गयी।

कुछ देर बाद चाची ने उसको फिर से नीचे भेजा कि वह नीचे से कैंची ले आये। वह फिर नीचे भागी गयी और कैंची लो कर वहॉ से ऐसे भागी जैसे कोई कुत्ता जाल में से निकल कर भागता है।

पर जब वह कैंची ऊपर ले कर आयी तो उसने अपनी चाची का एक कान काट डाला और बोली "यह लो तुम अपनी मेहनत का इनाम। अगर मैं तुम्हारी नाक नहीं काट रही हूँ तो वह केवल इसलिये ताकि तुम अपने बेइज़्ज़ती के खुशबू सूँघ सको।"

यह कह कर वह वहॉ से कूदती फॉदती घर भाग गयी। चाची को उसने अपने कटे कान से आराम पाने के लिये छोड़ कर और राजकुमार को "मुझे अकेला छोड़ दो।" सोचने के लिये।

कुछ दिनों बाद राजकुमार फिर से वायलैट के पिता के घर के पास से निकला। उसको खिड़की पर खड़ा देख कर जहॉ वह पहले

भी खड़ी रहा करती थी उसने अपना पुराना गाना गाया — "गुड डे गुड डे वायलैट।"

उसने भी पारिश क्लर्क की सी तेज़ी से जवाब दिया — "गुड डे ओ राजकुमार। मुझे तुमसे ज़्यादा पता है।"

पर वायलैट की बहिनों को पहले की तरह से आज भी उसका यह जवाब सुन कर अच्छा नहीं लगा। वे अब यह सोचने लगीं कि उससे कैसे छुटकारा पाया जाये।

उनके महल की एक खिड़की एक ओगरे के बागीचे की तरफ खुलती थी सो उन्होंने सोचा कि वे उस बेचारी को उस बागीचे में भेज दें सो उन्होंने अपनी उस धागे की लच्छी को नीचे गिरा दिया जिससे वे रानी के लिये परदा बना रही थीं।

जैसे ही वह धागा नीचे गिरा तो उसकी बहिनें चिल्लायीं — "ओह हम तो बर्बाद हो गये। अब हम अपना काम समय से पूरा नहीं कर पायेंगी। वायलैट तुम तो हम सबमें छोटी और हल्की हो क्या तुम किसी रस्सी के सहारे नीचे जा कर हमारे धागे का गोला ले कर आओगी?"

वायलैट से उनका दुख देखा नहीं गया वह तुरन्त ही नीचे जाने के लिये तैयार हो गयी। बस एक रस्सी उसकी कमर में बॉधी गयी और उसको नीचे उतार दिया गया। जैसे ही वह ओगरे के बागीचे में नीचे उतरी बहिनों ने उसकी कमर में बॅधी रस्सी हाथ से छोड़ दी।

अब हुआ यह कि इत्तफाक से उसी समय ओगरे अपना बागीचा देखने घर से बाहर निकला तो जमीन की नमी की वजह से उसको छींक आ गयी।

उसकी छींक की आवाज इतनी अचानक थी और इतनी ज़ोर की थी कि उस छींक की आवाज सुन कर वायलैट ने इधर उधर देखा तो वह तो डर गयी और चिल्लायी "ओ माँ मुझे बचाओ।"

यह आवाज सुन कर ओगरे ने इधर उधर देखा तो अपने पीछे एक सुन्दर लड़की को देखा। उसको देख कर उसने उसका बड़ी इज़्ज़त के साथ स्वागत किया। उसको अपनी बेटी समझ कर उसने उसको तीन परियाँ दे दीं और उनसे उसकी देखभाल करने के लिये कह दिया। उसने उनसे कहा कि वह उसको चैरी खिला खिला कर बड़ा करें।

जब राजकुमार को वायलैट दिखायी नहीं दी और न उसको उसकी कोई खबर ही मिली तो उसको इतना दुख हुआ कि रो रो कर उसकी आँखें सूज गयीं। चेहरा पीला पड़ गया। होठ सूख गये।

बहुत ढूँढने पर भी उसको खोजने के लिये ऊँचे से ऊँचा इनाम रखने पर भी जब उसको उसका कोई पता नहीं चला तो वह खुद उसका पता लगाने के लिये निकला। बहुत कोशिशों के बाद उसे पता चला कि वह ओगरे के पास है।

तुरन्त ही उसने ओगरे को बुलवा भेजा और उसको बताया कि वह बहुत बीमार है इसलिये वह उसके बागीचे में एक दिन और एक रात गुजारना चाहता है और इसकी इजाज़त चाहता है।

उसने उससे यह भी कहा कि कोई छोटा सा कमरा ही वहाँ उसके रहने के लिये काफी होगा।

अब ओगरे क्योंकि राजकुमार के पिता के राज्य में रहता था इसलिये वह उसकी इस छोटी सी प्रार्थना को अस्वीकार नहीं कर सका। उसने अपना पूरा घर उसको सौंप दिया कि वह वहाँ कहीं भी रह सकता था। और अगर यह भी उसको कम पड़ता हो तो उसकी ज़िन्दगी भी उसके लिये हाजिर थी।

राजकुमार ने उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया। खुशकिस्मती से उसको वायलैट के कमरे के पास ही एक कमरा मिल गया।

शाम के बाद जब रात सितारों से खेलने के लिये आ पहुँची तो राजकुमार ने देखा कि वायलैट ने अपने कमरे का दरवाजा खुला छोड़ दिया है क्योंकि उन दिनों गर्मियाँ थीं और वह जगह सुरक्षित थी। वह चोरी से बिल्कुल चुपचाप उसके कमरे में चला गया।

उसने वायलैट की बाँह पकड़ी और उसमें दो चुटकियाँ भरीं। इससे वायलैट की आँख खुल गयी वह चिल्लायी "ओह पिता जी यहाँ कितने पिस्सू हैं।"

यह कह कर वह दूसरे पलंग पर सोने चली गयी। राजकुमार ने वहाँ भी उसके साथ यही किया। वह भी फिर से उसी तरह से

चिल्लायी। फिर पहले उसने अपना गद्दा बदला फिर उसकी चादर बदली। यह खेल सारी रात चलता रहा जब तक सुबह नहीं हो गयी।

जब लोगों को यह खबर मिली कि सूरज अभी ज़िन्दा है तो सारे आसमान पर जो दुख छाया हुआ था वह हट गया है। सो जैसे ही दिन निकला राजकुमार फिर से उस घर के सामने से गुजरा। लड़की को दरवाजे के पास खड़ा देख कर उसने फिर वही कहा — "गुड डे वायलैट गुड डे।"

वायलैट ने फिर वही जवाब दिया — "गुड डे राजकुमार। मैं तुमसे ज़्यादा जानती हूँ।"

अबकी बार राजकुमार ने उसे जवाब दिया — "ओह मेरे बाप। कितने सारे पिस्सू हैं।"

जैसे ही वायलैट ने यह सुना वह फौरन जान गयी कि पिछली रात को यह राजकुमार ही था जो उसको तंग कर रहा था। वह तुरन्त ही वहाँ से भागी गयी और यह बात जा कर परियों को बतायी।

परियों ने कहा — "अगर यही वह है तो हमउसकी करनी का फल उसको जरूर देंगे। अगर इस कुत्ते ने तुम्हें काटा है तो हम उसका एक बाल ले लेंगे। अगर उसने तुम्हारी एक चीज़ ली है तो हम उसको तुम्हें डेढ़ चीज़ देने पर मजबूर कर देंगे।

बस ओगरे को तुम अपने लिये एक स्लिपर बनाने के लिये कह दो जिस पर घंटियाँ लगी होंगी और बस फिर सब हमारे ऊपर छोड़ दो। हम उससे उसकी इस शैतानी की अच्छी कीमत लेंगे।"

वायलैट जिसको बदला लेने की बहुत इच्छा थी तुरन्त ही ओगरे के पास पहुँची और उसको अपने लिये एक स्लिपर बनाने के लिये राजी कर लिया।

अब उन्होंने आसमान को अपना चेहरा फिर से काले टफ़ैटा से ढक लेने तक इन्तजार किया। फिर वे चारों एक साथ राजकुमार के घर गये जहाँ पहुँच कर परियाँ और वायलैट सब राजकुमार के कमरे में छिप गयीं।

फिर जैसे ही राजकुमार लेट कर सोया तो परियों ने शोर मचाना और कूदना शुरू कर दिया। वायलैट ने इतनी तेज़ी के साथ पैर पटकने शुरू कर दिये कि उसकी एड़ियों और घंटियों की आवाज से राजकुमार डर के मारे जाग गया और चिल्लाया "ओ माँ मुझे बचाओ।"

जब राजकुमार इस तरह से दो तीन बार चिल्ला चुका तो वे सब चुपके से वहाँ से चली गयीं।

अगली सुबह राजकुमार फिर बागीचे में घूमने के लिये गया क्योंकि वह वायलैट को देखे बिना तो रह ही नहीं सकता था क्योंकि वह तो गुलाबी में भी गुलाबी थी। उसने उसको दरवाजे के पास खड़े देखा तो फिर कहा — "गुड डे वायलैट।"

वायलैट ने फिर वही जवाब दिया — "गुड डे राजकुमार। मैं तुमसे ज़्यादा जानती हूँ।"

इस पर राजकुमार बोला — "ओह मेरे बाप। यहाँ कितने सारे पिस्सू हैं।"

वायलैट बोली — "ओ माँ मुझे बचाओ।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो उसने वायलैट से कहा — "तुम जीत गयीं। तुम्हारी हाजिरजवाबी मुझसे ज़्यादा अच्छी है। मैं हार गया तुम जीत गयीं। पर अब मैं तुम्हें जानने से ज़्यादा देख चुका हूँ इसलिये बस अब मैं तुमसे कोई बहस किये बिना ही शादी करना चाहता हूँ।"

सो उसने ओगरे को बुलाया और उससे कहा कि वह वायलैट से शादी करना चाहता है। ओगरे ने कहा "मेरा इस बात से कोई मतलब नहीं है। क्योंकि मैंने आज सुबह ही सुना है कि वायलैट कोला अनीलो की बेटी है।"

यह सुन कर राजकुमार ने कोला अनीलो को बुलवाया और उससे उसकी बेटी की अच्छी किस्मत के बारे में बताया। बस इसके बाद शादी की दावत की तैयारियाँ शुरू हो गयीं। दोनों की शादी खूब धूमधाम से हुई।

सुन्दर लड़की की शादी तो जल्दी हो जाती है न।

# 13 2–4 पिप्पो[98]

कृतघ्नता एक कील की तरह से है जिसे अगर तमीज़ के पेड़ में गाड़ दिया जाये तो उससे तमीज़ का पेड़ सूखने लगता है। यह एक ऐसी टूटी हुई नहर है जो प्रेम की नींव को खोखला कर देती है। कालिख का एक डला खाने की प्लेट में पड़ कर उसका स्वाद और खुशबू सब नष्ट कर देता है। यह बात तो रोजमर्रा के कामों में देखा जा सकता है। ऐसी ही एक कहानी मैं आप सबको सुनाने जा रही हूँ।

एक बार की बात है कि मेरे प्यारे शहर नैपिल्स में एक ऐसा बूढ़ा रहता था कि उसके जैसा कोई और गरीब नहीं था। वह बेचारा इतना अभागा था इतना नंगा था इतना हल्का था कि उसकी जेब में एक सिक्का भी नहीं था। वह पिस्सू की तरह से नंगा घूमता था।

अपनी जिन्दगी की टॅागों को इतना लड़खड़ाता देख कर उसने अपने दोनों बेटों ओराटीलो और पिप्पो[99] को अपने पास बुलाया और उनसे कहा — “मुझे प्रकृति का कर्ज चुकाने के लिये बुलावे का दिन आ गया है। मेरा यकीन करो कि मुझे दुखों का और दुश्मनों का यह घर छोड़ने में बहुत खुशी हो रही है।

[98] Pippo. (Tale No 13) Day 2, Tale No 4
[Similar to “Puss in Boots” read this and more such stories in “Joota Pahne Billa Jaisi Kahaniyan” by Sushma Gupta
[99] Oratiello and Pippo – names of the old man’s two sons.

पर मैं अपने पीछे अपने दो बेटे छोड़ कर जा रहा हूँ जो एक चर्च के बराबर बड़े हैं। जिनमें कोई भी टॉका नहीं लगा है[100]। जो इतने साफ हैं जितना की नाई का तसला।

वे किसी सार्जेन्ट की तरह से तेज़ हैं। वे इतने सूखे हैं जितनी कि एक आलूबुखारे की गुठली होती है। वे इतने हल्के हैं कि उनको एक मक्खी भी अपने पैरों पर ले कर उड़ सकती है। ताकि तुम लोग अगर **100** मील भी दौड़ो तो भी तुमसे एक सिक्का भी न गिरे।

मेरी बदकिस्मती ने ही मुझे इतना गरीब बनाया है कि मैं एक कुत्ते की ज़िन्दगी जी रहा हूँ। जैसा कि तुम लोग जानते हो मैं सारी उम्र भूखा ही रहा हूँ और सोते समय भी मेरे पास कोई मोमबत्ती नहीं रही।

फिर भी अब मैं क्योंकि मर रहा हूँ तो मैं तुम लोगों के लिये अपने प्यार की कुछ निशानी छोड़ जाना चाहता हूँ। सो ओराटीलो तुम जो मेरे सबसे बड़े बेटे हो यह छलनी लो जो दीवार पर टॅगी हुई है। तुम इससे अपनी रोजी रोटी कमाना। और तुम मेरे छोटे बेटे। तुम यह बिल्ली लो और अपने पिता को याद रखना।"

इतना कह कर उसका गला रुकने लगा वह बोला — "अब रात हो गयी है। भगवान तुम्हारे ऊपर दया करें।"

---

[100] Means "there is no vice in them"

ओराटीलो ने अपने पिता को उधार ले कर दफ़नाया। चलनी उठायी और इधर उधर घूमता चल दिया ताकि वह अपनी रोजी रोटी कमा सके। जितना ज़्यादा वह घूमता था वह उतना ही ज़्यादा कमाता था।

पर पिप्पो का क्या हुआ?

उसके पास तो केवल एक बिल्ली ही थी। जब वह बिल्ली को लिये हुए जा रहा था तो बोलता जा रहा था — "उँह। देखो मेरे पिता जी मेरे लिये क्या छोड़ गये हैं। केवल एक बिल्ली ही न। मैं अपनी रोटी तो कमा नहीं सकता और वह सोचते हैं कि मैं दो को खिला दूँगा। किसने इतनी बदनसीब विरासत देखी होगी।"

बिल्ली ने जब पिप्पो का यह रोना धोना सुना तो वह बोली — "तुम बिना किसी बात के परेशान हो रहे हो। तुम्हारी तो किस्मत बहुत अच्छी है। तुम्हारे लिये तुम्हारी खुशकिस्मती तो तुम्हारी जेब में रखी है। अगर तुम मुझे छोड़ दो तो मैं तुमको अमीर बनाऊँगी।"

पिप्पो उसकी यह बात सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने तीन चार बार अपना हाथ उसके ऊपर फेरा और उसकी बार बार प्रशंसा करने लगा। यह सब देख कर बिल्ली को भी पिप्पो पर दया आ गयी।

हर सुबह जब सूरज अपने सुनहरे कॉटे पर रोशनी का चारा ले कर रात की मछली पकड़ने के लिये आता था तो बिल्ली समुद्र के किनारे चली जाती। वहॉ पहुँच कर वह बहुत बढ़िया मछली

पकड़ती और राजा के पास ले जाती और कहती — "मेरे लौर्ड पिप्पो ने जो योर मैजेस्टी के बहुत ही वफादार नौकर हैं यह मछली बहुत ही आदर के साथ आपको भेजी है और कहलवाया है कि "बड़े राजा को एक छोटी सी भेंट।"

यह सुन कर राजा ऐसे मुस्कुराया जैसे कि वह हर भेंट लाने के लिये मुस्कुराता और उससे कहा — "इस लौर्ड जिसको मैं नहीं जानता कहना कि मैं उसका दिल से धन्यवाद देता हूँ।"

बिल्ली फिर से दलदल या खेतों की तरफ भाग जाती और जब बहेलिये चिड़ियें मार कर लाते तो वह उनमें से कुछ को उठा लाती और उसी सन्देश के साथ राजा को ला कर दे देती। राजा भी उसको अपना वही सन्देश दे कर वापस भेज देता।

बिल्ली यह चाल कई दिनों तक खेलती रही कि एक दिन राजा ने उससे कहा — "मैं लौर्ड पिप्पो का दिल से धन्यवाद करता हूँ पर अब मैं उनको जानना चाहता हूँ ताकि मैं उनकी दया का कुछ हिस्सा उनको लौटा सकूँ।"

बिल्ली बोली — "लौर्ड पिप्पो की इच्छा भी यही है कि वह लौर्ड मैजेस्टी के ताज के लिये अपनी जान भी दे दें। कल सुबह जब सूरज निकल कर अपनी आग खेतों पर बिखेर देगा वह आपकी सेवा में आयेंगे।"

सो अगले दिन जब सुबह हुई बिल्ली राजा के पास गयी और बोली — "सर योर मैजेस्टी। मेरे मालिक लौर्ड पिप्पो आपके पास न

आने के लिये आपसे माफी चाहते हैं क्योंकि कल रात ही उनके नौकरों ने उनको लूट लिया। यहाँ तक कि उनको पास तो अब पहनने के लिये एक कमीज भी नहीं बची है।"

जब राजा ने यह सुना तो उसने अपने नौकरों से अपने कपड़े निकलवाये और उनमें से कई जोड़े और बिस्तर की चादरें आदि लौर्ड पिप्पो के लिये भेजे। दो घंटे के अन्दर अन्दर ही लौर्ड पिप्पो राजा के सामने हाजिर थे।

राजा ने उनके हजारों धन्यवाद दिये अपने पास बिठाया और उनको बहुत ही बढ़िया दावत खिलायी।

जब वे लोग खाना खा रहे थे तो पिप्पो बार बार बिल्ली की तरफ देखता और उससे कहता — "मेरी प्यारी बिल्ली। भगवान से प्रार्थना करो कि मेरे वे पुराने चिथड़े कपड़े कहीं खो न जायें।"

तो बिल्ली बोली — "चुप रहो यहाँ कम से कम ऐसी गरीबी वाली बातें न करो।"

राजा उनकी बातों को जानना चाह रहा कि वे किस बारे में बात कर रहे थे तो बिल्ली बोली — "लौर्ड को अभी अभी एक छोटे से नीबू से प्यार हो गया है।"

यह सुन कर राजा ने तुरन्त ही अपने आदमियों को बागीचे भेज कर नीबुओं की एक टोकरी मँगवा दी। पर पिप्पो अपनी फिर उसी बात पर आ गया – अपने पुराने कोट और कमीज की बातों पर। बिल्ली ने इस बारे में उसको फिर से सावधान किया।

राजा ने फिर पूछा कि क्या मामला है तो बिल्ली को उसकी इस बदतमीजी के लिये फिर से कोई बहाना बनाना पड़ा।

जब उन सबने खाना खा लिया और थोड़ी बहुत बातें भी कर लीं तो पिप्पो ने जाने की इजाज़त माँगी। पिप्पो तो वहाँ से चला गया पर बिल्ली वहीं रह गयी राजा के पास। वह पिप्पो की योग्यता अक्लमन्दी और फैसला लेने की होशियारी के बारे में राजा से काफी देर तक बात करती रही।

इसके अलावा उसने राजा को यह भी बताया कि लौर्ड पिप्पो के पास रोम और लोम्बार्डी[101] में कितनी सारी जमीन है। इससे वह तो किसी अच्छे खासे राजा की बेटी से शादी कर सकते हैं।

इस पर राजा ने उससे पूछा कि उसके पास और क्या क्या है। बिल्ली ने बताया कि अभी तक उनकी चल सम्पत्ति तो कोई गिन ही नहीं पाया है। इस आदमी के घर में क्या क्या है यह तो इसको खुद भी नहीं पता।

अगर राजा को यह बात जाननी हो तो राजा बस एक काम कर सकता था वह यह कि वह अपने कुछ दूत इस बिल्ली के साथ भेज सकता था जो यह बात साबित कर देती कि दुनियाँ भर में उसकी सम्पत्ति के बराबर तो किसी के पास भी सम्पत्ति नहीं है।

तब राजा ने अपने कुछ भरोसे के लोग बुलाये और उनसे कहा कि वे बिल्ली की बात की सच्चाई का पता लगा कर लायें। सो वे

[101] Names of places in Italy

बिल्ली के पीछे पीछे चल दिये। समय समय पर बिल्ली उनके लिये रास्ते में कुछ खाने का इन्तजाम करने के बहाने उनसे कभी कभी आगे निकल जाती पर फिर वापस आ जाती।

जैसे ही वे सब राज्य की सीमा से बाहर निकले उनको पहले एक भेड़ों का झुंड मिला फिर गायों का झुंड मिला फिर घोड़ों का एक झुंड मिला और सबसे बाद में सूअरों का एक झुंड मिला।

वह उनके रखवालों के पास जाती और कहती — "इनकी ठीक से देखभाल करना। पीछे डाकुओं का एक झुंड आ रहा है जो देश की हर चीज़ बाहर ले जाना चाहते हैं। तो उनके गुस्से से अगर तुम बचना चाहते हो तो उनसे कह देना कि ये सब लौर्ड पिप्पो का है तो कोई तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ेगा।

यह बात उसने हर खेत वाले से भी कही सो राजा के लोग जहॉ कहीं भी गये लोग उनसे एक ही बात कह रहे थे कि "वह सब लौर्ड पिप्पो का है।"

आखिर जब वे पूछते पूछते थक गये तो राजा के पास लौट गये और जा कर उसको बताया कि लौर्ड पिप्पो के पास तो खजाना ही खजाना है।

यह जानने के बाद राजा ने बिल्ली को एक बहुत बढ़िया शराब पिलाने का वायदा किया अगर वह लौर्ड पिप्पो के तरफ से रिश्ता बना दे। बिल्ली अब दोनों के बीच शटल की तरह घूमने लगी और अन्त में उसने दोनों की शादी करवा दी।

लौर्ड पिप्पो आया और राजकुमारी से शादी कर ली राजा ने भी उसको अपने राज्य का बहुत सारा हिस्सा दिया। यह सब एक महीने तक चला।

एक महीने बाद पिप्पो ने अपनी दुलहिन को अपने घर ले जाने की इजाज़त मॉगी। राजा अपनी बेटी की विदा के लिये उसको अपने राज्य की सीमा तक छोड़ने गया। वहॉ से लौर्ड पिप्पो लोम्बार्डी की तरफ चला गया जहॉ उसने बिल्ली की सलाह के अनुसार बहुत बड़ा जायदाद खरीदी और "बैरन"[102] बन गया।

पिप्पो ने देखा कि वह तो अब बहुत बड़ा आदमी बन गया है बिल्ली को बहुत बहुत धन्यवाद दिया। उसने यह भी कहा कि वह तो अपनी ज़िन्दगी सब कुछ उसी की दी हुई समझता है बल्कि वह तो अपने पिता से ज़्यादा इस बिल्ली का आदर करता है। इसलिये उसने कहा कि उसकी ज़िन्दगी और जायदाद को वह जैसे उसकी खुशी हो वैसे रखे।

इसके अलावा उसने बिल्ली से यह भी कहा कि उसके मरने के बाद उसके शरीर को सुरक्षित करवा कर एक सोने के ताबूत में रखवा कर अपने कमरे में रख लेगा ताकि उसकी याद हमेशा उसके सामने रहे।

---

[102] Baron – Baron is a rank of nobility or title of honour in England, often hereditary. Its female equivalent is Baroness.

बिल्ली ने उससे जब अपनी इतनी तारीफ सुनी तो तीन दिन गुजरने से पहले ही उसने मरने का बहाना किया। वह बागीचे में जा कर पैर फैला कर लेट गयी।

जब पिप्पो की पत्नी ने उसे ऐसे लेटे हुए देखा तो वह चिल्लाती हुई अपने पति के पास गयी "देखो देखो। कितनी बदकिस्मती की बात है कि हमारी बिल्ली मर गयी है।"

पिप्पो बोला — "उसके साथ शैतान को भी मरने दो। वह बजाय हमारे उसके साथ मरे तो ज़्यादा अच्छा है।"

पत्नी बोली "पर अब हम इसका क्या करें।"

पिप्पो बोला — "उसको टॉग से पकड़ कर उठाओ और बाहर फेंक दो।"

बिल्ली ने जब अपना यह बढ़िया इनाम सुना तो इस इनाम की तो उसको कोई आशा ही नहीं थी। वह बोली — "क्या मेरे इतना कुछ किये का तुम्हारे पास यही इनाम है। क्या तुम्हें गरीबी से यहॉ तक पहुॅचाने का मेरा यही इनाम है। क्या तुम्हें बढ़िया कपड़े पहनाने का मेरा यही इनाम है।

जब तुम गरीब थे चिथड़े पहनते थे भूखे रहते थे टूट गये थे दुखी थे और तब मैंने तुम्हें यह इनाम दिया तो तुमने मुझे यह इनाम दिया। तुम तो मेरे लिये सोने का ताबूत बनवाना चाहते थे न। तुम तो तो मुझे एक बहुत बढ़िया दफ़न देने वाले थे न।

जाओ मैं तुम्हें उस पर शाप देती हूँ कि मैंने जो कुछ भी तुम्हें दिया है तुम्हारा वह सब खो जाये। अब तुम जाओ। मजदूर की तरह से काम करो जमीन जोतो और इस हालत तक आने के लिये बहुत समय तक पसीना बहाओ।

वह आदमी सुखी नहीं रहता जो किसी बदले की आशा में अच्छा काम करता है। किसी दार्शनिक ने ठीक ही कहा है कि जो गधे को गिराता है वह खुद ही गधा है। सबको बहुत करना चाहिये और किसी बदले की आशा नहीं रखनी चाहिये। मीठे शब्द और बुरे काम अक्लमन्द और बेवकूफ दोनों को एक ही तरह से धोखा देते हैं।”

ऐसा कह कर उसने अपने शरीर पर से अपना बिल्ली वाला कोट उतारा और अपने रास्ते चली गयी।

पिप्पो ने बहुत ज़्यादा नम्रता से उसको तसल्ली देने की कोशिश की पर उससे कोई फायदा नहीं हुआ। वह नहीं लौटी बल्कि वह तो बिना पीछे मुड़ कर देखे वहाँ से भागती चली गयी।

भागते भागते वह कहती जा रही थी —

हे भगवान मुझे अमीर से गरीब बन जाने वालों से दूर रखना
और गरीब से अमीर बनने वालों से भी दूर रखना

# 14 2–5 सॉप[103]

ऐसा हर एक के साथ होता है कि जो कोई दूसरों के मामलों की जासूसी करने में बहुत ज़्यादा उत्सुक रहता है वह अपने पैरों पर अपने आप ही कुल्हाड़ी मारता है। लौंग फ़रो का राजा इस बात का जीता जागता सबूत है। वह दूसरों के मामले में अपनी नाक अड़ाने की वजह से अपनी बेटी के लिये परेशानी ले आया और अपने नाखुश दामाद को तो उसने बर्बाद ही कर के रख दिया। दामाद ने अपने सिर से किसी को मारने में अपना सिर ही तोड़ लिया।

एक बार की बात है एक माली की पत्नी थी जिसको एक बेटे की इतनी ज़्यादा इच्छा थी जितनी कि किसी बुखार वाले आदमी को ठंडे पानी पीने की भी नहीं होती या फिर किसी सराय के मालिक को शाही गाड़ी की भी नहीं होती।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि माली कुछ लकड़ियॉ लेने के लिये पहाड़ पर गया। जब वह लकड़ियॉ ले कर पहाड़ से घर लौटा तो उसको उन लकड़ियों के बीच में बैठा एक सुन्दर सा सॉप नजर आया।

यह देख कर सपाटैला[104] ने एक गहरी सॉस भरी और बोली — "ओह यहॉ तक कि बड़े सापों के भी बच्चे सॉप होते हैं पर मैं तो इस दुनियॉ में केवल बदकिस्मती ले कर ही पैदा हुई हूॅ मेरे तो कोई बच्चा नहीं है।"

---

[103] The Serpent. (Tale No 14)

[104] Sapatella – name of the wife of the gardener

यह सुन कर छोटा साँप बोला — "क्योंकि तुम्हारे बच्चे नहीं हो सकते इसलिये तुम मुझे ही अपना बच्चा समझ लो। तुम्हारे लिये यह सौदा बहुत फायदे का रहेगा क्योंकि मैं तुमको अपनी माँ से भी ज़्यादा प्यार करूँगा।

सपाटैला ने जब एक साँप को बोलते हुए सुना तो वह तो आश्चर्य से ठगी खड़ी रह गयी बल्कि बेहोश होते होते बची पर हिम्मत कर के बोली — "अगर तुम्हारे प्यार के अलावा जो तुम मुझे दे रहे हो और कोई बात नहीं होती तो मैं तुम्हें ले कर सन्तुष्ट हूँ और तुम्हें अपने बेटे जैसा समझूँगी।"

ऐसा कह कर उसने उसको एक बिल में रख दिया। वह उसको बराबर उस खाने में से हिस्सा देती जो भी वह ईमानदारी से कमाती।

रोज ब रोज साँप बढ़ता गया बढ़ता गया और जब वह काफी बड़ा हो गया तो एक दिन अपने पिता कोला मैटियो[105] के पास गया और उसकी तरफ देख कर बोला — "पिता जी अब मैं शादी करना चाहता हूँ।"

कोला मैटियो बोला — "हाँ हाँ बेटा खुशी से। हम तुम्हारे लिये तुम्हारे जैसी एक दूसरी साँपिन खोज देंगे और फिर तुम्हारा उससे रिश्ता बनाने की कोशिश करेंगे।"

छोटा साँप बोला — "आप किस साँप की बात कर रहे हैं पिता जी। मुझको लगता है कि हम सब एक जैसे ही हैं। यह तो देखना

---

[105] Cola Matteo – name of the gardener

बहुत आसान है कि आप कुछ नहीं केवल गॉव में रहने वाले एक गॅवार हैं और आपको जो भी मिल जाये आप हर उस पौधे को अपने फूलों के गुच्छे में शामिल कर लेते हैं।

मुझे राजा की बेटी चाहिये। आप अभी अभी वहॉ जाइये और उसको मेरे लिये मॉगिये। उससे कहियेगा कि मैं एक सॉप हूॅ और उसे मॉग रहा हूॅ।"

कोला मैटियो जो एक बहुत ही सीधासादा सा आदमी था और इस तरह के मामलों की जानकारी बिल्कुल ही नहीं रखता था भोलेपन से राजा के पास चला गया और वहॉ जा कर उससे यह कहा — "मैं दूत हूॅ मुझे समुद्र के किनारे के बालू के रेत के कणों से ज़्यादा नहीं पीटा जाना चाहिये।

मैं आपको यह बताना चाहता हूॅ कि एक सॉप आपकी बेटी से शादी करना चाहता है। सो मैं यह कोशिश करने आया हूॅ कि क्या हम लोग एक सॉप और एक फाख्ता के बीच में रिश्ता बना सकते हैं?"

राजा ने उसको एक नजर में ही उसे पहचान लिया कि यह कोई खरदिमाग आदमी है। उससे बचने के लिये वह बोला — "जाओ अपने सॉप से कह दो कि मैं उसे अपनी बेटी दे दूॅगा अगर वह मेरे बाग के सारे फलों को सोने बना देगा।"

ऐसा कह कर वह बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और उसे विदा किया।

कोला मैटियो ने घर पहुँच कर राजा का जवाब अपने बेटे साँप को बता दिया। तो साँप बोला — “पिता जी कल सुबह आप शहर में जा कर जितने भी फलों की गुठलियाँ बीन सकते हों बीन लाइये फिर उन्हें उनके बागीचे में बो दीजिये तो अगले दिन आप पेड़ों पर मोती लटके देखेंगे।”

कोला मैटियो जो न तो कोई जादूगर था, न तो कहा मानना जानता था और नहीं मना करना जानता था। सो अगले दिन जैसे ही सूरज निकला और उसने अपनी सुनहरी किरनों से धरती पर रात की गन्दगी साफ करने के लिये झाड़ू लगायी वह घर से चल दिया और गली गली घूम कर जितनी भी फलों की गुठलियाँ उसको मिलीं वह वे सब भर लाया – आलूबुखारों की, आड़ू की चैरीज़ की जो भी उसको मिलीं।

उनको ले कर वह राजा के बागीचे में गया और उन्हें बो दिया। पल भर में ही उनमें से पेड़ निकलने शुरू हो गये और बड़े होने लगे। उसकी शाखाऐं डंडियाँ पत्ते फूल फल निकलने लगे। आश्चर्य वे सब सोने के थे। लगता था कि सारा पेड़ ही सोने का था।

यह देख कर तो राजा को बहुत खुशी हुई और वह खुशी से बहुत ज़ोर से चिल्ला पड़ा।

पर जब साँप ने कोला मैटियो को फिर से राजा के पास भेजा कि अपने वायदे के अनुसार क्या अब उसकी बेटी से शादी कर

सकता है तो राजा बोला — "वह तो ठीक है। पर मैं अपनी बेटी देने से पहले उससे एक काम और कराना चाहूँगा कि वह मेरे बागीचे की दीवार और उसके रास्ते सब जवाहरातों के बना दे।"

माली ने घर आ कर साँप से वैसा ही कह दिया। साँप ने माली से कहा कि वह अगली सुबह जाये और टूटे हुए प्लेट प्यालों के टुकड़े उठा लाये और उनको बागीचे के रास्तों पर और दीवारों पर फेंक दे। क्योंकि हम इस छोटी सी मुश्किल को अपनी ख़ुशी के रास्ते में नहीं आने देंगे।

अगली सुबह जैसे ही रात गयी और सूरज आसमान में आया तो माली तो अपने काम पर निकल गया। उसने वहाँ से टाइल्स के छोटे छोटे टुकड़े प्लेट प्यालों के टूटे हुए टुकड़े जग के हैन्डिल्स आदि इकट्ठे किये और उनको ले जा कर राजा के बागीचे के रास्तों और दीवारों पर फेंक दिया।

जब उसने साँप का कहा हुआ कर लिया तो वह तो ख़ुद भी आश्चर्य में पड़ गया। उसने देखा बागीचे की दीवारें और रास्ते सब जवाहरातों से जड़े हुए थे जो उसकी आँखों को चौंधिया रहे थे।

राजा तो यह दृश्य देखता का देखता रह गया। उसको पता ही नहीं था कि उसके ऊपर इतनी कृपा कैसे हो गयी थी। अब जब साँप ने अपने पिता को फिर राजा के पास शादी के सिलसिले में भेजा तो राजा बोला — "यह तो उसने कुछ भी नहीं किया। मैं चाहता हूँ कि अब वह मेरा यह महल सोने का बना दे।"

जब कोला मैटियो ने जा कर साँप से राजा की यह नयी इच्छा बतायी तो साँप बोला — "आप जा कर एक गट्ठर घास फूस ले आइये और महल के नीचे की दीवारों पर घास फूस मल दीजिये। हम देखते हैं कि अगर यह काम भी राजा के इस पागलपन को दूर नहीं करता तो... ।"

कोला तुरन्त ही वहाँ से चला गया और बन्द गोभी मूली लीक पार्सले शलगम सबके पत्ते उठा कर ले आया और जब उसने महल का निचला हिस्से पर इन सबको मला तो सारा का सारा महल सोने का हो गया। वह सोने की एक गेंद की तरह से चमक रहा था।

माली जब दोबारा राजा से अपने बेटे साँप के रिश्ते की बात करने आया तो राजा ने यह सब देख कर अपनी बेटी को बुलाया और उससे कहा — "मेरी प्यारी ग्रैनोनिया[106]। मैंने तुम्हारा हाथ माँगने आये एक उम्मीदवार को मना करने की बहुत कोशिश की। मैंने उससे कई नामुमकिन काम करवाये पर मैं अपनी कोशिशों में सफल न हो सका।

सो मैं हार गया और मुझे अपनी हाँ करनी ही पड़ी। मैं तुमसे विनती करता हूँ कि क्योंकि तुम मेरा कहना मानने वाली हो तो तुम मेरा वायदा रख लेना और अपनी किस्मत से सन्तुष्ट रहना। मैं तुम्हारा यह ऐहसान कभी नहीं भूलूँगा।"

---

[106] Granonnia – name of the Princess

ग्रैनोनिया बोली — "पिता जी जैसी आपकी इच्छा हो वैसा कीजिये। मैं आपकी किसी भी इच्छा के ज़रा भी खिलाफ नहीं जाऊँगी।"

राजा ने यह सुन कर कोला मैटियो को बुलाया और उससे साँप दूल्हे को वहाँ लाने के लिये कहा। साँप महल चलने के लिये तैयार हुआ। उसकी गाड़ी सोने की बनी हुई थी और उसे चार सुनहरे हाथी खींच रहे थे।

पर वह जहाँ जहाँ से भी गुजरा तो लोग उसे देख कर डर के मारे भागने लगे। इतना बड़ा और डरावने साँप को शहर में से हो कर महल की तरफ जाते देख कर शहर वाले और जब वह महल पहुँचा तो उसे देख कर सब दरबारी लोग झाड़ियों की तरह काँपने लगे और भाग लिये। यहाँ तक कि बहादुर से बहादुर आदमी भी वहाँ खड़ा नहीं रह सका।

रानी भी डर के मारे काँपने लगी और अपने कमरे में जा कर घुस गयी। हालाँकि ग्रैनोनिया के माता पिता उससे चिल्ला चिल्ला कर कह रहे थे "भाग ग्रैनोनिया भाग। अपने को बचा।" पर केवल वही वहाँ एक ऐसी थी जो निडर खड़ी हुई थी।

उसने अपने माता पिता से कहा — "मैं अपने पति से क्यों डरूँ जिसे आप लोगों ने मेरे लिये चुना है।"

जब साँप कमरे में आया तो उसने ग्रैनोनिया को कमर से अपनी पूँछ से पकड़ लिया और उसके ऊपर चुम्बनों की बौछार कर दी। यह देख कर तो राजा एक कीड़े की तरह सिकुड़ गया।

उसके बाद साँप उसको दूसरे कमरे में ले गया और दरवाजे की चिटकनी लगा दी।

उसने अपनी साँप की खाल नीचे गिरा दी तो वह एक बहुत सुन्दर नौजवान बन गया था उसका सारा सिर सुनहरे घुँघराले बालों से ढका हुआ था। और उसकी आँखें ऐसी थीं जो किसी पर भी अपने जादू का असर डाल सकती थीं।

राजा ने जब देखा कि साँप उसकी बेटी को एक अलग कमरे में ले गया है और कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया है तो उसने अपनी पत्नी से कहा — "भगवान मेरी अच्छी बेटी पर दया करें। मुझे पूरा विश्वास है कि वह तो अब तक मर भी गयी होगी। और उस साँप ने तो उसको अब तक निगल भी लिया होगा जैसे लोग अंडे का पीला हिस्सा निगल जाते हैं।"

जानने के लिये इच्छुक राजा ने चाभी के छेद से कमरे में झाँक कर देखा कि उसकी बेटी का क्या हुआ पर जब उसने देखा कि वहाँ एक बहुत ही सुन्दर नौजवान खड़ा हुआ है और एक साँप की खाल जमीन पर पड़ी हुई है।

उसने दरवाजे में एक धक्का मारा अन्दर दौड़ा खाल उठायी और आग में जला दी।

यह देख कर नौजवान चिल्लाया — "ओ बेवकूफों यह तुम लोगों ने क्या किया।"

कह कर वह एक फाख्ता में बदला और खिड़की से हो कर बाहर उड़ गया। उस खिड़की में शीशे लगे हुए थे सो वह जा कर शीशे से टकरा गया और काफी घायल हो गया।

ग्रैनोनिया ने जब यह सब देखा तो वह कुछ खुश भी हुई और कुछ नाखुश भी हुई। वह अमीर भी हो गयी और गरीब भी हो गयी। उसने अपने बाल नोचने शुरू कर दिये और अपनी किस्मत को बुरा भला कहने लगी। अपने माता पिता को गालियाँ देने लगी।

उन्होंने उसको समझाने की बहुत कोशिश की उनका उद्देश्य उसको किसी तरह का कोई नुकसान पहुँचाने का नहीं था। पर उसका रोना नहीं रुका। आखिर रात हो आयी। अँधेरे ने सूरज के दफ़न के लिये आसमान में शामियाना लगा दिया।

रात को जब सब सो गये लड़की ने अपने जवाहरात लिये जो उसके लिखने वाली मेज में रखे हुए थे और पिछले दरवाजे से अपने उस खजाने को ढूँढने के लिये बाहर निकल गयी जिसे उसने खो दिया था।

वह चाँदनी रात में रास्ता ढूँढती हुई शहर के बाहर चली गयी। रास्ते में उसको एक लोमड़ा मिला। उसने ग्रैनोनिया से पूछा कि क्या उसे साथ के लिये कोई चाहिये था। ग्रैनोनिया बोली — "हाँ हाँ मुझे बहुत खुशी होगी क्योंकि मैं इस देश को ज़्यादा जानती नहीं।"

सो दोनों बहुत देर तक साथ साथ चलते रहे। आखिर वे एक जंगल में आ गये जहाँ पेड़ बच्चों की तरह से खेल रहे थे। वे वहाँ छोटे छोटे घर बना रहे थे जिनमें साये अन्दर लेट सकें।

और क्योंकि अब वे थक गये थे और आराम करना चाहते थे तो वे पेड़ों की पत्तियों के नीचे छिप गये थे जहाँ एक फव्वारा घास के साथ खेल रहा था। वह उनके ऊपर कटोरा भर भर कर पानी छिड़क रहा था।

वे वहीं नर्म घास पर लेट गये और प्रकृति का कर्जा चुकाने के लिये सो गये। वे सूरज निकलने के बाद ही जागे जब सूरज ने यात्रियों और नाविकों को कहा कि वे अपनी अपनी यात्रा के लिये तैयार हो जायें।

जागने के बाद भी वे कुछ देर तक वहीं चिड़ियों का संगीत सुनते रहे। ग्रैनोनिया को उनका संगीत बहुत अच्छा लग रहा था। लोमड़े ने यह देख कर कहा — "तुमको इनके संगीत में इससे भी दोगुना आनन्द तब मिलेगा जब तुम यह समझोगी कि ये क्या कह रही हैं जैसे मुझे।"

यह सुन कर ग्रैनोनिया की उत्सुकता और बढ़ गयी जैसा कि स्त्रियों के साथ होता है कि उनकी उत्सुकता की कोई सीमा नहीं होती। उसने लोमड़े से पूछा कि वह उसे बताये कि वे क्या बातें कर रही थीं। ग्रैनोनिया के बहुत देर तक विनती करने के बाद लोमड़े ने उसे बताया कि वे क्या कह रही थीं।

उसने ग्रैनोनिया से कहा कि वे राजकुमार के बेटे की बदकिस्मती के बारे में बात कर रही हैं जो जे चिड़िया की तरह से बहुत सुन्दर था। क्योंकि उसने एक नीच ओग्रैस[107] को परेशान किया था तो उसने उसके ऊपर जादू डाल दिया था कि वह सात साल सॉप के रूप में जिये।

जब इस रूप में जीते जीते उसे चार साल बीत जायेंगे तो वह एक राजा की बेटी के प्यार में पड़ जायेगा। एक दिन जब वह उस लड़की के साथ होगा और वह वहीं अपनी सॉप की खाल निकाल देगा तो राजकुमारी के माता पिता उस कमरे में आयेंगे और उसकी खाल जला देंगे तो वह फाख्ता बन कर वहॉ से भाग जायेगा।

जब वह फाख्ता के रूप में भाग रहा होगा तो खिड़की के शीशे से टकरा कर वह घायल हो जायेगा और इतना ज़्यादा घायल हो जायेगा कि डाक्टर भी उसकी ज़िन्दगी की आशा छोड़ देंगे।

ग्रैनोनिया ने जब अपनी कहानी सुनी तो उसने लोमड़े से पूछा कि क्या इसका कोई इलाज है। लोमड़े ने जवाब दिया कि इसका इलाज कोई नहीं है सिवा इसके कि उन्हीं चिड़ियों का खून जो यह बात कह रही थीं उसके घावों पर लगा दिया जाये।

जब ग्रैनोनिया ने यह सुना तो वह लोमड़े के सामने अपने घुटनों पर बैठ गयी और उससे विनती की कि वह उसके लिये वे चिड़ियें पकड़ लाये ताकि वह उनका खून ले सके। उसने साथ में यह भी

[107] Female of “Ogre”

कहा कि अच्छे साथियों की तरह से वे दोनों उसक फायदा बॉट लेंगे।

लोमड़ा बोला — "यह सब तो ठीक है। हमको आज रात का इन्तजार करना चाहिये और जब चिड़ियें रात को सो जायेंगी तो मैं उनको एक एक कर के पकड़ लाऊँगा।"

सो उन्होंने सारा दिन इन्तजार किया। धरती ने भी रात का मोम पकड़ने के लिये अपना ब्लैकबोर्ड फैला दिया। जब लोमड़े ने देखा कि अब सब चिड़ियें सो गयीं तो वह धीरे से पेड़ पर चढ़ा और वहॉ जितनी भी चिड़ियें सो रही थीं सबको मार लाया। फिर उसने उन सबका खून एक बोतल में भर लिया जो वह रास्ते में पानी पीने के लिये साथ रखता था।

ग्रैनोनिया यह देख कर बहुत खुश थी। उसके कदम जमीन पर ही नहीं पड़ रहे थे। पर लोमड़ा बोला — "मेरी प्यारी बेटी यह कैसी खुशी है। तुमने तो कुछ किया ही नहीं है जब तक तुम इस खून में मेरा खून नहीं मिलाओगी तब तक यह काम नहीं करेगा।" इतना कह कर वह वहॉ से भागने लगा।

ग्रैनोनिया ने देखा कि उसकी तो सारी खुशियों पर पानी फिरे जा रहा है सो उसने स्त्रियों वाली चाल खेली। उसकी चापलूसी करनी शुरू की। वह बोली — "ओ बातूनी लोमड़े। तुम्हारे पास अपनी जान बचाने की कोई तो वजह होगी अगर मैं तुम्हारे इतने

सारे कर्जों से न दबी होती और अगर दुनियाँ में कोई और लोमड़ा न होता।

पर तुम्हें तो मालूम है कि मैं तुम्हारे कर्जे में कितनी डूबी हुई हूँ। और तुम्हें यह भी मालूम कि इस मैदान में तुम जैसे लोमड़ों की कोई कमी तो है नहीं। मेरे ऊपर विश्वास करो। तुम उस गाय की तरह व्यवहार मत करो जो उसी दूध भरी बालटी में लात मारती है जिसे उसने अभी अभी अपने दूध से भरा है।

तुमने अपना बड़ा काम तो कर दिया अब तुम उसके आखिरी हिस्से को करने से क्यों बच रहे हो। मेहरबानी कर के रुक जाओ। मेरे ऊपर भरोसा करो। मेरे साथ राजा के शहर चलो जहाँ अगर तुम चाहो तो तुम मुझे वहाँ एक दासी की तरह बेच सकते हो।"

लोमड़े ने यह तो कभी सोचा ही नहीं था कि वह एक स्त्री से हार जायेगा। वह उसके साथ राजा के शहर जाने के लिये तैयार हो गया और चल दिया। वे लोग अभी पचास कदम भी नहीं चले होंगे कि ग्रैनोनिया ने डंडी उठायी जो उसके हाथ में थी और उससे लोमड़े को इतनी ज़ोर से मारा कि वह वहीं मर गया और टाँगें फैला कर गिर पड़ा।

उसने लोमड़े का खून उस बोतल में भरा और उसे ले कर फिर आगे चल दी। चलते चलते वह "बड़ी घाटी"[108] तक आ पहुँची।

---

[108] Translated for the words "Big Valley"

वहाँ पहुँच कर वह सीधी राजा के महल में गयी और उसको सन्देश भेजा कि वह राजकुमार को ठीक करने के लिये आयी है।

राजा ने हुक्म दिया कि उसको तुरन्त ही उसके सामने लाया जाये तो वह तो यह देख कर ही आश्चर्यचकित रह गया कि एक छोटी सी लड़की इस काम को करने के लिये आयी थी जिसे बड़े बड़े डाक्टर ठीक नहीं कर सके। पर इसको एक मौका देने में क्या हर्ज है सो उसने उसको अपना काम करने के लिये कहा।

पर ग्रैनोनिया बोली — "अगर मैं अपने काम में कामयाब हो गयी तो आप मुझसे वायदा करें कि आप मुझे राजकुमार को मेरा पति बना देंगे।"

राजा ने जो अब तक की अपने बेटे की हालत से इतना निराश हो गया था कि उसने तो उसे मरा जैसा ही समझ लिया था सो उसने उससे कहा — "अगर तुमने मुझे मेरा बेटा सही सलामत वापस कर दिया तो मैं भी तुम्हें उसे सही सलामत तुम्हारे पति की हैसियत से वापस कर दूँगा। क्योंकि जिसको कोई उसका बेटा वापस देता है उसके लिये किसी को उसका पति देना कोई खास बात नहीं है।"

सो वे दोनों राजकुमार के कमरे में गये और ग्रैनोनिया ने जैसे ही राजकुमार के घावों पर खून लगाया तो उसके घाव तो ऐसे भरते चले गये जैसे वे कभी वहाँ थे ही नहीं।

ग्रैनोनिया ने जब राजकुमार को बिल्कुल तन्दुरुस्त देखा तो उसने राजा को उससे किया गया वायदा याद दिलाया। इस पर राजा

अपने बेटे की तरफ घूमा और उससे बोला — "एक पल पहले तक तुम बिल्कुल मरे जैसे पड़े थे। पर अब मैं तुम्हें ज़िन्दा और तन्दुरुस्त देख रहा हूँ। मुझे इस बात पर विश्वास नहीं हो रहा है।

इसलिये जैसा कि मैंने इस लड़की से वायदा किया था कि "अगर तुम इसे ठीक कर दोगी तो मैं तुम्हारी शादी इससे कर दूँगा। अब मुझे इस काम को पूरा करने की इजाज़त दो। तुम्हें मेरे उस प्यार की कसम जो तुम मुझे करते हो। मैं उसके अहसान का बदला चुकाने पर मजबूर हूँ।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो बोला — "पिता जी। मैं आपके प्यार को जरूर साबित कर देता पर मैं किसी और लड़की से वायदा कर चुका हूँ। मुझे पूरी उम्मीद है कि आप मुझे मेरा वायदा नहीं तोड़ने देंगे। और न यह लड़की चाहेगी कि मैं उसके साथ किया गया वायदा तोड़ूँ जिससे मैंने प्यार किया है।"

ग्रैनोनिया तो यह सुन कर मन ही मन इतनी खुश हुई जितना कि वह बता नहीं सकती। उसको यह सुन कर अच्छा लगा कि राजकुमार को अभी तक उसकी याद है। उसका चेहरा गुलाबी हो गया।

वह बोली — "अगर मैं उस लड़की से जिद करूँ कि वह तुम्हारे ऊपर अपना अधिकार छोड़ दे तब क्या तुम मेरी इच्छा पूरी करोगे।"

राजकुमार बोला — “नहीं कभी नहीं। क्या मैं कभी अपने दिल से उसकी सुन्दर शक्ल निकाल सकता हूँ जिसको मैं प्यार करता हूँ। क्या मैं फिर से उसी तरह के दिमाग वाला रह सकता हूँ। मैं अपनी ज़िन्दगी में अपनी जगह खोना ज़्यादा पसन्द करूँगा बजाय इसके कि मैं यह नीच चाल खेलूँ।”

अब ग्रैनोनिया बहुत देर तक अपने आपको न छिपा सकी और उसने अपने आपको राजकुमार के सामने खोल दिया कि वह कौन थी। क्योंकि उसके सिर में चोट लगने की वजह से कमरे में अँधेरा था इसी लिये वह उसको पहचान नहीं सका था।

उसके बताने के बाद राजकुमार उसे पहचान गया था उसने उसे खुशी गले लगा लिया था। फिर उसने पिता को बताया कि उसने क्या क्या किया था और उसके लिये क्या क्या सहा था।

फिर उन्होंने ग्रैनोनिया के माता पिता यानी लौंग फील्ड के राजा और रानी को बुलावा भेज कर बुलवाया और फिर उन दोनों की शादी बड़ी धूमधाम से हुई।

दर्द एक मसाला है जो अमर प्यार की खुशी को साबित करता है

# 15 2–6 मादा भालू[109]

सचमुच में अक्लमन्द लोगों ने कहा है कि किसी बदतमीज आदमी की बात उसी तरह नहीं मानी जा सकती जैसे किसी मीठा बोलने वाले की बात मान ली जाती है। किसी आदमी को बिल्कुल उचित और जरूरी चीज़ें ही माँगनी चाहिये अगर वह यह देखता हो कि उसके हुक्म का ठीक से पालन हो।

वे हुक्म जो ठीक नहीं होते उनको पालन करने में लोगों को हिचक होती है जिसको जीतना आसान नहीं होता। ऐसा ही कुछ रफ़ रौक[110] के राजा के साथ हुआ। जिसने यह पूछ कर अपनी ज़िन्दगी और इज़्ज़त खतरे में डाल कर उसको अपने पास से भगा दिया।

कुछ ऐसा कहा जाता है कि बहुत दिन पहले एक राजा रहता था जो रफ़ रौक का राजा था। उसकी एक पत्नी थी जो बहुत सुन्दर थी। पर जब वह जवान थी वह तभी बीमार हो गयी थी और मर गयी।

अपनी ज़िन्दगी का दिया बुझने से पहले उसने अपने पति से कहा "मुझे मालूम है कि आपने मुझे हमेशा बहुत अच्छे से प्यार किया है तो मेरी ज़िन्दगी के आखिरी समय में भी अब मुझे अपना वह प्रेम दिखाइये।

आप मुझसे वायदा कीजिये कि मेरे बाद आप तब तक दूसरी शादी नहीं करेंगे जब तक कि आपको मेरे जितनी सुन्दर लड़की न मिल जाये। नहीं तो मैं आपको शाप दे कर जाती हूँ और मैं दूसरी दुनियाँ में पहुँच कर भी आपसे नफरत करती रहूँगी।"

---

[109] She Bear. (Tale No 14) Day 2, Tale No 6

[110] King of Rough-Rock

राजा जो अपनी पत्नी को बहुत प्यार करते थे उसकी यह आखिरी इच्छा सुन कर बहुत ज़ोर से रो पड़े और कुछ समय तक तो बोल भी न सके।

आखिर जब वह अच्छी तरह से रो चुके तो वह बोले — "इससे पहले कि मैं दूसरी शादी करूँ मुझे गठिया हो जाये। मेरा सिर कट जाये। प्रिये ऐसा ख्याल भी तुम अपने दिल से निकाल दो। सपनों पर विश्वास मत करो कि मैं किसी दूसरी स्त्री से प्यार करूँगा। तुम ही मेरे प्यार का पहला कोट रहोगी और तुम ही मेरे प्यार का आखिरी चिथड़ा भी साथ ले कर जाओगी।"

राजा के यह कहने के बाद रानी ने जो बहुत बीमार थी अपनी आँखें बन्द कर लीं।

जब राजा ने देखा कि रानी की ज़िन्दगी खत्म हो रही है तो वह फिर से बहुत ज़ोर से रो पड़े। उसके रोने चीखने की आवाज सुन कर उसके दरबारी लोग रानी का नाम लेते हुए वहीं आ गये। वहाँ राजा अपनी किस्मत को कोस रहे थे सितारों को बद्दुआऐं दे रहे थे कि भगवान ने रानी को उनसे छीन लिया था।

पर यह बात ध्यान में रखते हुए कि "कोहनी का दर्द और पत्नी के मरने का दर्द सहना एकसा होता है पर जल्दी ही खत्म हो जाता है।" वह थोड़े शान्त हो गये।

और फिर रात हो गयी तो उसने अपनी उँगलियों पर गिनना शुरू कर दिया और यह सोचना शुरू किया कि रानी तो अब मर

गयी है और मैं यहा अकेला ही रह गया। मुझे इस बात की भी कोई उम्मीद नहीं है कि मैं इस लड़की के अलावा किसी और को देखूँगा जिसको वह मुझे पालने के लिये छोड़ गयी है।

मुझे कोई न कोई रास्ता ढूँढना चाहिये जिससे मैं अपना वारिस और बेटा पा सकूँ। पर मैं उसे कहाँ ढूँढू। मैं उसके जैसी सुन्दर स्त्री कहाँ पाऊँगा। उसके मुकाबले में तो मुझे हर स्त्री एक जादूगरनी लगती है। तब कोई दूसरी वैसी ही स्त्री मैं कहाँ से लाऊँ। क्या मैं उसे किसी लकड़ी के टुकड़े से ढूँढू या फिर घंटी बजा कर ढूँढू।

यह भी हो सकता है कि प्रकृति ने नारडैला[111] को बना कर वह साँचा ही तोड़ दिया हो। उफ़। उसने मुझे किस जाल में फाँस दिया है। पर मैं उससे और कहता भी क्या। मैं तो भेड़िया देखने से पहले ही भाग रहा हूँ।

मैं अपनी आँखें और कान खोल कर रखता हूँ और फिर ढूँढता हूँ। ऐसी क्या बात है क्या कि उसके जैसा और कोई सुन्दर ही नहीं होगा। क्या ऐसा हो सकता है कि यह दुनियाँ मेरे लिये खो जाये। क्या दुनियाँ में सुन्दर स्त्रियों की कमी हो गयी है या फिर यह जाति ही गायब हो गयी है।"

ऐसा सोच कर उसने एक फरमान निकलवाया कि दुनियाँ की सब सुन्दर सुन्दर स्त्रियाँ यहाँ आ कर इकट्ठी हों क्योंकि वह सबसे

[111] Nardella was the name of his life

सुन्दर स्त्री से शादी करना चाहता है और उसको अपनी रानी बनाना चाहता है।

जब यह खबर विदेशों में पहुँची तो कोई ऐसी स्त्री नहीं थी जो अपनी किस्मत आजमाने वहाँ न आयी हो – कोई जादूगरनी भी नहीं रुकी चाहे वह कितनी भी बदसूरत ही क्यों न हो। क्योंकि जब सवाल सुन्दरता का होता है तो सबसे छोटे काम करने वाली नौकरानी भी अपने आपको हूर की परी समझती है।

हर स्त्री समझती है कि वही सबसे सुन्दर है और अगर शीशा उसे सच भी बताता है तो वह झूठ बोलने के लिये शीशे को ही जिम्मेदार ठहराती है और पारे को ठीक से न रखने के लिये।

जब शहर में स्त्रियाँ इकट्ठी हो गयीं तो राजा ने उन सबको एक लाइन में खड़ा कर लिया। तो वह उन सबको देखने के लिये ऊपर से नीचे तक जब उसने उन सबको जाँचा और सिर से पैर तक नापा तो किसी की आँखों की भौंहें बहुत घनी थीं। किसी की नाक लम्बी थी तो किसी का मुँह चौड़ा था।

किसी के होठ मोटे थे तो कोई खम्भे की तरह लम्बी थी। कोई नाटी और मोटी थी तो कोई बहुत तन्दुरुस्त थी तो कोई बहुत ही पतली थी। किसी का रंग साँवला था तो किसी का कुछ और गड़बड़ था। जर्मन उसको कुछ रूखे लगते थे स्पेन के लोग कुछ साँवले लगते थे वेनिस के लोगों के बाल हल्के होने की वजह से रुई का गोले जैसे लगते थे।

आखीर में किसी को किसी वजह से किसी को किसी वजह से उन सबको उनके घर वापस भेज दिया गया। अब राजा क्या करे।

तब उसका दिमाग अपनी बेटी की तरफ गया "मैं क्यों नामुमकिन के पीछे भाग रहा हूँ जबकि मेरी बेटी प्रैज़ियोसा[112] मेरे सामने मौजूद है जो बिल्कुल अपनी माँ के साँचे में ढली हुई है। उतना सुन्दर चेहरा तो मेरे घर में ही है और मैं उसे दुनियाँ के उस कोने तक ढूँढ रहा हूँ। वह वहीं शादी करेगी जहाँ मैं चाहूँगा और इस तरह से मैं एक वारिस पा सकता हूँ।"

जब प्रैज़ियोसा ने यह सुना तो वह अपने कमरे में चली गयी और अपनी बदकिस्मती पर रोने लगी। वह अपना सिर इतना पीट रही थी जैसे वह उस पर कोई बाल ही नहीं छोड़ेगी।

जब वह इस तरह से दुखी हो रही थी कि एक बुढ़िया उसके पास आयी जो उसके बहुत भरोसे की थी। जैस ही उसने प्रैज़ियोसा को देखा तो वह उसको इस दुनियाँ की कम और किसी दूसरी दुनियाँ की ज़्यादा लगी। उसने उसके दुख की वजह पूछी और जब उसने वजह बतायी तो वह बोली —

"मेरी बच्ची खुश हो जाओ। तुम इतनी नाउम्मीद न हो। मौत के सिवा सब बुरी चीज़ों का कोई न कोई उपाय है। अब तुम मेरी बात सुनो। लो तुम यह लकड़ी का टुकड़ा अपने पास रख लो और अब जब भी तुम्हारे पिता तुमसे इस तरह की बात दोबारा करें तो

---

[112] Preziosa – name of the Princess

तुम इसे अपने मुँह में रख लेना इससे तुम एक मादा भालू में बदल जाओगी। और बस तुम्हारा काम बन गया।

क्योंकि तुम्हारे पिता तुमसे डर जायेंगे और तुमको भागने देंगे। तुम यहाँ से सीधी जंगल चली जाना। वहाँ भगवान ने तुम्हारे लिये उसी दिन से जबसे तुम पैदा हुई थीं तभी से बहुत अच्छी अच्छी चीज़ें रखी हुई हैं।

जब भी तुम स्त्री के रूप में आना चाहो जैसी कि तुम अभी हो बस अपने मुँह से वह लकड़ी का टुकड़ा अपने मुँह से बाहर निकाल लेना। तुम तुरन्त ही अपने असली रूप में आ जाओगी।"

यह सुन कर प्रैज़ियोसा ने उसको गले लगा लिया। उसने उसको ऐप्रन भर कर खाना दिया सूअर और बकरे का माँस दिया और विदा किया।

जैसे ही शाम हुई और सूरज ढलने लगा राजा ने अपने संगीतज्ञों सब लौर्ड सब कुलीन लोगों को बुलाया और एक बड़ी दावत रखी। पाँच छह घंटे गाने और नाच के बाद वे सब खाना खाने बैठे तो उन्होंने खूब छक कर खाया और अन्धाधुन्ध पी।

उसके बाद उसने सबसे पूछा कि वह अपनी बेटी प्रैज़ियोसा की शादी किसके साथ करे क्योंकि वह तो हूबहू उसकी पत्नी जैसी थी। पर जैसे ही प्रैज़ियोसा ने यह सुना तो उसने बुढ़िया का दिया हुआ लकड़ी का टुकड़ा अपने मुँह में रख लिया।

तुरन्त ही वह एक मादा भालू में बदल गयी। एक भालू को अपने बीच देख कर वहाँ बैठे सब लोग डर गये और वहाँ से जल्दी से जल्दी भाग लिये।

इस बीच प्रैज़ियोसा वहाँ से बाहर चली गयी और जंगल की तरफ चली गयी जहाँ शाम को साये अपनी मीटिंग कर रहे थे कि वे दिन के आखिरी हिस्से में किस तरह सूरज को धोखा दे सकते थे। वह वहाँ जा कर खड़ी हो गयी। वहाँ और दूसरे जानवर भी थे।

वह वहाँ तब तक खड़ी रही जब तक "बहता हुआ पानी"[113] राज्य के राजा का बेटा शिकार खेलने के लिये वहाँ नहीं आ गया। उसने जैसे ही भालू को देखा तो वह तो मरते मरते बचा।

पर जब उसने देखा कि भालू तो उसी की तरफ बढ़ा आ रहा था। आ कर उसने अपनी पूँछ हिलायी जैसे कोई कुत्ता अपने मालिक को देख कर हिलाता है अपना शरीर भी उसके शरीर से मला तो उसने भी प्यार से उसको सहला दिया — "बहुत अच्छे भालू बहुत अच्छे भालू। बेचारा जानवर।"

फिर वह उसको घर ले गया और अपने नौकरों से कहा कि वे उसकी ठीक से देखभाल करें। उसको उसने महल के पास वाले बागीचे में रख दिया ताकि वह वहीं से खिड़की से जब चाहे देख सके।

[113] Son of the King of the "Running Water"

एक दिन जब घर के सब लोग बाहर गये हुए थे और राजकुमार घर में अकेला रह गया था तो वह अपनी खिड़की की तरफ चला गया ताकि वह अपने नये लाये भालू को देख सके पर वहाँ तो भालू वालू कोई नहीं था वहाँ तो एक बहुत सुन्दर लड़की खड़ी थी।

असल में उसी समय प्रैज़ियोसा ने अपने मुँह से जादू का लकड़ी का टुकड़ा निकाला था जिससे वह इस समय अपने असली रूप में खड़ी थी और अपने सुनहरी बालों में कंघी कर रही थी।

इतनी सुन्दरता देख कर जो उसकी सोच से बाहर थी वह आश्चर्य से बेहोश सा हो गया। वह लुढ़कता पुढ़कता सा सीढ़ियाँ उतरता बागीचे में भागा गया।

पर प्रैज़ियोसा तो उसी तरफ ध्यान लगाये खड़ी थी उसने यह सब देखा तो तुरन्त ही जादुई लकड़ी का टुकड़ा अपने मुँह में रख लिया और वह फिर से एक भालू में बदल गयी।

राजकुमार जब नीचे आया तो वह तो उसी प्रैज़ियोसा को ही ढूँढता रहा पर जिसे उसने खिड़की से ऊपर से देखा था पर सब बेकार। वह तो वहाँ कहीं थी ही नहीं।

यह छलावा देख कर तो उसके होश से उड़ गये। चार दिन के अन्दर अन्दर वह बीमार पड़ गया। वह अक्सर चिल्लाता रहता "मेरे भालू मेरे भालू।"

उसकी मॉ ने उसका ऐसा रोना सुन कर समझा कि शायद भालू ने उसे कुछ नुकसान पहुँचाया है सो उसने हुक्म दिया कि भालू को मार दिया जाये। पर नौकर भालू का पालतूपन देख कर उसको मारने से हिचकने लगे। असल में तो वह भालू तो वहॉ सबकी दोस्त बन चुकी थी।

उनको उस पर दया आ गयी सो बजाय उसे मारने के वे उसे जंगल ले गये और वहॉ छोड़ दिया। घर आ कर उन्होंने रानी जी से कह दिया कि उन्होंने उसे मार दिया। जब यह बात राजकुमार के कानों तक पहुँची उसने ऐसा नाटक किया जैसे उसे उनका विश्वास हो गया।

वह जैसा भी था बीमार था या ठीक था तुरन्त ही बिस्तर से कूदा और नौकरों को मारने के लिये चला। पर जब नौकरों ने उसे सच बताया तो वह अपने घोड़े पर कूद कर बैठ कर अपनी अधमरी हालत में ही भालू को ढूँढने चल दिया। आखिर उसको अपनी भालू मिल ही गयी। वह उसको फिर से घर ले आया।

इस बार उसने उसको एक कमरे में रख दिया और उससे कहा — “ओ राजा की प्यारी। इस खाल में बन्द तू कौन है? ओ प्यार की रोशनी इस बालों वाले कोट के नीचे तू कौन है? तू यह खेल क्यों खेल रही है? क्या तू मुझे दुखी देखना चाहती है और तिल तिल कर के मरते देखना चाहती है?

देख मैं तो तेरे प्यार में वैसे ही बरबाद हुआ जा रहा हूँ क्योंकि मैं निराश हो गया हूँ और मैं तेरी सुन्दरता से बहुत प्रभावित हूँ। तुझे इसका सबूत चाहिये तो देख मैं सिकुड़ कर केवल दो तिहाई हिस्सा ही रह गया हूँ। जैसे शराब उबल कर कम रह जाती है। मैं तो केवल खाल और हड्डियाँ ही रह गया हूँ क्योंकि बुखार तो मेरी हड्डियों से चिपक गया है।

इसलिये मेहरबानी कर के यह बालों वाली खाल हटा और मुझे अपनी सुन्दरता देखने दे। उठा उठा इस टोकरी की पत्तियों को उठा और मुझे इसके नीचे का मीठा फल देखने दे। यह परदा हटा दे और फिर मुझे अपनी शान का आश्चर्य देखने दे।

किसने एक चिकने चुपड़े प्राणी को बालों के खुरदरे जेल में बन्द कर रखा है। मुझे अपनी शान देखने दे और बदले में मेरा सारा प्यार ले ले क्योंकि इसके अलावा मुझे और कोई चीज़ आराम नहीं दे सकती।"

जब उसने यह सब बार बार कहा और और भी बहुत कुछ कहा और उसके बाद भी उसने देखा कि उसके शब्द उसके सिर के ऊपर से गुजरे जा रहे हैं तो वह अपने बिस्तर में जा कर लेट गया। उस पर इतने ज़ोर का दौरा पड़ गया कि डाक्टरों ने इसे एक बहुत बुरा बीमार बता दिया।

तब उसकी माँ जिसको किसी और चीज़ में कोई ख़ुशी नहीं थी उसके बिस्तर के पास ही बैठ गयी और बोली — "बेटा तुम इतने

दुखी कबसे हुए। तुम्हें कौन सी बीमारी ने घेर रखा है। तुम अभी नौजवान हो । सब तुमको प्यार करते हैं। तुम्हारे अन्दर बहुत गुण है तुम अमीर हो। तब तुम्हें और क्या चाहिये मेरे बेटे। कुछ तो बोलो एक शर्मीला भिखारी अपना खाली झोला फैलाये खड़ा है।

अगर तुम्हें एक पत्नी चाहिये तो तुम उसका नाम तो बताओ मैं खुद जा कर उससे तुम्हारे रिश्ते की बात करूँगी। तुम माँगो और मैं उसकी कीमत दूँगी। क्या तुम यह नहीं देख पा रहे हो कि तुम्हारी बीमारी मेरी बीमारी बनती चली जा रही है।

तुम्हारी नब्ज बुखार की वजह से तुम्हारी रगों में धड़कती है और मेरा दिल बीमारी से मेरे दिमाग में धड़कता है। क्योंकि मेरे बुढ़ापे का सहारा तो तुम्हारे बिना और कोई नहीं है। इसलिये बेटा तुम भी खुश रहो और मुझे भी खुश करो। पूरे राज्य को दुख के सागर में मत डुबोओ। अपनी माँ का दिल मत तोड़ो।"

जब राजकुमार ने अपनी माँ के ये शब्द सुने तब वह बोला — "माँ मुझे कोई और चीज़ सन्तुष्ट नहीं कर सकती सिवाय भालू के देखने के। इसलिये माँ अगर तुम चाहती हो कि मैं ठीक रहूँ तो उसको इस कमरे में बुलवा दो।

मुझे अपनी सेवा के लिये अपना बिस्तर बनाने के लिये और मेरा खाना बनाने के लिये कोई और नहीं चाहिये बस केवल वह भालू चाहिये। और फिर मेरा यकीन करो कि मैं एक पल में ही ठीक हो जाऊँगा।"

मॉ ने समझा कि उसका बेटा हॅसी कर रहा है एक भालू कैसे किसी का खाना बना सकती है और कमरे की नौकरानी बन सकती है। शायद उसका बेटा अपने आपे में नहीं है फिर भी उसको सन्तुष्ट करने के लिये भालू को बुलवाया गया।

और जब मादा भालू राजकुमार के बिस्तर के पास आयी तो उसने अपना पंजा उठाया और राजकुमार की नब्ज़ देखी। यह देख कर तो रानी तुरन्त ही ज़ोर से हॅस पड़ी। क्योंकि उसी समय उसको यह भी लगा कि वह भालू राजकुमार की नाक खरोंच देगी। पर यह क्या वह तो उसकी नब्ज़ देख रही थी।

राजकुमार ने भालू से कहा — "मेरी प्यारी भालू। क्या तुम मेरे लिये खाना नहीं बनाओगी। क्या तुम मुझे खाना नहीं खिलाओगी। क्या तुम मेरी सेवा नहीं करोगी।" भालू ने हॉ में सिर हिलाया। इससे पता चलता था कि वह अपना काम करने के लिये तैयार थी।

सो रानी कुछ मुर्गियॉ ले कर आयी। उसी कमरे में चूल्हे में आग जलायी गयी। एक बर्तन में पानी भर कर उबलने रखा गया।

फिर भालू ने एक मुर्गी पकड़ी उसको साफ किया और उसका एक हिस्सा गड्ढे पर भुनने के लिये रख दिया। और दूसरे हिस्से का बहुत ही स्वादिष्ट खाना तैयार किया। जब राजकुमार ने उसे खाया तो हालॉकि वह मीठे का बहुत शौकीन नहीं था पर भी वह उसे चाटता ही रह गया।

उसके खाना खाने के बाद भालू ने उसको पीने के लिये शराब दी। उसने वह उसको इतने सलीके से दी कि रानी का मन किया कि वह उसको उसके माथे पर चूम ले।

राजकुमार उठा तो भालू ने उसका बिस्तर बनाना शुरू किया। बिस्तर बनाने के बाद वह बागीचे में भागी गयी और कुछ गुलाब और सन्तरे के फूल चुन लायी और उन्हें उसके बिस्तर पर फैला दिया।

रानी ने भालू का यह बर्ताव देख कर कहा कि यह भालू तो अपने वजन के बराबर सोने की कीमत की है। और उसका बेटा उसको पसन्द करने के लिये ठीक ही है।

लेकिन जब राजकुमार ने उन सुन्दर फूलों को देखा तो वे तो उसकी आग में घी के बराबर हो गये। इससे पहले तो वह औंस ब औंस कमजोर हो रहा था पर अब तो पौंड ब पौंड पिघलने लगा।

उसने अपनी माँ कहा — "मेरी प्रिय माँ। अब अगर मैं इस भालू को नहीं चूमूँगा तो मेरी तो साँस ही निकल जायेगी।"

रानी ने उसको होश खोते हुए देखा तो बोली — "चूम ले चूम ले ओ मेरे बेटे। मै तुझे किसी बात की इच्छा में मरते देखना नहीं चाहती।"

यह सुन कर भालू राजकुमार के पास गयी उसके गालों को अपने हाथों में लिया और उन्हें कई बार चूम लिया।

इस बीच न जाने कैसे प्रैज़ियोसा के मुँह से जादुई लकड़ी का टुकड़ा निकल गया और वह राजकुमार की बाँहों में ही खड़ी रह गयी। दुनियाँ की सबसे सुन्दर प्राणी।

उसको अपने सीने लगाते हुए राजकुमार ने कहा — "आखिर मैंने तुम्हें पकड़ ही लिया ओ मेरे छोटे से रोग। अब तुम मुझे बिना किसी वजह के छोड़ कर नहीं जा सकतीं।"

यह सुन कर प्रैज़ोसिया शर्मा गयी और बोली — "मैं अब तुम्हारे हाथों में हूँ। बस मुझे सुरक्षित रूप से रखना और जब चाहे तब शादी कर लेना।"

रानी ने जानना चाहा कि वह कहाँ की राजकुमारी थी और उसके ऐसी हालत में आने की क्या वजह थी। तब प्रैज़ोसिया ने रानी को अपनी बदकिस्मती की पूरी कहानी बता दी। रानी ने उसके गुणों की प्रशंसा करते हुए अपने बेटे से कहा कि वह उसकी शादी उस राजकुमारी से करने के लिये तैयार है।

राजकुमार को तो ज़िन्दगी में और कुछ नहीं चाहिये था। उसने अपने भगवान की कसम खायी और माँ ने उन्हें अपना आशीर्वाद दिया और फिर यह शादी बड़ी धूमधाम से हो गयी।

प्रैज़ियोसा ने कहा कि यह सच ही है —

जो अपना काम ठीक से करता है उसको ठीक चीज़ें ही मिलती हैं

# 16 2–7 फाख्ता[114]

एक आदमी जो राजकुमार पैदा हुआ है उसको एक गरीब बच्चे की तरह बर्ताव नहीं करना चाहिये। एक आदमी जो बहुत ऊँचे पद पर है उसको भी अपने से नीचे काम करने वाले के लिये कोई बुरा उदाहरण नहीं रखना चाहिये। क्योंकि छोटे गधे बड़े गधों से ही घास खाना सीखते हैं। इसी लिये यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि भगवान उनके ऊपर बहुत मुश्किलें डालता है। जैसा कि एक राजकुमार के साथ इस कहानी में हुआ जो मैं आप सबको भी सुनाने जा रही हूँ। इसमें उसको एक गरीब स्त्री को परेशान करने के लिये कितनी परेशानी खुद भी उठानी पड़ी।

नैपिल्स[115] से करीब आठ मील दूर एक बहुत घना जंगल था जिसमें बहुत सारे अंजीर और पोपलर[116] के पेड़ लगे हुए थे। इस जंगल में एक टूटा फूटा मकान था जिसमें एक बुढ़िया रहा करती थी जो जितनी वह बुढ़िया थी इतनी ही वह हल्की भी थी।

उसके चेहरे पर सैंकड़ों झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं और उतनी ही उसकी जेब में रखी हुई थीं। उसके सिर के सारे बाल चाँदी की तरह सफेद थे। वह बेचारी एक मकान से दूसरे मकान में भीख माँगने जाया करती थी और इसी से अपनी ज़िन्दगी बसर करती थी।

---

[114] The Dove. (Tale No 16) Day 2, Tale No 7

[115] Naples is a port town of Italy situated on its Southern Western coast.

[116] Poplar trees are of many kinds. A picture of Its one kind is given here above.

पर आजकल लोग थैला भर के क्राउन चालाक लोगों को तो दे देते हैं पर बेचारे जरूरतमन्द आदमी को कुछ नहीं देते। उस बेचारी को एक कटोरा राजमा पाने के लिये सारा सारा दिन उधर उधर घूमना पड़ता था। पर कभी कभी उसको बहुत सारा राजमा भी मिल जाता था।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि उस बेचारी गरीब स्त्री ने राजमा धो कर पानी में रख कर एक खिड़की पर रख दिये और वह खुद आग जलाने के लिये लकड़ियाँ इकट्ठी करने के लिये जंगल चली गयी।

पर जब वह वहाँ नहीं थी तो राजा का बेटा नार्दो अनीलो[117] शिकार के लिये निकला हुआ था वह उस बुढ़िया के मकान के पास से हो कर गुजर रहा था तो उसकी निगाह खिड़की पर रखे बर्तन पर गयी। उसकी बड़ी इच्छा हुई कि वह उसमें झाँक कर देखे कि उसमें क्या है।

उसने अपने नौकरों से शर्त लगायी कि उस पर पत्थर से कौन बिल्कुल सीधा और उसके बीच में निशाना लगाता है। सबने उस पर पत्थर फेंकने शुरू कर दिये। तीन चार बार उस पर पत्थर मारने के बाद राजकुमार जीत गया। पत्थरों की मार से वह बर्तन टूट गया। बुढ़िया का राजमा बिखर गया। यह कर के वे सब वहाँ से चले गये।

---

[117] Nardo Aniello – name of the Prince

उनके जाने के कुछ देर बाद ही बुढ़िया जंगल से लौट कर आयी तो उसने वह दुखभरी घटना देखी तो वह एक तरफ बैठ कर फूट फूट कर रोने लगी।

"उसको अपने हाथ फैला फैला कर अपनी बड़ाई करने दो जिसने भी इस तरह मेरा बर्तन तोड़ा है। वह मेरा दुश्मन है जिसने बिना किसी बात के मेरी बीन्स जमीन पर बिखेर दी हैं। अगर उसको मेरे दुख में कोई दुख नहीं है तो कम से कम उसको अपना तो ख्याल रखना चाहिये था।

मैं अपने नंगे घुटनों पर बैठ कर अपने दिल से यह प्रार्थना करती हूँ कि वह किसी ओग्रेस[118] की बेटी के प्यार में पड़ जाये जो उसे हर तरह से तंग करे। यहाँ तक कि उसकी सास भी उसको ऐसा शाप दे जिससे वह अपने आपको ज़िन्दा तो पाये फिर भी अपने आपको मरा समझ कर रोये।

उसकी बेटी की सुन्दरता से प्रभावित हो कर और उसकी माँ की कला की होशियारी की वजह से वह वहाँ से निकल न पाये। भगवान करे कि वह अपना डंडा हाथ में ले कर हुक्म करे और उसे बहुत ही छोटे से काँटे से रोटी खिलाये ताकि वह मेरी जमीन पर बिखेरी हुई बीन्स पर रो सके।"

बुढ़िया के शाप के तो पंख लग गये और वह पल भर में ही स्वर्ग चले गये। सो जैसी कि कहावत कही जाती है "एक स्त्री के

---

[118] Ogre, or Ogress for its female, – a cruel and terrifying person who eats human beings

शाप से ज़्यादा बुरा और कुछ नहीं होता और घोड़े का कोट जिसको शाप दिया गया हो वह हमेशा चमकता है। उसने राजकुमार को यह सब कुछ ऐसे कहा कि वह तो कूद पड़ा।

इस शाप को दिये हुए मुश्किल से दो घंटे ही गुजरे होंगे कि राजकुमार जंगल में रास्ता भूल गया। वह अपने नौकरों से भी बिछड़ गया। रास्ते में उसको एक सुन्दर लड़की मिल गयी जो आनन्द से गाते हुए घोंघे बीनती जा रही थी। वह गा रही थी —

घोंघे घोंघे तू अपने सींग हटा तेरी माँ तुझ पर हँस रही है
क्योंकि उसके अभी अभी एक बेटा हुआ है

राजकुमार ने जब उस सुन्दर लड़की को देखा तो उसकी यही समझ में नहीं आया कि उसे क्या हो गया है। जैसे ही उस क्रिस्टल वाले चेहरे की आँखें उसके ऊपर पड़ीं उसको तो जैसे उसके तन मन में आग लग गयी। वह तो बिल्कुल जले हुए चूने की तरह हो गया जिस पर आशाओं के घरों के डिजाइन बन गये हों।

फ़िलाडोरो[119] दूसरे लोगों से कोई ज़्यादा अक्लमन्द नहीं थी और राजकुमार सुन्दर मूँछों वाला एक बहुत तेज़ तर्राट आदमी था सो उसको देख कर वह उस पर मोहित हो गयी। इस तरह दोनों ही

[119] Filadoro – name of the girl

एक दूसरे को खड़े देखते रह गये। वे इस हालत में काफी देर तक बिना कुछ बोले खड़े रहे।

उनकी ऑखें उनके मन के भेदों को कह रही थीं। आखिर चुप्पी राजकुमार ने तोड़ी। उसने फ़िलाडोरो से कहा — "यह इतना सुन्दर फूल किस मैदान से उगा है। ये सुन्दर चीज़ें किस खान से निकली हैं। ओ खुश जंगल ओ खुशकिस्मत कुंज। यह कुलीन कहॉ रहती है जहॉ से इसका प्यार इतना चमक रहा है।"

फ़िलाडोरो बोली — "इस हाथ को चूमें माई लौर्ड। आप इतने शालीन न बनें। जितनी भी आपने मेरी तारीफ की है वह सब तो आपकी अच्छाई है मेरी नहीं। मैं जैसी भी हूॅ – सुन्दर या बदसूरत पतली या मोटी परी या जादूगरनी अब तो मैं बस आपकी ही गुलाम हूॅ।

क्योंकि आपकी सूरत ने मेरा दिल ले लिया है। आपके राजकुमार जैसी शान ने मेरे शरीर को इधर से उधर तक चीर दिया है। मैं अभी से आपको खुद को हमेशा के जंजीर में बॅधे गुलाम की तरह से देती हूॅ।"

यह सुन कर राजकुमार ने तुरन्त ही उसका हाथी दॉत जैसा गोरा हाथ पकड़ कर चूम लिया। राजकुमार के ऐसा करने पर फ़िलाडोरो का चेहरा लाल पड़ गया।

पर जितना ज़्यादा नार्दो अनीलो ने उससे बातें करने की कोशिश की तो उसे लगा कि उसकी जबान और ज़्यादा बॅधती जा

रही है। क्योंकि इस दुखी ज़िन्दगी में चिन्ताओं के बिना खुशी की कोई शराब नहीं है।

उसी समय अचानक फ़िलाडोरो की माँ वहाँ आ गयी। वह इतनी बदसूरत ओग्रैस[120] थी कि ऐसा लगता था कि प्रकृति ने उसे फुरसत में बैठ कर सारे डरों को मिला कर बनाया था।

उसके बाल किसी झाड़ी की झाड़ू की तरह थे। उसका माथा एक बहुत ही खुरदरे पत्थर की तरह था। उसकी आँखें टूटे हुए सितारों की तरह थीं जिनसे हर तरह की बुराइयाँ निकल रही थीं। उसके मुँह पर सूअर के दाँतों जैसे दाँत थे।

थोड़े में कहो तो वह सिर से पैर तक इतनी बदसूरत थी कि तुम उसकी बदसूरती की कल्पना भी नहीं कर सकते।

उसने नार्दो अनीलो को गर्दन से पकड़ा और बोली — "ओ चोर ओ रोग अब बताओ तुम्हें क्या चाहिये।"

राजकुमार बोला — "तू खुद ओ रोग। ओ बुढ़िया पीछे हट।"

और वह अपनी तलवार निकालने ही वाला था कि वह तो उसे देख कर उस भेड़ की तरह मूर्ति बना खड़ा रह गया जैसे उसने कोई भेड़िया देख लिया हो और वह न हिल सकती हो और न उसकी बोली निकल सकती हो। सो औगरैस उसको गधे की तरह से पकड़ कर अपने घर के अन्दर ले गयी।

---

[120] A female giant or monster in legends and fairy tales that eats humans. Its male is called Ogre.

घर आ कर उसने राजकुमार से कहा — "अब सुनो। तुम यहाँ कुत्ते की तरह काम करो जब तक तुम कुत्ते की मौत न मरना चाहो। आज के दिन पहल काम तुम्हारा यह है कि यह एक एकड़ जमीन है जिसे तुम खोदो और उसमें इस कमरे के बराबर बीज बोओ। और जब मैं शाम को घर आऊँ तब तक अगर तुम्हारा यह काम पूरा नहीं होगा तो मैं तुम्हें खा जाऊँगी।"

फिर उसने अपनी बेटी से कहा कि वह घर का ख्याल रखे। इस तरह दोनों को उनका काम समझा कर वह दूसरी ओग्रेसों के साथ मीटिंग करने जंगल में चली गयी।

नार्दो अनीलो ने जब अपने आपको इस परेशानी में देखा तो वह तो बहुत ज़ोर ज़ोर से रो पड़ा कि उसकी तो छाती भीग गयी। वह अपनी इस बदकिस्मती के ऊपर अपने आपको कोसने लगा।

पर फ़िलाडोरो ने उसे तसल्ली दी कि वह शान्ति रखे उसका दिल बहुत अच्छा है। वह उसकी सहायता करने के लिये अपनी जान भी दे देगी।

उसने यह भी कहा कि उसे इस बात पर कोई अफसोस नहीं है कि वह फ़िलाडोरो के घर आ गया है क्योंकि वह उससे बहुत प्यार करती है। पर नार्दो अनीलो से उसके प्यार के बदले में उससे कुछ भी नहीं कहा गया क्योंकि जो कुछ उसके साथ हुआ था वह उसके लिये बहुत दुखी था।

राजकुमार ने कहा कि वह इस बात पर कतई दुखी नहीं है कि वह अपना राजमहल छोड़ कर यहाँ इस जंगल में रहने आ गया है। बढ़िया दावत छोड़ कर रोटी खाने आ गया है अपना राजदंड छोड़ कर फावड़ा उठाने आ गया है।

जिसके पास बहुत ही डरावनी सेना है वह अब बाजूके[121] से डरने आ गया हो क्योंकि "मैं तो अपनी इस बदकिस्मती में भी तुम्हारे साथ रहने पर अपने को खुशकिस्मत ही समझता हूँ।

मगर मुझे तो दुख इस बात का है कि मुझे तब तक खुदाई करनी पड़ेगी जब तक मेरे हाथों की खाल बहुत सख्त न हो जाये। मैं जिसकी उँगलियाँ इतनी कोमल हैं जितनी कि सेमल की रुई होती है। और इससे भी बुरी बात यह है कि मुझे एक दिन में उतना काम करना पड़ेगा जो दो बैलों के काम से भी ज़्यादा काम होगा।

अगर मैं यह काम शाम तक खत्म नहीं करता हूँ तो तुम्हारी माँ मुझे खा जायेगी। फिर भी मुझे मरने में भी इतना दुख नहीं होगा जितना कि तुम जैसे सुन्दर जीव से बिछड़ने पर होता।"

ऐसा कह कर वह लम्बी लम्बी साँसें भर कर फिर से रोने लगा। पर फ़िलाडोरो ने उसके आँसू पोंछे और बोली — "तुम डरो नहीं मेरी माँ तुम्हारा एक बाल भी बाँका नहीं कर पायेगी। तुम मेरे ऊपर भरोसा रखो और बिल्कुल भी नहीं डरो। क्योंकि तुम यह जान लो

[121] Translated for the word "Scarecrow". See its picture above.

कि मेरे पास भी जादुई ताकतें हैं। मैं पानी पर मक्खन फैला सकती हूँ और सूरज को काला कर सकती हूँ।

अपना दिल सँभाल कर रखो क्योंकि शाम तक यह जमीन का टुकड़ा बिना किसी के हाथ हिलाये खुद भी जायेगा और इसमें बीज भी बो दिये जायेंगे।"

जब नार्दो अनीलो ने यह सुना तो उसने फ़िलाडोरो से कहा — "जैसा कि तुम कहती हो कि तुम्हारे पास जादुई ताकतें हैं तो ओ दुनियाँ की सुन्दरी। हम यहाँ इस देश से उड़ क्यों नहीं चलते क्योंकि तुम मेरे पिता के घर में रानी की तरह रहोगी।"

फ़िलाडोरो बोली — "यह काम अभी नहीं हो सकता। कुछ सितारे जब एक खास स्थिति में आ जायेंगे तभी यह मुमकिन हो पायेगा। पर तुम चिन्ता न करो ये मुश्किलें भी बहुत जल्दी चली जायेंगी और हम लोग खुश रहेंगे।"

इसी तरह के आनन्द की बातें करते उन दोनों का दिन गुजर गया। जब ओग्रैस घर वापस आयी तब उसने सड़क पर से ही बेटी से चिल्ला कर कहा — "फ़िलाडोरो ज़रा अपने बाल तो नीचे लटका।"

क्योंकि घर में कोई सीढ़ी नहीं थी इसलिये ओगरैस हमेशा ही अपनी बेटी के बाल पकड़ कर ऊपर जाया करती थी। जैसे ही फ़िलाडोरो ने अपनी माँ की आवाज सुनी तो उसने अपने बाल खोल

दिये और उन्हें नीचे लटका दिया। इससे एक लोहे के दिल के लिये एक सोने की सीढ़ी बन गयी।

बुढ़िया उस सीढ़ी से तुरन्त ही ऊपर पहुँच गयी। ऊपर पहुँचते ही वह अपने बागीचे की तरफ भागी गयी। वह तो देख कर आश्चर्यचकित रह गयी जब उसने देखा कि उस इतने कोमल हाथों वाले राजकुमार ने वह सारी जमीन खोद दी थी और उनमें बीज भी बो दिये थे।

पर अगली सुबह जैसे ही सूरज अपने को गर्मी देने के लिये बाहर आया क्योंकि रात में उसने भारत की नदी से ठंड पकड़ ली थी ओग्रैस नीचे गयी और नार्दो अनीलो से बोली कि शाम होने तक वह नीचे वाले कमरे में लकड़ी पड़ी हुई थी उस हर लट्ठे को चार हिस्सों में काट कर रखे। नहीं तो वह उसको शाम को सूअर की तरह काट कर अपने खाने में खा लेगी।

यह सुन कर तो बेचारा राजकुमार डर के मारे फिर से रोने लगा। फ़िलोडोरो ने जब उसे राख की तरह पीला और अधमरा सा देखा तो वह उससे फिर बोली — "क्यों तुम इतने छोटे छोटे से काम के लिये कायरों की तरह से रोने बैठ जाते हो।"

नार्दो अनीलो बोला — "तुम इसे छोटा काम समझती हो? लकड़ी के छह ढेरों के हर लट्ठे को चार चार टुकड़ों में काटना और वह भी शाम तक। मुझे तो लगता है कि मैं खुद ही इस स्त्री के मुँह को लिये दो हिस्सों में बॅट जाऊँगा।"

फ़िलाडोरो बोली — "तुम परेशान न हो क्योंकि वे लकड़ियॉ तुम्हें बिना कोई तकलीफ दिये हुए अपने आप ही शाम तक कट जायेंगी। पर अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो इस बीच तुम खुश तो हो जाओ। अपने दिल को दुखी कर के मेरे दिल के टुकड़े तो मत करो।"

जब सूरज ने अपनी किरनों की दूकान बन्द कर ली ताकि वह अपनी किरनों को सायों को न बेच सके तब बुढ़िया घर लौटी फ़िलाडोरो से फिर से अपने बालों की सीढ़ी लटकाने के लिये कहा। वह उससे चढ़ कर घर में आयी और कमरे की तरफ यह देखने के लिये भागी गयी कि राजकुमार ने इस कमरे की सारी लकड़ी काट कर रख दी है या नहीं।

वह फिर से एक बड़े आश्चर्य में पड़ गयी। उसने देखा कि कि उसकी सारी लकड़ी तो कटी पड़ी है। एक बार तो उसको लगा कि उसकी बेटी ने उसकी सहायता की है पर फिर कुछ सोच कर वह चुप रह गयी।

अगले दिन उसने उसका तीसरी बार इम्तिहान लेने का सोचा। उस दिन उसने राजकुमार को एक बहुत बड़ा तालाब साफ करने के लिये कहा जिसमें हजार डिब्बे पानी आता था। उसने कहा कि अगर उसने वह शाम तक उसके आने तक साफ नहीं किया तो वह उसकी चटनी बना कर खा जायेगी।

जब वह बुढ़िया चली गयी तो नार्दो अलीनो ने फिर से रोना शुरू कर दिया। फ़िलाडोरो ने देखा कि उसकी माँ ने उस बेचारे के लिये मुसीबतें और बढ़ा दी हैं।

उसका दिल तो बेरहम है यह सोच कर उसने राजकुमार से कहा — "चुप हो जाओ। जैसे ही वह पल गुजर जायेगा जो मेरी जादू की ताकतों में बाधा डाल रहा है, सूरज के जाने से पहले ही हम यहाँ से यह घर छोड़ कर चल देंगे। शाम को मेरी माँ को उसकी जमीन साफ मिलेगी और मैं, ज़िन्दा या मुर्दा, तुम्हारे साथ ही चलूँगी।"

राजकुमार ने यह सुन कर फ़िलाडोरो को गले से लगा लिया — "तुम तो इस तूफान में मेरे ध्रुव तारे की तरह हो। तुम ही तो मेरी आशाओं की किरन हो।"

जब शाम पास आने लगी फ़िलाडोरो ने बागीचे में एक गड्ढा खोदा जिससे उसने जमीन के नीचे एक लम्बा सा रास्ता बना लिया। वहाँ से वे फिर नैपिल्स[122] की तरफ चले गये।

पर जब वे पोजुओलो के ग्रोटो[123] पहुँचे तो नार्दो अनीलो ने फ़िलाडोरो से कहा — "मैं तुम्हें इन कपड़ों में महल पैदल नहीं ले जा

[122] Naples is port city in Italy on its south-West cost.

[123] Pozuolo Grotto. See the picture of a Grotto above. A grotto, Italian or French, is a natural or artificial cave used by humans in both modern times and antiquity, and historically or prehistorically. Naturally occurring grottoes are often small caves near water that are usually flooded or liable to flood at high tide.

सकता। इसलिये तुम यहाँ इस सराय में रुको मैं अभी नौकर गाड़ियाँ घोड़े कपड़े आदि ले कर आता हूँ।”

सो फ़िलाडोरो तो वहाँ सराय में रुक गयी और राजकुमार शहर चला गया।

इस बीच ओग्रैस घर वापस लौटी और रोज की तरह उसने अपनी बेटी को आवाज लगायी पर कोई जवाब न पा कर उसे कुछ शक हुआ सो वह जंगल की तरफ दौड़ गयी।

वहाँ पहुँच कर उसने एक बड़ा लट्ठा तोड़ा उसको अपने मकान के सहारे रख कर वह बिल्ली की तरह ऊपर चढ़ गयी। वह घर के अन्दर गयी और उन दोनों को चारों तरफ ढूँढा, ऊपर नीचे अन्दर बाहर पर उसे उन दोनों में से कोई दिखायी नहीं दिया।

आखिर उसे वह गड्ढा दिखायी दे गया जो एक खुली जगह की तरफ खुलता था। उसे देख कर तो उसे इतना गुस्सा आया कि अपनी बेटी और राजकुमार दोनों को कोसते हुए और यह प्रार्थना करते हुए कि जैसे ही वे पहली बार एक दूसरे को चूमें तो राजकुमार उसे भूल जाये उसने अपने सिर के सारे बाले नोच डाले। उसने अपने सिर पर एक बाल भी नहीं छोड़ा।

पर अभी हम इस स्त्री को यहाँ उनको कोसते छोड़ते हैं और राजकुमार के पास चलते हैं। महल में तो सब यही सोचे बैठे थे कि राजकुमार तो मर गया। पर राजकुमार को देखते ही सारे महल में आनन्द की लहर दौड़ गयी।

हर आदमी "आओ आओ" कह कर उससे मिलने के लिये आ गया। "तुम तो बिल्कुल ठीक और तन्दुरुस्त हो। हम लोग तुमको देश में वापस आया देख कर बहुत खुश हैं।" और भी बहुत सारे प्यार के शब्द कहे।

पर वह अपनी मॉ से मिलने के लिये ऊपर जा रहा था कि उसकी मॉ उसको रास्ते में ही मिल गयी। उसने उसे गले लगाया और चूमा — "मेरे बेटे मेरे लाल मेरी ऑख के तारे। तुम इतने दिनों से कहॉ थे और तुम इतने दिन दूर रहे ही क्यों जिससे हम तो तुम्हारे लिये बिल्कुल मरे जैसे हो गये।"

राजकुमार से कोई जवाब देते नहीं बना क्योंकि वह अपनी बदकिस्मती का हाल उसे सुनाना नहीं चाहता था पर जैसे ही उसकी मॉ ने उसे चूमा तो ओग्रैस के शाप की वजह से जो कुछ भी उसके साथ हुआ था वह वह सब भूल गया।

तब रानी ने कहा कि वह अपनी पुरानी बात भूल जाये और अब शादी कर ले। राजकुमार बोला — "ठीक है। मैं आपकी इच्छा पूरी करने के लिये तैयार हूॅ।"

सो यह निश्चय किया गया कि चार दिन के अन्दर अन्दर लड़की के घर चला जाये जहॉ वह फ़्लैन्डर्स[124] से आयी है वहॉ अब खूब दावतें और आनन्द होगा।

---

[124] Country of Flanders – Flanders (noun) a medieval country in northern Europe that included regions now parts of northern France and Belgium and Southwestern Netherlands.

पर इस बीच फ़िलाडोरो ने देखा कि उसके पति को तो आने में बहुत देर हो गयी। उसको उसकी शादी की दावत के बारे में भी पता चला तो उसने शाम तक इन्तजार किया और जब सराय का लड़का सोने चला गया तो उसने लड़के के कपड़े तो खुद ले लिये और अपने कपड़े वहीं छोड़ दिये और एक आदमी का रूप रख कर राजकुमार के पिता राजा के दरबार में जा पहुँची।

राजमहल में रसोइये लोग लड़कों को रसोईघर में सहायता के लिये ढूँढ रहे थे सो उन्होंने उसको भी अपने रसोईघर की सहायता के लिये ले लिया।

जब खाने की मेजें लग गयीं मेहमान लोग अपनी अपनी सीटों पर बैठ गये खाने की प्लेटें लगा दी गयीं तो एक आदमी बड़ी सी पाई काट रहा था जिसे फ़िलाडोरो ने अपने हाथ से बनायी थी।

जैसे ही उसने पाई को काटा तो एक बहुत सुन्दर फाख्ता उसमें से निकल कर उड़ गयी। सारे मेहमान तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गये। वे अपना खाना तो भूल गये और बस उसी सुन्दर चिड़िया को देखते रह गये।

चिड़िया ने राजकुमार से बड़ी दया भरी आवाज में कहा — "क्या तुम फ़िलाडोरो का प्यार बिल्कुल ही भूल गये। क्या तुम उन सब सेवाओं को भी भूल गये जो उसने तुम्हारे लिये कीं। तुमने उससे जो भी कुछ मिला है क्या उसको वापस करने का यही तरीका

है। वह जिसने तुम्हें ओग्रैस के चंगुल से निकाला अपनी और तुम्हारी दोनों की ज़िन्दगी दी।

उस स्त्री को धिक्कार है जो किसी आदमी के कहे पर भरोसा करती है। जिसको अपनी मेहरबानियों के बदले में यह कृतघ्नता मिलती है और भूल जाने का कर्जा चुकाना पड़ता है।

पर जाओ ओ भूलने वाले आदमी तुम अपना वायदा भूल जाओ। भगवान करे यह शाप तुम्हारा तब तक पीछा करता रहे जो यह दुखी लड़की तुमको अपने दिल से भेजती है। पर अगर भगवान ने अपने कान बन्द नहीं कर रखे हैं तो वह मेरा गवाह है कि तुमने मेरे साथ क्या गलत किया है।

और जिस समय तुम्हें कल्पना भी नहीं होगी उस समय बिजली और गरज और बुखार और बीमारियाँ तुम्हारे पास आयेंगे। आराम से खाओ पियो हँसी खुशी मनाओ क्योंकि वह दुखी फ़िलाडोरो जिसको धोखा दिया गया है जिसको छोड़ दिया गया है अब तुम्हें अपनी नयी पत्नी के साथ आनन्द मनाने के लिये छोड़ती है।”

ऐसा कह कर फाख्ता जल्दी से वहाँ से उड़ गयी और हवा की तरह से गायब हो गयी। फाख्ता की फुसफुसाहट सुन कर राजकुमार मूर्ति की तरह से खड़ा रह गया।

बाद में जब पाई उसको दी गयी तो उसने पूछा कि यह पाई कहाँ से आयी। पाई काटने वाले ने उसे बताया कि एक लड़के को जिसको अभी ही रसोईघर में सहायता के लिये रख गया था उसने

बनायी थी। उसने तुरन्त ही पाई काटने वाले को हुक्म दिया कि वह तुरन्त ही उसको ढूँढ कर उसके कमरे में ले कर आये।

फ़िलाडोरो आ कर नार्दो अनीलो के पैरों पर गिर पड़ी और रोते हुए बोली — "मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है।" यह सुन कर राजकुमार को सब याद आ गया।

उसको याद आ गया कि किस तरह से उसने उससे वायदा किया था। उसने उसको तुरन्त ही उठा लिया और अपने पास बिठा लिया। जब उसने अपनी माँ को अपनी सारी घटनाऐं बतायीं और इस लड़की के ऐहसान बताये और विनती की कि उसको उससे किये गये वायदे उसे पूरे करने ही चाहिये।

माँ के लिये बेटे की खुशी से बढ़ कर तो और कोई खुशी थी नहीं सो माँ ने बहुत खुश होते हुए कहा — "जैसा तुम चाहो वैसा करो बेटा ताकि यह लड़की जिसे मैंने बहू के रूप में तुम्हें देने के लिये चुना था वह भी नाराज न हो।"

लड़की बोली — "मेहरबानी कर के आप चिन्ता न करें। सच कहूँ तो मैं अब इस देश में अकेली रहती रहती बहुत थक गयी हूँ। मैं अब अपने देश फ़्लैन्डर्स जाना चाहती हूँ।"

इस पर राजकुमार ने खुश हो कर उसको एक जहाज़ और बहुत सारे नौकर दिये। फ़िलाडोरो को उसने एक राजकुमारी की तरह सजाये जाने का हुक्म दिया। संगीत बजाने वाले आये और सब शाम तक नाचते रहे।

जब दावत खत्म हो गयी तो सब लोग आराम करने चले गये और फ़िलाडोरो और राजकुमार बहुत समय तक खुशी खुशी रहे।

जो ठोकर खाता है और गिरता नहीं
उसको लुढ़कती गेंद की तरह से रास्ते में सहायता मिलती जाती है

## Translations of Il Pentamerone

This Italian collection of folk-tales, now known as Il Pentamerone was first published at Naples, and in a Neapolitan dialect that kept it out of northern European tradition for two centuries, by Giambattista Basile, Conte di Torrone, who is believed to have collected them chiefly in Crete and Venice, and to have died in the 1630s.

Originally it was called Lo Cunti de li Cunto (The Story of Stories, 1634). Published posthumously, it became known as the Pentamerone by 1674 and eventually influenced the form of fairytales in Europe. The frame-story is of a group of people passing time by sharing stories, as in the Decameron and other European collections of tales. The Pentamerone tells 50 tales over five nights.

The following illustrated version only contains 32 of the tales, follows the translation by John Edward Taylor published in 1847, and was published by Macmillan and Co, London 1911. The Pentamerone, despite being an influential classic, seems to have been largely ignored by translators and publishers. Full text was translated by Sir Richard Burton in 1893 and is available online in public domain

First Published in Neapolitan language in 1634 and 1636 by Giambattista
First translation in German language, in 1846, by Felix Liebrecht
Second translation in English language, in 1847, by John Edward Taylor – 32 tales
Third translation in English language, in 1893, by Sir Richard Burton – 50 tales
Fourth translation in Italian language in 1925, by Benedetto Croce
Fifth translation in English language in 1934, by Norman Penzer (from Croce's version)
Sixth translation in modern English in 2007, by Nancy L Canepa
later released as Penguin Classics in 2016
Seventh translation in Hindi language in 2022, by Sushma Gupta

Thus its four English translations are available now. These Italian tales predate Charles Perrault by at least 50 years and the Grimm Brothers tales by 200 years. The original book is not as well known today since it was originally written in the difficult Neapolitan dialect and was not translated into English until 1847 and that was by John Edward Taylor. At that time he translated its selective 32 tales only.

## Full List of Stories of Il Pentamerone[125]

**The First Day**

1. "The Tale of the Ogre"
2. "The Myrtle"
3. "Peruonto"
4. "Vardiello"
5. "The Flea"
6. "Cenerentola" – translated into English as Cinderella
7. "The Merchant"
8. "Goat-Face"
9. "The Enchanted Doe"
10. "The Flayed Old Lady"

**The Second Day**

1. "Parsley" – a variant of Rapunzel
2. "Green Meadow" – author says that this title was changed to "Three Sisters"
3. "Violet"
4. "Pippo" – a variant of Puss In Boots
5. "The Snake"
6. "The She-Bear" – a variant of Allerleirauh
7. "The Dove" – a variant of The Master Maid
8. "The Young Slave" – a variant of Snow White
9. "The Padlock"
10. "The Buddy"

**The Third Day**

1. "Cannetella"
2. "Penta of the Chopped-off Hands" – a variant of The Girl Without Hands
3. "Face"
4. "Sapia Liccarda"
5. "The Cockroach, the Mouse, and the Cricket"
6. "The Garlic Patch"
7. "Corvetto"
8. "The Booby"
9. "Rosella"
10. "The Three Fairies" – a variant of Frau Holle

---

[125] Taken from Wikipedia.

**The Fourth Day**

1. "The Stone in the Cock's Head"
2. "The Two Brothers"
3. "The Three Enchanted Princes"
4. "The Seven Little Pork Rinds" – a variant of The Three Spinners
5. "The Dragon"
6. "The Three Crowns"
7. "The Two Cakes" – a variant of Diamonds and Toads
8. "The Seven Doves" – a variant of The Seven Ravens
9. "The Raven" – a variant of Trusty John
10. "Pride Punished" – a variant of King Thrushbeard

**The Fifth Day**

1. "The Goose"
2. "The Months"
3. "Pintosmalto" – a variant of Mr Simigdáli
4. "The Golden Root" – a variant of Cupid and Psyche
5. "Sun, Moon, and Talia" – a variant of Sleeping Beauty
6. "Sapia"
7. "The Five Sons"
8. "Nennillo and Nennella" – a variant of Brother and Sister
9. "The Three Citrons" – a variant of The Love for Three Oranges

# Classic Books of European Folktales in Hindi

Translated by Sushma Gupta

**1550** **Nights of Straparola**
No 21 By Giovanni Francesco Straparola. 1550, 1553. 2 vols.
Translated in English by HG Waters.
London : Lawrence and Bullen. **1894**.

**1634** **Il Pentamerone**
No 9 By Giambattista Basile. **1634.** 50 tales. 2 parts

**1874** **Serbian Folklore.**
No 2 Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London : W Isbister.
**1874.** 26 tales.

**1885** **Italian Popular Tales**
No 27 By Thomas Frederick Crane. **1885**. 109 tales

**1894** **Georgian Folk Tales**.
No 18 Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**.
35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and
Part III was published in 1884.

# देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तकों की पूरी सूची के लिये इस पते पर लिखें ः :
hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

**Facebook Group**
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Jun, 2022

# लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
# हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

**1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.**
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। 1901। जनवरी 2019

**2. Serbian Folklore.**
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंग्रेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। जनवरी 2019
---------------------
**"Hero Tales and Legends of the Serbians"**. By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

**3. The King Solomon: Solomon and Saturn**
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न्। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी 2019

**4. Folktales of Bengal.**
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारि डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। 2020

**5. Russian Folk-Tales.**
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। जनवरी 2019। तीन भाग

**6. Folk Tales from the Russian.**
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। जनवरी 2019

**7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.**
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। जनवरी 2019

**8. Fourteen Hundred Cowries.**
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। जनवरी 2019

**9. Il Pentamerone.**
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। जनवरी 2019। दो भाग

**10. Tales of the Punjab.**
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। जनवरी 2019। दो भाग

**11. Folk-tales of Kashmir.**
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। जून 2019। चार भाग

**12. African Folktales.**
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। 1998। जून 2019

**13. Orphan Girl and Other Stories.**
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। जून 2019

**14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.**
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। जून 2019

**15. Folktales of Southern Nigeria.**
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। जून 2019

**16. Folk-lore and Legends : Oriental**.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। जून 2019

**17. The Oriental Story Book**.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। जून 2019

**18. Georgian Folk Tales**.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। जून 2019। दो भाग

**19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.**
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। दिसम्बर **2020**।

**20. West African Tales.**
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। जून **2019**

**21. Nights of Straparola**.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। अक्टूबर **2019**

**22. Deccan Nursery Tales.**
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। दिसम्बर **2019**

**23. Old Deccan Days.**
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। दिसम्बर **2019**

**24. Tales of Four Dervesh.**
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2019**

**25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).**
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2020**।

**26. Russian Garland : being Russian folktales.**
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2020**

**27. Italian Popular Tales.**
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फैडैरिक केन। **2020**

**28. Indian Fairy Tales**
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — जोसेफ जेकव्स। **2021**

**29. Shuk Saptati.**
By Unknown. Translated in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911.
Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2020**

**30. Indian Fairy Tales**
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2020**

**31. Romantic Tales of the Panjab**
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2021**

**32. Indian Nights' Entertainment**
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

**36. Cossack Fairy Tales and Folk Tales.**
Translated in English By R Nisbet Bain. George G Harrp & Co. **c 1894**. 27 Tales.
कोज़ैक की परियों की कहानियॉ — अनुवादक आर निस्बत बैन। **2022**

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on June, 2022

# लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

**1998** में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
जून **2022**